यौद्धाओं को उचित सम्मान न देने वाला समाज नष्ट हो जाता है

वर्ष 9, अंक: 2 अगस्त-2018

सूर्या बुलेटिन

UPHIN40005 मूल्य: 10 रुपये

महाविनाश की आहट से दहल गया सन्यासी

देवबन्द:जमीयते उलमा-ए-हिन्द की भारत में आई:एस. की आधिकारिक घोषणा

सनातन धर्म रक्षा हेतु हिन्दू स्वाभिमान से जुड़े

जगदम्बा माह काली डासना वाली का परिवार

आपका हार्दिक स्वागत करता है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष यति मां चेतनानंद सरस्वती

मो. 9359931727, 93111 39274

www.hinduswabhiman.com

सूर्या बुलेटिन

वर्ष: 9, अंक: 2 अगस्त 2018

मुख्य मार्गदर्शक

यति मां चेतनानन्द सरस्वती जी

मुख्य संरक्षक मंडल

डॉ. आर.के. तोमर

श्री विनोद सर्वोदय

श्री हरिनारायण सारस्वत

श्री राजेश यादव

श्री नीरज त्यागी

सम्पादक

अनिल यादव

प्रबन्ध सम्पादक

शुभम मंगला

सम्पादकीय मंडल

श्री संदीप वशिष्ठ

श्री प्रमोद शर्मा

श्री अक्षय त्यागी

श्री मुकेश त्यागी

श्री दिव्य अग्रवाल

श्री जतिन गोयल

कानूनी सलाहकार

श्री आरपी सिसौदिया (एडवोकेट)

श्री राजकुमार शर्मा (एडवोकेट)

ग्राफिक डिजाइनर

सीमा कौशिक

`स्वत्वाधिकारी, स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक सीमा यादव द्वारा मै0 सुभाषिनी ऑफसैट प्रिन्टर्स एप-10 पटेल नगर तृतीय, गाजियाबाद से मुद्रित करवाकर प्राचीन देवी मंदिर डासना, गाजियाबाद उ.प्र. से प्रकाशित किया।

टाइटल कोड: UPHIN40005

सम्पादक: अनिल यादव

मो. 9311139274

suryabulletin@gmail.com

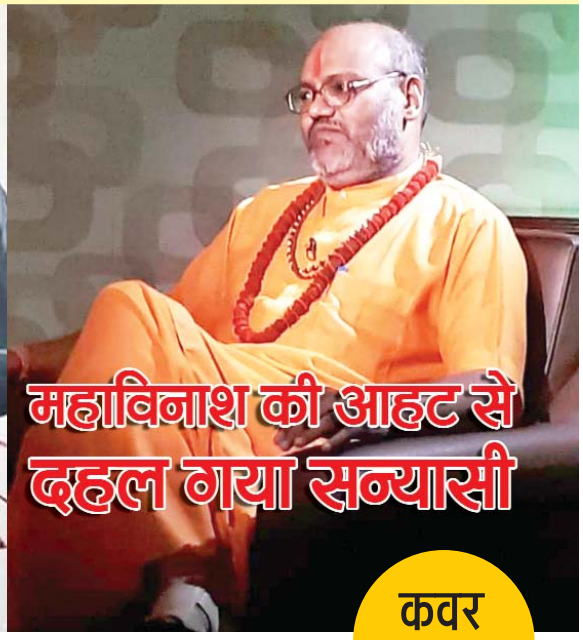

कवर स्टोरी

महाविनाश की आहट...

पेज-24

यौद्धाओं को उचित सम्मान न देने वाला समाज नष्ट हो जाता है

पेज-04

कारगिल युद्ध भारतीय सेना के सैनिकों ने अपने पराक्रम से जीता

पेज-06

इतिहास के पन्नों से...

:-अनिल यादव

पेज-12

इंसानियत का पुरोधा या इस्लामिक जिहाद का रहनुमा

:- राजेश यादव

पेज-28

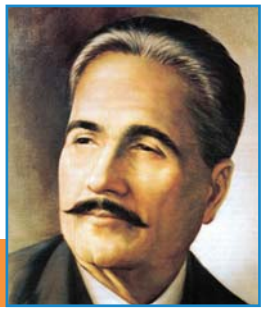

सम्पादकीय

हर मानव के सर गोवर्धन, हाथों में अर्जुन के रथ है

हर मानव के सर गोवर्धन, हाथों में अर्जुन के रथ है।
आँखों में खारे सागर हैं, मन में कई महाभारत हैं।
संघर्षों की समरभूमि में,हमसे पूछो हम कैसे हैं?
कालचक्र के चक्रव्यूह में हम भी अभिमन्यु जैसे हैं।
ये वक़्त करेगा निर्णय,कौन सही है,कौन गलत है?
आँखों में खारे सागर हैं, मन में कई महाभारत हैं।'

किसी कवि की लिखी हुई ये पंक्तिया आज हर उस व्यक्ति की मनोदशा को उजागर करती हैं जो व्यक्ति अपने आपको सनातन धर्म और वैदिक संस्कृति से जोड़कर देखता है ।हम कहाँ से चले थे और हम आज कहाँ आ गए हैं?

इस देश में वीरो की भूमि है राजस्थान ।राजस्थान में एक दिन में दो हत्याएं हुई। एक गौतस्कर की जिसका नाम रहबर खान था और एक मुस्लिम लड़की से प्रेम करने वाले हिन्दू की खेताराम भील की ।गौतस्कर ने खुलेआम हिन्दुओं की सर्वोच्च धार्मिक आस्था गौमाता पर आघात किया और संदिग्ध परिस्थितियों में मारा गया ।दूसरी ओर जिस युवक ने निश्छल मन से प्रेम किया,उसे सरेआम कत्ल किया गया। दोनों घटनाओं में अंतर सिर्फ इतना रहा की रहबर खान को अपराधी होने के बावजूद सारी दुनिया विशेष राजनेताओं और बुद्धिजीवियो की सहानुभूति मिली और उसके परिवार को मुआवजा मिला जबकि खेताराम भील के परिवार को केवल प्रताड़ना और पश्चाताप मिला। आज दुर्भाग्य है इस देश का की यहाँ मुआवजा,सहानुभूति,यहॉ तक की न्याय भी अब धर्म देखकर मिल रहा है।

ये प्रश्न आज जिस सनातन धर्म के मानने वाले के मन में पीड़ा नहीं दे रहा है,उस व्यक्ति को हमे केवल जानवर मात्र मानकर त्याग देना चाहिये ।आज हर तरह से सनातन धर्म और वैदिक संस्कृति को मिटाने के प्रयास हो रहे हैं और हम मौन रहकर सहन करने के अलावा कुछ भी नही कर सकते क्योंकि हम इतने कमजोर, असंगठित, दिशाविहीन और किंकर्तव्यविमूढ़ हैं की हमे कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है। पूरी दुनिया में मजहब के नाम पर करोड़ो लोगो का कत्लेआम करने वाले जिहादियों की सर्वोच्च मार्गदर्शक संस्था ने भारत में अपनी फौज तैयार कर ली है परंतु पूरा देश आंख बंद करके सो रहा है ।किसी नेता,किसी सनातन के धर्मगुरु,किसी बुद्धिजीवी यहाँ तक की किसी पत्रकार ने भी कोई कलम इस पर नहीं चलाई है। एक तरफ तो सनातन धर्म की हर मान्यता और आस्था पर सनातन के शत्रुओं द्वारा जानबूझ कर प्रहार किया जा रहा है दूसरी तरफ सारी व्यवस्था एकदम पंगु होकर बैठ गयी है। आज समझ नही आ रहा है की हिन्दू अपनी धार्मिक आस्थाओं और सामाजिक मान्यताओं के साथ कहाँ जाये? हर हिन्दू के मन में हिन्दू होने का अपराध बोध हर जगह से और हर तरह से भरा जा रहा है। आज सारी राजनीति को मुस्लिम बहन बेटियो की इतनी चिंता है की पूछो मत। पर हिन्दू की बेटी जो कभी लव जिहाद और कभी रेप जिहाद में बहुत संगठित तरीके स बर्बाद की जा रही हैं, उनके लिये कहीं कोई आवाज नहीं है। क्या हिन्दू की बेटी होना गुनाह है? हिन्दू गौमाता की पूजा करता है,क्या ये गुनाह है? क्या धर्मनिरपेक्षता का अर्थ केवल हिन्दू मान्यताओं को समाप्त करके विश्व की सर्वाधिक प्राचीन संस्कृति को विनष्ट कर देना ही है? क्या पाखण्डी बाबा केवल हिन्दुओं में ही हैं जो हिन्दुओं के हर बाबा को पाखण्डी और बलात्कारी सिद्ध किया जा रहा है?श्रीराम जन्मभूमि हिन्दू के पास नहीं, श्रीकृष्ण जन्मभूमि हिन्दू के पास नहीं, काशीविश्वनाथ हिन्दुओं के पास नहीं,फिर भी हम असहिष्णु,कट्टरपंथी और विकास विरोधी हैं। आज ये प्रश्न हैं जो हर हिन्दू के मन में हैं। लाखों पीड़ाएँ हैं पर दवा कोई नही है। लाखों सवाल हैं पर जबाव कोई नही है। बस कवि दुष्यंत कुमार की दो पंक्तियों के साथ अपनी बात पूर्ण करता हूं।

अनिल यादव

पीर पर्वत हो चुकी है,अब पिघलनी चाहिये।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिये।
मेरे सीने में न सही,तेरे सीने में ही सही।
पर है कहीं आग तो वो आग जलनी चाहिये।

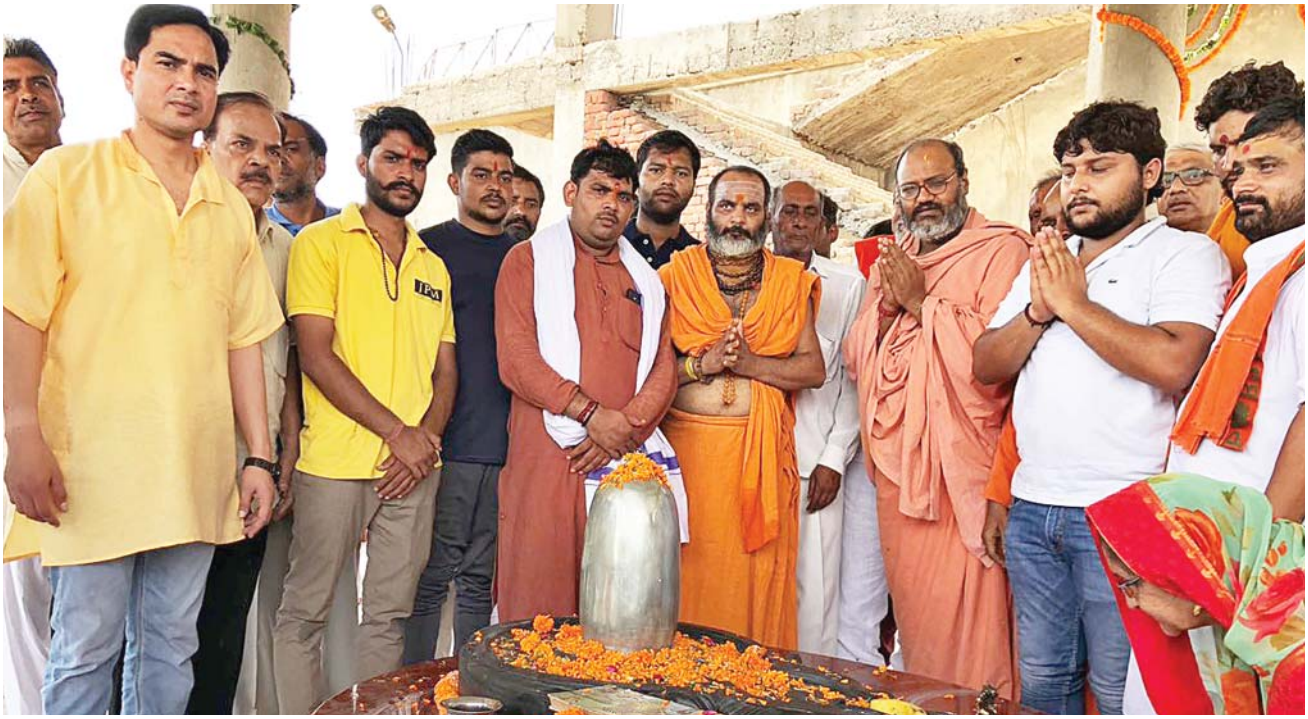

डासना का देवी मंदिर बना शिव शक्ति धाम

डासना के प्राचीन देवी मंदिर में शिवरात्रि के शुभ अवसर पर धूमधाम से 108 किलो पारे से बने पारदेश्वर महादेव की स्थापना की गयी। पारदेश्वर महादेव की स्थापना इस प्राचीन पीठ में सनातन धर्म की रक्षा और भक्तों के कल्याण के लिये की गयी है।

अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज ने बताया की वाराणसी से आये विद्वानों ने आचार्य रामभुवन शास्त्री जी के मार्गदर्शन में विधि विधान से सनातन धर्म की रक्षा की कामना से पारदेश्वर महादेव की स्थापना और प्राण प्रतिष्ठा की।इस अवसर पर हजारो की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

इस अवसर पर आचार्य दीपक तेजस्वी जी ने बताया की पारदेश्वर महादेव की स्थापना के साथ ही अब यह पीठ पूर्ण रूप से शिवशक्ति धाम में परिवर्तित हो चूका है इसीलिये अब इसे मंदिर नहीं बल्कि शिवशक्ति धाम के नाम से जाना जायेगा।जगदम्बा महाकाली डासना वाली और देवाधिदेव भगवान महादेव शिव की कृपा से अब यह धर्म की रक्षा का सबसे बड़ा पीठ बनेगा और यहाँ आने वाले हर व्यक्ति की सात्विक मनोकामना अवश्य ही पूर्ण होगी। इस कार्य में पवन गोयल, राजेश यादव, विष्णुकुमार शुक्ला, रविंद्र त्यागी एड्वोकेट,अनिल यादव, सलेक नागर और मुकेश पण्डित जी के साथ हजारो लोगों का सहयोग रहा ।

यौद्धाओं को उचित सम्मान न देने वाला समाज नष्ट हो जाता है

अभी गुरुग्राम धर्म संसद के दूसरे दिन 22 जुलाई 2018 को अचानक ही एक बेटी की सिंह गर्जना सुनने को मिली। बिटिया का नाम डॉ कल्पना आर्य है। उसने जो बोला अब वो एक इतिहास बन चूका है और दुनिया का लगभग हर जागरूक हिन्दू इसे सुन चूका है। सोशल मिडिया के माध्यम से हर हिन्दू के एंड्राइड फोन तक डॉ कल्पना आर्य की वीडियो पहुँच चुकी है। 22 जुलाई को मेरे गुरु जी यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी धर्म संसद का मंच संचालन कर रहे थे।वो डॉ कल्पना आर्य को उस दिन समय नही देना चाहते थे क्योंकि डॉ कल्पना आर्य पहले दिन बोल चुकी थी परंतु पहले बाबा परमेन्द्र आर्य ने और फिर मैंने गुरु जी को कहा की कल्पना आर्य को कुछ समझ दिया जाए तब उन्होंने दो मिनट का समय डॉ कल्पना आर्य को यह कहकर दिया की इस्लामिक जिहाद पर कुछ बोल सकती हो तो बोलो। डॉ कल्पना आर्य ने जब बोलना आरम्भ किया तो फिर वो तब तक बोलती रही जब तक की उनका गला बिलकुल सुख नही गया और किसी ने एक क्षण के लिये भी उन्हें टोका नही क्योंकि इस्लामिक जिहाद के विरुद्ध भारत की सबसे मजबूत आवाज मेरे गुरु जी खुद मंत्रमुग्ध होकर पूरी तन्मयता के साथ बिटिया का भाषण सुन रहे थे। डॉ कल्पना आर्य का वक्तव्य समाप्त होने के बाद गुरु जी ने कहा की उन्होंने ऐसा भाषण आज तक नही सुना और ये ये डॉ कल्पना आर्य के माता पिता का सौभाग्य है की उन्होंने ऐसी बेटी को जन्म दिया। ऐसी बेटी के माता पिता होना गर्व की बात है। गुरूजी ने सदन का आह्वान किया और सारे सदन ने खड़े होकर डॉ कल्पना आर्य का ताली बजाकर सम्मान किया।सम्मान करने वालो में नामधारी सिक्खों के गुरु सतगुरु दलीप सिंह जी महाराज,महामण्डलेश्वर स्वामी डॉ सर्वानन्द जी महाराज के साथ अनेक धमार्चार्य व लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान व अनेक हिन्दू संगठनों के कार्यकर्ता भी

यति माँ चेतनानंद सरस्वती

(श्रीमहंत, सिद्धपीठ प्रचण्ड चण्डी देवी व महादेव मंदिर, डासना)

उपस्थित थे।मेरे मन में आया की मैं उस बिटिया को कुछ दूँ तो मैंने अपनी स्वर्ण जड़ित रुद्राक्ष की माला जो की मुझे महंत बनाते समय मेरे गुरु जी ने दी थी,वो मैंने उस बिटिया को देने के लिये गुरु जी से पूछा। उन्होंने बड़ी खुशी के साथ मुझे अनुमति दी और उसी समय उन्होंने अपनी माला मुझे दे दी। मैंने जब डॉ कल्पना आर्य को स्वर्ण जड़ित रुद्राक्ष की माला पहनाई और सारे सदन ने तालियों की गूंज से उसका अभिनन्दन किया तो उनकी आँखों से आंसू निकल गए। वो बहुत दिनों से हिन्दू समाज को जागरूक करने का कार्य कर रही थी पर उनका इतना भव्य और सच्चा अभिनन्दन पहले कभी नहीं हुआ था। एक इतनी बड़ी योद्धा जो सौ करोड़ लोगो के अस्तित्व के लिये लड रही है,उसका अभिनन्दन भी न हो,ये उन सौ करोड़ लोगो के लिये शर्मनाक है।मेरे गुरु जी अक्सर ये कहते रहे हैं की जो समाज अपने योद्धाओं को उचित सम्मान नही देता वो समाज बहुत अपमान और दयनीयता के साथ समाप्त हो जाता है। उन्होंने पूरे जीवन योद्धाओं को सम्मानित करने और उनका साथ देने का प्रयास किया और हमे भी यही सिखाया।मैं अब पूरे विश्वास के साथ ये मानती हूँ की सम्मान योग्य व्यक्ति को सम्मान न देना और जो सम्मान के योग्य नही हैं, उन्हें सम्मान देना,किसी समाज के विनाश के सूचक हैं।राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की ये पंक्तिया जरा ध्यान से पढिये।

तामस बढ़ता गया यदि धकेल प्रभा को,
निर्बन्ध पंथ यदि नहीं मिला प्रतिभा को।
रिपु नहीं यह अन्याय हमें मारेग,
अपने घर में फिर स्वदेश हारेगा।

एक समय था जब हमारे धर्म के विद्वान,संत,महात्मा,ऋषि,मुनि उस व्यक्ति को भगवान का अवतार घोषित करते थे जो अधर्म और अत्याचार को समाप्त करने के लिये हथियार उठाता था,परन्तु अब स्थिति ये है की समाज में योद्धाओं को छोड़कर सबकी प्रतिष्ठा है और योद्धाओं को मिलता है बस अपमान का विष।सत्ताधीशों की चमचागिरी और दलालो को सर्वोच्च मानने की प्रवृत्ति ने इस समाज को इस कदर खोखला कर दिया है की तेरह सौ साल से बहन बेटियो की इस्लामिक जिहादी के द्वारा अभूतपूर्व दुर्दशा देखने वाला समाज नारा लगाता है की हर हिन्दू शेर है,बस जागने की देर है और अब भी इस्लाम के जिहादी कभी लव जिहाद और कभी रेप जिहाद के माध्यम से हमारी बहन बेटियो की दुर्गति करते रहते हैं। इतने अत्याचार के बाद भी हमारी लफ्फाजी और राजनीति लगातार जारी रहती है।

जगदम्बा महाकाली डासना वाली का परिवार सनातन धर्म के मानने वालों को इस्लामिक जिहाद के खतरों से अवगत कराने और सनातन के मानने वालों की संतानों की रक्षा की कामना से धर्म संसद का आयोजन करता है। भारतवर्ष में ये इस्लामिक जिहाद के बारे में अपनी जानकारी सांझा करने के लिये हिन्दुओं का सबसे बड़ा मंच है जिसपर सनातन

के धमार्चार्य और सनातन के अनुयायी अपने विचार रखते हैं।हम लोग बहुत प्रयास करते हैं की इस्लामिक जिहाद के बारे में कोई ठोस मंथन हो पर हम हिन्दुओं के मन में इस्लाम के प्रति इतना भय व्याप्त है की हिन्दू बहुत कम इस्लामिक जिहाद पर बोलने का साहस करते हैं।बड़े बड़े धर्मगुरु और सब बातों पर तो बोलते हैं परंतु इस्लामिक जिहाद की आधारभूत समस्या पर कम ही विचार रखते हैं। इस समस्या से बहुत बड़ी निराशा हिन्दू समाज के नवयुवकों के अंदर घर कर रही है जो बहुत बड़े खतरा का कारण बन सकती है।धमार्चार्यो का यह व्यवहार हमारे नवयुवकों से उनका आत्मविश्वास छीन सकता है और आत्मविश्वास रहित युवा समाज के लाशो के ढेर जैसा ही है जो केवल अपने अंतिम संस्कार का इंतजार कर रहा होता है।

वस्तुतः हम धर्मगुरु किसी भी समाज की रीढ़ होते हैं।हम गुरु हैं और समाज हमारा शिष्य है।आज यदि सनातन धर्म की इतनी दुर्गति है तो यह सनातन के धर्मगुरूओ के लिये चिंतन का विषय है परंतु कही भी कोई आत्मचिंतन की ऐसी धारा दिखाई नही पड़ रही है।हम मुट्ठी भर लोग जो इस्लामिक जिहाद के सत्य को दुनिया के सामने लाना चाहते हैं, हमारे लिये ये बहुत पीड़ादायक है।अगर हम लड कर हार रहे होते तो कोई बात नही थी परंतु हम तो बिना लड़े ही घुटने टेक कर बैठे हैं।आज जब हम दुनिया की ओर देखते हैं तो पूरी दुनिया में इस समय इस्लामिक जिहाद को समझने का और समझ कर जड़ से मिटा देने का माहौल बना हुआ है।अमेरिका में,यूरोप में और यहां तक की मुस्लिम देशों में भी इस्लामिक जिहाद पर बड़ी बड़ी बहस हो रही हैं और इस समस्या से निबटने का रास्ता खोजने का प्रयास हो रहा है।अमेरिका 11 सितम्बर 2001 से पहले जानता ही नही था की इस्लामिक जिहाद क्या और क्यों होता है परंतु आज वहाँ लाखो लोग केवल इस्लामिक जिहाद को जानने और समझने के लिये लगे हुए हैं और वो सब इस्लामिक जिहाद का स्थायी इलाज की खोज रहे हैं।सनातन धर्म इस्लाम का सबसे पुराना शिकार है।इस्लाम की स्थापना की काबा में स्थित शिव शक्ति मंदिर को तोड़कर हुई थी।भारतवर्ष में आज 1300 साल से ज्यादा हो गए मोहम्मद बिन कासिम को भारत आये और राजा दाहिर की हत्या करके पचास हजार हमारी बहन बेटियो की अरब की सड़कों पर मंडी लगाये हुए।तब

से आज तक हम इस अजाब, इस जलजले के शिकार है परंतु प्रतिरोध का कोई मजबूत स्वर अभी तक सुनाई नही दे रहा है।जो लोग बोल रहे हैं वो इतने कमजोर और असंगठित हैं की उनकी कोई आवाज बन ही नही रही है।

इसका सबसे बड़ा कारण हम हिन्दुओं की आपस में एक दूसरे से ईर्ष्या और अपने धर्म के प्रति अज्ञान है। मैंने आज तक के अपने इतिहास विशेष रूप से धर्म के पिछले लगभग एक हजार वर्षों के इतिहास में देखा है की हमने धर्म के लिये लड़ने वालों का उचित सम्मान नहीं किया। जबकी हमारा धर्म बताता है की भगवान भी जब धरती पर आते हैं तो उनका सबसे प्रमुख कार्य धर्म की रक्षा के लिये धर्म के शत्रुओं को समूल नष्ट करना ही होता है। इसको इस तरह से भी समझा जा सकता है की सनातन धर्म के अपने स्वर्णिम काल में सनातन धर्म के मानने वालों ने धर्म के लिये संघर्ष करने वालो को ही भगवान माना है।श्रीराम,श्रीकृष्ण और श्रीपरशुराम इसके सबसे बड़े उदाहरण हैं। हम सनातनधर्मी मानवता के इतिहास में इनसे बड़ा किसी को नहीं मानते।हमारी माँ जगद्जननी जगदम्बा ने सदैव महिषासुर,रक्तबीज,शुम्भ,निशुम्भ,चण्ड, मुण्ड जैसे करोड़ो राक्षसों का वध किया।जिस धर्म ने सदैव धर्मयोद्धाओ को सर्वोच्च माना हो,उस धर्म में कैसे ये विकृति आई,ये सब गहन अनुसंधान का विषय है। मेरा निवेदन हिन्दुओं के सभी धर्मगुरूओ से है और संगठनों से भी है की हम सब लोग उनका सम्मान करना सीखें जो धर्म के लिये लड़ते हैं और धर्म को बचाते हैं।वर्तमान परिस्थितियों में मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ कहना चाहती हूँ की सनातन धर्म के लिये लड़ने वाले हमारे लिये देश के लिये लड़ने वाले फौजियों से भी बड़े और सम्मानित होने चाहिये क्योंकि सैनिक को लड़ने की शिक्षा मिलती है और उसे देश के लिये मिटना सिखाया जाता है जबकी धर्म के लिये लड़ना और मर मिटना आज हमें कोई भी नहीं सीखा रहा है।आज जो भी सनातन धर्म के लिये लड़ रहा है वो बहुत अपमान,बहुत पीड़ा,बहुत अकेलापन,बहुत उपेक्षा और बहुत दुर्दशा को झेलकर लड़ रहा है।आज यदि हम ऐसे योद्धाओं को उचित सम्मान भी नहीं दे सकते तो यह हम सबके लिये डूब कर मरने वाली बात है।अब हमें सनातन धर्म के मानने वालों को यह सिखाना पड़ेगा की धर्मयोद्धाओं का कैसे सम्मान किया जाता है और कैसे उनका साथ दिया जाता है।यदि हमने अपने बच्चों को यह नही सिखाया तो धर्म और इतिहास हमे कभी क्षमा नही करेगा।

कारगिल युद्ध भारतीय सेना के सैनिकों ने अपने पराक्रम से जीता

19 साल पहले यानी 26 जुलाई 1999 को भारत ने कारगिल युद्ध में विजय हासिल की थी। इस दिन को हर वर्ष विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है। करीब दो महीने तक चला कारगिल युद्ध भारतीय सेना के साहस और जांबाजी का ऐसा उदाहरण है जिस पर हर देशवासी को गर्व होना चाहिए। करीब 18 हजार फीट की ऊंचाई पर कारगिल में लड़ी गई इस जंग में देश के लगभग 527 वीर योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए ओर 1300 के लगभग गम्भीर रूप से घायल हुए थे।

वैसे तो पाकिस्तान ने इस युद्ध की शुरूआत 3 मई 1999 को ही कर दी थी जब उसने कारगिल की ऊंची पहाड़ियों पर 5,000 सैनिकों के साथ घुसपैठ कर कब्जा जमा लिया था। इस बात की जानकारी जब भारत सरकार को मिली तो सेना ने पाक सैनिकों को खदेड़ने के लिए ऑपरेशन विजय चलाया। भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के खिलाफ मिग-27 और मिग-29 का भी इस्तेमाल किया। इसके बाद जहां भी पाकिस्तान ने कब्जा किया था वहां बम गिराए गए। इसके अलावा मिग-29 की सहायता से पाकिस्तान के कई ठिकानों पर आर-77 मिसाइलों से हमला किया गया।

कारगिल जंग पूरा घटनाक्रम

3 मई, 1999 : एक चरवाहे ने बटालिक सेक्टर मे भारतीय सेना को सुचना दी थी कि सीमा पर कुछ अजनबी लोग घुम रहे हैं। **5 मई :** भारतीय सेना की पेट्रोलिंग टीम जानकारी लेने जब बटालिक सेक्टर के नियंत्रण रेखा के पास पहुंची तो पाकिस्तानी सेना ने हमारे सैनिकों पर फायरिंग कर दी । इस घटनाक्रम के बाद सेना की सभी बटालियन जो काकसर , द्रास वह मुश्कोह घाटी में लगी थी सभी सचेत हो गई। **9 मई:** पाकिस्तानियों की गोलाबारी से भारतीय सेना का कारगिल में मौजूद गोला बारूद का स्टोर

बाबा परमेन्द्र आर्य (पूर्व सैनिक)

नष्ट हो गया। **10 मई:** पहली बार लदाख का प्रवेश द्वार यानी द्रास, काकसार और मुश्कोह सेक्टर में पाकिस्तानी घुसपैठियों को देखा गया। **26 मई:** भारतीय वायुसेना को कार्यवाही के लिए आदेश दिया गया। **27 मई:** कार्यवाही में भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के खिलाफ मिग-27 और मिग-29 का भी इस्तेमाल किया और फ्लाइट लेफ्टिनेंट नचिकेता को बंदी बना लिया। **28 मई:** एक मिग-17 हैलीकॉप्टर पाकिस्तान द्वारा मार गिराया गया और चार भारतीय फौजी मरे गए।

1 जून: एनएच- 1ए पर पकिस्तान द्वारा भरी गोलाबारी की गई। **5 जून:** पाकिस्तानी रेंजर्स से मिले कागजातों को भारतीय सेना ने अखबारों के लिए जरी किया, जिसमें पाकिस्तानी रेंजर्स के मौजूद होने का जिक्र था। **6 जून:** भारतीय सेना ने पूरी ताकत से जवाबी कार्यवाही शुरू कर दी। **9 जून:** बाल्टिक क्षेत्र की 2 अग्रिम चौकियों पर भारतीय सेना ने फिर से कब्जा जमा लिया। **11 जून:** भारत ने जनरल परवेज मुशर्रफ और आर्मी चीफ लेफ्टीनेंट जनरल अजीज खान से बातचीत का रिकॉर्डिंग जारी किया, जिससे जिक्र है कि इस घुसपैंठ में पाक आर्मी का हाथ है। **13 जून:** भारतीय सेना ने द्रास सेक्टर में तोलिंग पर कब्जा कर लिया। **15 जून::** अमेरिकी राष्ट्रपति बिल किलिंटन ने परवेज मुशर्रफ से फोन पर कहा कि वह अपनी फौजों को कारगिल सेक्टर से बहार बुला लें। **29 जून:** भारतीय सेना ने टाइगर हिल के नजदीक दो महत्त्वपूर्ण चौकियों पोइंट 5060 और पोइंट 5100 को फिर से कब्जा लिया।

इस युद्ध के दौरान सेना के जनरल वी पी मलिक थे

कारगिल व लहे क्षेत्र के उस समय डिविजन कमांडर रणबीर बुधवार थे। कारगिल बिग्रेड के बिग्रेडियर उस समय सुरेन्द्र सिंह थी । मै भी उस समय 4 जाट रेजीमेंट में काकसर सेक्टर में तेनात था। उस समय 4 जाट रेजीमेंट के कमान अधिकारी एम एस कुकसाल थे। इस युद्ध में 4 जाट के लगभग 23 सैनिकों ने वीरगति को प्राप्त किया और सदा के

लिए 4 जाट रेजीमेंट के इतिहास में आपना नाम लिख गए। सबसे पहले कैप्टन सौरभ कालिया की पेट्रोलिंग पार्टी पर पाकिस्तानी सैनिकों ने हमला किया था। इस पार्टी में सिपाही अर्जुन राम, भंवर लाल बगारिया, भीकाराम ,मूला राम और नरेश सिंह शामिल थे। बाद में कैप्टन अमित भारद्वाज वह हवलदार राजबीर न भी लड़ते लड़ते आपने प्राणों की आहुति देश के इस महायज्ञ में दी। कैप्टन शेखावत भी वीरता से लड़ते हुए गंभीर रूप से घायल हो गए। उसके बाद अग्रिम मोर्चे पर लड़ाई की कमान मेजर राजेश सेठी व मेजर राजीव घोष ने संभाली और साथ मे सुबेदार कर्मवीर सिंह व सुबेदार हवा सिंह व हवलदार ईश्वर सिंह और अन्य बहुत से वीर सैनिकों ने वीरता पूर्वक लड़ते हुए काक्सर सेक्टर से पाकिस्तानी सैनिकों को खदेड़ दिया।

इस पुरे युद्ध में बिग्रेडियर सुरेन्द्र सिंह की भूमिका संदिग्ध पाई गईं ।उनके उपर न्यायालय में मुकदमा भी चला लेकिन सबुतो के अभाव में उन्होंने बरी कर दिया गया। लेकिन उनके उस समय के आदेश व युद्ध योजना से ऐसा लगता था कि वो पाकिस्तान से मिले हुए हैं । उनके गलत निर्णयों के कारण ही कारगिल व बटालिक में घुस पैंठ हो सकी ।सेना के जवानों को अधिक हानि भी बिग्रेडियर सुरेन्द्र सिंह की गलत युद्ध नीति के कारण उठाना पड़ा।

इस पुरे युद्ध काल में मुझे अपने नेताओं की भूमिका भी सही नहीं लगी उस समय की सरकार को सेना को पंजाब से हमला करने का आदेश देना था। क्योंकि लड़ाई जितने ज्यादा क्षेत्र में फेलती पाकिस्तान उतनी ही जल्दी घुटने टेक देता और हमारे सैनिक लाहौर को जीतते हुए कारगिल की चोटियों पर तिरंगा फहराते पर उस समय के हमारे प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेई अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन को पत्र लिखने में ही लगे रहे हैं ।युद्ध सदा सैनिकों की वीरता से जीते जाते हैं । इस लिए देश वासियों नेताओं से भी अधिक सम्मान सैनिकों का करना सिखों।

इस युद्ध के दौरान एक बहुत ही शर्मनाक घोटाला हुआ जिसका नाम था ताबूत घोटाला सैनिकों के शव उनके पैतृक गांव में ले जाने के लिए अमेरिका की एक कम्पनी से सोदा हूआ था हल्के व सिल्वर के बने ताबूत लेने का जिसमें वीरगति को प्राप्त हुए सैनिकों के शव सुरक्षित

रखकर लेजा सके। इस घोटाले में उस समय के रक्षामंत्री जार्ज फर्नांडिस का भी नाम आया था। कांग्रेस पार्टी ने उनको रक्षामंत्री का पद छोड़ने की मांग की थी। लेकिन उन्हें बाद में किलीन चिट दे दी थी। लेकिन इस पुरे प्रकरण से देशवासियों को बहुत दुख हुआ।

देश के ऊपर अपनी जान निछावर करने वाले सैनिकों के कफन व ताबूतों में भी घोटाला होने लगे तो समझो उस देश का विनाश जल्दी हो जायेगा। सेना की गाड़ीयो को खरीदने में घोटाला , सेना की वर्दी में घोटाला , सेना के हथियारों की खरीदारी में घोटाला , सैनिकों के भोजन में घोटाला , सेना की केंटिन में घोटाला ओर इस तरह के सभी घोटाले उच्च स्तर पर होते रहते हैं ।इन घोटालों में नेताओं व बड़े अधिकारियों के नाम भी सामने आते रहते हैं। मुकदमे चलाए जाते हैं धीरे धीरे सभी बरी हो जाते हैं।ल

ोकिन गर्व की बात ये है कि हमारे जवान इन घोटालों से अनजान दिन रात देश की सुरक्षा में लगे रहते हैं और समय आने पर अपने प्राणों की बलि देने से पिछे नहीं हटते हैं । यदि सेना के हथियारों व सामान में घोटाला बंद हो जाये तो हमारी सेना विश्व की प्रथम शक्तिशाली सेना बन जायेगी।

सुप्रीम कोर्ट रोज नयी नयी गाईड लाइन दे रहा है ।एक गाइड लाइन सेना में हो रहे भ्रष्टाचार को रोकने के लिए भी दे। ताकि ये देश सुरक्षित रह सके। सेना के घोटालों की खबर मिडिया में देखकर बहुत दुख होता है। आज सेना को शक्तिशाली बनाने का समय है लेकिन यदि पूर्व की तरह घोटाले होते रहे तो देश के लिए बहुत हानिकारक होगा।

'मुक्तक'

बिना गुरू के गति नहीं,
गुरू मगर सब यति नहीं
सत्य को पहचान सकें,
सब में इतनी मति नहीं।।

मरते हैं वो लोग कि जिनकी मर जाती अपनी वाणी,
या फिर जीते जी जिनकी मर जाता आँखो का पानी।
यति गुरू ने जन्म लिया है यहाँ अमरता पाने को,
सदीओं में पेदा होता है तपसी त्यागी बलिदानी।।

सत पथ पर ही चलते रहना सच की राह नहीं खोना,
जो भी मन में सोच लिया हो उसकी चाह नहीं खोना।
यति गुरू ने हमको बस ये ही तो सिखलाया है,
चाहे कितना कठिन दौर हो पर उत्साह नहीं खोना।।
बात–बात पर अहम दिखाना अच्छी बात नहीं,
बात–बात पर बहम दिखाना अच्छी बात नहीं।
यति गुरू ने हमको बस ये ही तो सिखलाया है,
दुश्मन पर भी रहम दिखाना अच्छी बात नहीं।।
एक नजर में जब देखा तो संत विवेकानंद लगा,
जब वाणी उदघोष सुना तो भाई परमानंद लगा।
शिव और शक्ति का बेटा जब हिन्दू के हित खडा हुआ,
बंदा बैरागी सावरकर यति नरसिंहानन्द लगा।।

जीवन परिचय

संदीप वशिष्ठ : (एक कदम गौ–रक्षा और मानवता के लिए)

साहित्य के माध्यम से गौ–रक्षा, हिन्दू अस्मिता रक्षा एवं फार्मा कम्पनी के कुशल प्रबंधक संदीप वशिष्ठ का जन्म एक मध्यमवर्गीय कवि परिवार में 24 नवम्बर 1984 को गाँव चीती तहसील सिकन्द्राबाद जिला बुलंदशहर (अब गौतम बुद्ध नगर) में हुआ। आप सुविख्यात व्यंग्य कवि राजेन्द्र ह्नराजाह्व जी की चोथी एवं अन्तिम संतान हैं आपके बाबा पंडित विधिचंद शर्मा जी जो उत्तर प्रदेश सरकार के पंचायत विभाग में सेकरेट्री पद से जब सेवानिवृत हुए तो आपका जन्म हुआ आपके जन्म से अगले ही रोज सात महाकवि जो अलीगढ में कवि सम्मेलन से दिल्ली जा रहे थे तो रास्ते में ही गाँव दनकौर रेलवे स्टेशन के पास होने के कारण आपके पिता जो कवि दल में थे उन्होने साथी वरिष्ठ कविओं से अनुरोध किया की वो दिन में घर पर थोडा विश्राम और भोजन करके दिल्ली चलें जैसे ही कविदल घर पहुँचा तो आपके बाबा जी ने आपके जन्म के विषय में बताया और आपको एक दिन की अवस्था में अपनी गोदी में लेकर महाकवि महापंडित सत्य प्रकाश 'प्रखर' जी की गोद में दिया तो सत्य प्रकाश प्रखर जी ने आपको संदीप नाम दिया साथ ही खडे महाकवि महापंडित आचार्य राम नाथ 'सुमन' जी आपके नाम संदीप के सामन वशिष्ठ लिखने की सलाह दी इन कविओं में डाक्टर बिजेन्द्र 'अवस्थी' श्री जगपाल सिंह 'सरोज', शिशुपाल सिंह 'निर्धन', सियाराम मनमोजी, व प्रोफेशर ओमपाल सिंह 'निडर' थे इसलिए आप अपने आपको कवि नहीं मानते और अपने पिता की सर्वोत्तम कविता मानते है जिसे सप्तकविओं ने शीर्षक दिया इन सबके छूते ही आप में कविता के गुण आ गये और आपको इलाहाबाद में एक कवि सम्मेलन में छात्र प्रशान्त आर्यप्रियम ने 'कलम का अभिमन्यु' नाम दिया।

मैं वो विश्वामित्र नहीं कि जिसे मेनका भा जाये

मैं वो विश्वामित्र नहीं कि जिसे मेनका भा जाये,
ना ही मैं वो चपल मृग कि जिसे शिकारी खा जाये।
तुम चाहे कितना भी अमृत बाँट–बाँट कर पियो यहाँ,
मैं तो बस विषपान करूंगा जितना सम्मुख आ जाये।।

मन को तो समझाना होता मन तो होता चंचल है,
संयम त्याग तपस्या में ही छिपा हुआ अदभुत बल है।
जब भोले ने गरल पिया तब ही अमृत मिला यहाँ,
सोम शीश पर हुआ सुशोभित पग धोता गंगाजल है।।

एक छोटी सी बेल धरा पर सोच रही अपने मन में

एक छोटी सी बेल धरा पर सोच रही अपने मन में,
कहाँ बुलंदी देख सकूंगी मैं अपने इस जीवन में।
पूरे जीवन मुझे धरा पर चिपके ही रह जाना है,
ना जाने कितने लोगों को मुझे रोंद कर जाना है।
मेरा जीवन सिर्फ धरा पर नहीं धरा के ऊपर है,
मुझको जो ऊपर ले जाये लगा नहीं कोई पर है।
एक वृक्ष ने सुनी वहाँ जब उसकी मन की यही व्यथा,
आखों में आसूं भर लाया उसकी सुनकर करूण कथा।
बोला में हूँ वृद्ध यहाँ पर ओर यहाँ सबसे ऊंचा,
कुछ संतो ने मुझे लगाकर अपने हाथों से सींचा।
इसी लिए तो आज तलक भी तना गर्व से फूला है,
अनगिन बालक बालाओं ने मुझ पर झूला झूला है।
जितनी भी हैं यहाँ सुहागिन मुझे पूजने आती हैं,
अमर सुहागिन होने के हित धागा भी लिपटाती हैं।
लेकिन नन्ही बेल यहां बस तुमने मुझको दिखलाया,
जिसको अम्बर नहीं मिला वो कितना है अकुलाया।
इसीलिए तुम जोर लगाकर मेरे ऊपर चढ जाओ,
अंत समय जब मेरा हो मुझसे भी ऊपर जाओ।
किया बेल वही वहाँ जो वृद्ध वृक्ष ने समझाया,
आलंबन के मिलते ही उसपर भी योवन आया।
वो ऐसे चढती थी मानो शिशु पिता के कंधो पर,
वृक्ष बहुत आनंदित होता उडती पुष्प सुगंधो पर।
लेकिन जिस दिन बेल बेचारी चरम शीर्ष पर पहुंची थी,
वृद्ध वृक्ष से भी आगे जब उसकी दृष्टि पहुंची थी।
हो गया अंत बस तरूवर का उसके पत्ते भी मुरझाये,
योवन में मदमस्त बेल की आखों में आसूं आये ।
दुखी हुई वो बहुत बेल आखिर वो क्यों चला गया,
वो जिससे बाते करती थी किसके हाथों छला गया।
लेकिन जेसे एक साधू उस तरूवर के नीचे आया,
लगता था वो घनी धूप से शायद थोडा अकुलाया।
उससे ही बस वहाँ बेल ने निज मन की गुत्थी खोली,
साधू को अभिवादन कर वो केवल इतना बोली।
जिसके कारण दुनिया में मैं फूली नही समाती थी,
आसपास के सब पेडों को छोटा रोज बताती थी।
केसे अब ऊंचा रह सकती डाल पात जब सूखेंगे,
मोर और कोयल तक भी नही यहां जब कूकेंगे।
सुनी लता की बात वहाँ जब उस साधू ने समझाया,
इस दुनियां के रंगमंच ने सबसे अभिनय करवाया।
निराश नहीं तुमको होना है हिम्मत तुम्हें दिखानी है,
ढक कर पूरा वृक्ष धरा पर तुमको ओस गिरानी है,
फिर जो पत्ते टूटेंगे वो स्वयं खाद बन जायेंगे,
मिटकर भी वो मन ही मन में देखो बस हषार्येंगे।
कुछ दिन में जो पडे बीज हैं उनसे अंकुर फूटेंगे,
उनके योवन के आने तक डाल नही ये टूटेंगे।
उनको सरंक्षण देने का काम तुम्हे करना होगा,
बृद्ध वृक्ष की पीढी के हित अब तुमको जीना होगा।
फिर वो ही तो चक्र बनेगा तुमको भी जाना होगा,
और तुम्हारी अगली पीढी को भी तो आना होगा।
वो भी तो फिर नव वृक्षों पर ऊपर चढते जायेंगे,
पुष्प सुगंधो की खुशबू से भंवरे नित्य बुलायेंगे।
इस दुनिया में भला किसी करना व्यर्थ नही होता,
बस अपने हित जी लेना जीवन का अर्थ नही होता।
इसी लिए जो तुमको उठकर सबसे ऊपर जाना है,
कभी यहाँ आलम्बन देना कभी बल्लरी बन जाना है।।

:– संदीप वशिष्ठ

कौन नहीं जानता मेव मुस्लिमों का सच

संसद से लेकर सड़क तक अलवर घटना को लेकर हंगामा हो रहा है। कांग्रेस क्रूर भारत की बात कह रही है तो भाजपा नेता कह रहे हैं गौकशी से मॉब लीचिंग की घटनाएं बढ़ती हैं। मगर मेवात के मुस्लिम समाज का सच शद कने की बात कोई नहीं कह रहा है। खुद दिल्ली पुलिस और हरियाणा पुलिस पूर्व में कई ऐसी घटनाओं की गवाह है कि जिनमें मेवात से आए लोग अपराधिक वारदात करके भागे और पुलिस से सामना भी किया। मेवात का क्षेत्र राजस्थान के अलवर, भरतपुर, धौलपुर तथा हरियाणा के इलाकों से जुड़ा है। यह मेवात के मुस्लिमों का ही भय है कि कांवड़ यात्रा का मार्ग तक बदल दिया गया। अब अगर भरतपुर आदि इलाकों में जाने के लिए कांवडियों को गुडगांव से धरूहेड़ा और विभाड़ी होते हुए भरतपुर भेजा जाता है। 28 जुलाई वर्ष 2013 की उस घटना को कौन भूल सकता है जिसमें मेवात में गौकशी का विरोध करने पर नरेन्द्र नामक युवक के घर पर हमला किया गया था। साथ ही हजारो मेवाती मुस्लिम सड़क पर उतर

आशित त्यागी

आए थे और राष्ट्र विरोधी नारेबाजी की थी। मेवात से जुड़े हरियाणा के गांवों में जाकर सच पूछिए, गांव वाले बताएंगे कि कैसे अनेक वर्षों से मेव मुस्लिम उनके पशुओ को चुराते आ रहे हैं। गांव वाले पशु चोरो को पकड़ने का प्रयास करते हैं तो पशु चोर गोली तक चलाने से नहीं चूकते। अलवर में हुई अकबर की हत्या का मैं किसी भी तरह से समर्थन नहीं करता हूँ। अकबर हत्याकांड में शामिल प्रत्येक आदमी को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए। इंसानी जान से अधिक कीमती कुछ नहीं हो सकता। मगर मेवात के सभी मुस्लिम पाक साफ हैं और अपराध में शामिल नहीं हैं ऐसा भी नहीं है। क्या यह सच नहीं है कि मेवात के कई इलाकों में पुलिस घुसने तक की हिम्मत नहीं करती। यहां तक कि किसी अपराधी के मेवात के किसी स्थान पर होने की सूचना मिलने के बाद भी पुलिस वहां जाने से डरती है। क्या इस सच को कांग्रेस या सत्तारूढ भाजपा जनता को बताने का कष्ट करेगी। देश के किसी भी हिस्से में दो समुदायों के बीच छोटी-सी झड़प होती है तो इसकी प्रतिक्रिया मेवात में तुरन्त होती है। गत 28 जुलाई को गुड़गांव जिले के सोहना के एक गांव हरियाहेड़ा में असगर (पुत्र फिरोज) के घर गायें काटी जा रही थीं। जब उसी गांव के नरेन्द्र को इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने पुलिस को इसकी खबर दी। पुलिस आने पर गोहत्यारों ने उन पर गोली चला दी। इसके बावजूद पुलिस ने तीन गोहत्यारों को रंगे हाथ

गिरफ्तार कर लिया और अन्य तीन भागने में सफल रहे। किन्तु जब पुलिस गांव से चली गई तो भागे गोहत्यारे हथियार के साथ नरेन्द्र के घर पहुंच गए। उन लोगों ने उनके साथ मारपीट की, उनकी स्कार्पियो गाड़ी भी तोड़ दी। नरेन्द्र को निशाना बनाकर गोहत्यारों ने गोलियां भी चलाईं।

इसके बाद कई हिन्दू संगठनों ने गोहत्यारों के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर सोहना-गुड़गांव सड़क पर जाम लगा दिया। पुलिस-प्रशासन से कार्रवाई का आश्वासन मिलने पर लोग मान गए और जाम खत्म कर दिया गया। किन्तु उसी दिन इस घटना की प्रतिक्रिया मेवात में हुई। अनेक जगहों पर चक्का जाम किया गया। भारी संख्या में मुस्लिम सड़कों पर उतर आए और राष्ट्र-विरोधी नारे लगाने लगे। प्रशासन ने स्थिति की गंभीरता को समझकर पूरे मेवात में रातोंरात पुलिस बल को तैनात कर दिया। इस वजह से कोई बड़ी घटना तो नहीं हुई, पर स्थानीय हिन्दुओं में एक बार फिर डर समा गया।

हिन्दुओं ने कई दिन तक अपने बच्चों को स्कूल-कालेज नहीं भेजा, उनकी दुकानें बंद रहीं। समाचार लिखे जाने तक मेवात में भारी संख्या में पुलिस तैनात थी। नाम न छापने की शर्त पर मेवात के एक दर्जन से अधिक हिन्दुओं ने पाञ्चजन्य को बताया कि जब भी देश में कुछ होता है तो मेवात के हिन्दुओं को निशाना बनाया जाता है। इसलिए हिन्दू मेवात छोड़कर जा रहे हैं। मेवात से पलायन करने वाले हिन्दुओं की संख्या रोजाना बढ़ती जा रही है। हिन्दुओं का कहना है कि यहां उनकी कोई नहीं सुनता है। पुलिस और सरकार भी मुस्लिमों के साथ खड़ी रहती है। हिन्दुओं को मारने वाला अपराधी खुलेआम घूमता है, किन्तु पुलिस उसको नहीं पकड़ती है। पिछली होली के समय की एक

घटना है। नूंह के एक दबंग मुस्लिम ने होलिका दहन की जमीन पर कब्जा कर लिया था। उस जमीन के पास रहने वाले प्रदीप ने जब इसका विरोध किया तो मुस्लिमों के एक गुट ने उस पर हमला कर दिया। अपनी जान बचाने के लिए प्रदीप ने उनसे मुकाबला भी किया पर अन्त में उसे गोली मार दी गई। सैकड़ों लोगों के सामने उसकी हत्या की गई। हत्यारों के विरुध्द धारा 302 के तहत मामला भी दर्ज हुआ पड़ा है, पर अभी तक किसी भी हत्यारे की गिरफ्तारी नहीं हुई है। सभी हत्यारे खुलेआम घूम रहे हैं। पुलिस भी उन्हें पहचानती है किन्तु उन पर हाथ नहीं डालती है। लोगों का कहना है कि उन हत्यारों को राजनीतिक संरक्षण मिला हुआ है। उन हत्यारों के निशाने से बचने के लिए कोई हिन्दू भी इस मामले को नहीं उठाता है। मेवात में पुलिस पर हमले की घटनाएं भी बढ़ रही हैं। आये दिन कहीं न कहीं पुलिस की पिटाई हो रही है। हिन्दुओं का कहना है कि जब मेवात में पुलिस भी सुरक्षित नहीं है तो फिर आम आदमी कैसे सुरक्षित रह सकता है?

मेवात प्रदेश की मांग

अनेक लोगों का कहना है कि मुस्लिम वोट की खातिर मेवात को कट्टरवादियों के हवाले किया जा रहा है। इन्हीं कट्टरवादियों की मांग पर 2004 में गुड़गांव जिले को काटकर एक सम्प्रदाय विशेष के लिए मेवात को जिला बनाया गया। अब ये कट्टरवादी हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के कुछ मुस्लिम-बहुल क्षेत्रों को मिलाकर मेवात राज्य की मांग करने लगे हैं। आशंका है कि आने वाले चुनावों के समय यह मांग जोर पकड़ेगी। हिन्दुओं को डर है कि यदि वोट के लालची मेवात प्रदेश की मांग मान लेंगे तो फिर यहां हिन्दुओं का रहना बहुत ही मुश्किल हो जाएगा।

कांवड़ यात्रा का मार्ग बदला

राजस्थान के जो कांवड़ यात्री हरिद्वार से जल लेकर दिल्ली-गुड़गांव-मेवात होते हुए अलवर, भरतपुर जाते हैं उन्हें मेवात जाने से रोक दिया गया है। इन यात्रियों को गुड़गांव से धारूहेड़ा-भिवाड़ी होते हुए राजस्थान भेजा जा रहा है। जो कांवड़ यात्री मेवात क्षेत्र के हैं उन्हें सोहना तक जाने दिया जाता है और उसके आगे पुलिस की सुरक्षा में उन्हें गन्तव्य स्थान तक पहुंचाया जाता है। पहले प्रशासन ने कहा था कि कांवड़ यात्रियों को पुलिस की गाड़ी में बैठाकर मेवात पार कराया जाएगा किन्तु लोगों ने पुलिस की बात नहीं मानी यह कहकर कि इससे तो कट्टरवादियों के हौंसले ही बढ़ेंगे।

इतिहास के पन्नों से...

अनिल यादव
संपादक-सूर्या बुलेटिन

एक दिन कुछ इतिहासकारों से बात करते समय अचानक मेरे मन में आया कि भारतवर्ष की अलौकिक बलिदानी गाथाओं को भी सभी दुनिया को समझाना चाहिये। भारत के इतिहास की न जाने कितनी गाथायें हैं जो विद्वानो ने लिखीं और उससे भी ज्यादा अनगिनत ऐसी गाथायें हैं जिन्हें न तो कभी लिखा गया और न कभी पढ़ा गया परन्तु वे लोगों की स्मृतियों में सदैव जीवित रहीं हैं। सूर्या बुलेटिन को माध्यम बनाकर हम एक प्रयास शुरू करते हैं कि सनातन धर्म के मानने वालों तक ये संदेश पहुंचाया जाये कि हमारे पूर्वज किस तरह से अपने धर्म और अपने लोगों के लिए लड़ेऔर किस तरह से मिटे परन्तु उन्होंने अपना बलिदान देकर धर्म रक्षा की ज्वाला को प्रज्वलित किया। मैं इसका प्रारम्भ आचार्य चतुरसेन की अतिप्रसिद्ध कृति 'सोमनाथ' के कुछ अंशों से करना चाहता हूं। ये बात तबकी है जब गजनी के राक्षस महमूद गजनवी ने सोमनाथ को तोड़ने के लिए जाते हुए रास्ते में अजमेर पर आक्रमण किया। अजमेर के महाराज धर्मगजदेव सिंह ने महमूद गजनवी को बुरी तरह से युद्ध में हरा दिया और महमूद गजनवी ने उनसे प्राणों की भीख मांग कर संधि की। उसके बाद महाराज धर्मगजदेव सिंह जी के साथ क्या हुआ। ये आपको इस महागाथा में पढ़ना चाहिये।

धर्मगजदेव

सांभर और अजमेर का संयुक्त इलाका उन दिनों सपादलक्ष कहलाता था, सांभर पुरानी राजधानी थी और अजमेर की नई बस्ती बसी थी,तब चौहान राजाओं ने इस स्थान को युद्धोपयोगी जान,पहाड़ियों पर चारों ओर सुदृढ़ गढ़ बना,अजमेर ही को अपनी मुख्य राजधानी बनाया था। उन दिनां अजमेर पर चौहान राजा धर्मगजदेव का अबाध शासन था। धर्मगजदेव बड़े वीर, साहसी और योद्धा पुरुष थे। अजमेर अरावली की उपत्यका में राजस्थान का मुख था। यह नगर चारों ओर से दुर्गम पर्वत-श्रेणियों से घिरा हुआ अति सुरक्षित था। धर्मगजदेव को विदित था कि मारवाड़ की मरुस्थली को पार करके जो आततायी आक्रान्ता राजस्थान में प्रवेश करना चाहे,उसे अजमेर ही के मार्ग से आना पड़ेगा।इससे वह अपने को राजस्थान का दिग्पाल समझकर सदैव चौकन्ना रहता था।

धर्मगजदेव ने जब सुना कि गजनी का आमीर बर्बर तुर्कों के दल-बादल में मारवाह की मरुस्थी को पार करके ताबड़तोड़ अजमेर की ओर घुसा चला रहा है, तो उसने अविलम्ब उसके सम्मुख होने की तैयारियां प्रारम्भ कर दीं। अमीर से मुठभेड़ का

उसका यह पहला ही अवसर न था, इससे प्रथम वह दो बार उससे टक्कर ले चुका था। वह जैसा रणशूर था, वैसा ही राजनीति-पटु भी था। उसने सब कोष-खजाना माल-मत्ता वीटवी किले में भेज दिया। काफी दिनों तक चल सकने योग्य रसद अजमेर के किले में एकत्र कर ली। गांव-गांव ढिंढोरा पिटवाकर लोगों को सावधान और सुसज्जित रहने का आदेश दे दिया। जिन गांवों को खतरा था,उन्हें खाली कर दिया। राह-बाट के कुएं-तालाब-बांध सब तोड़ डाले। फसलें जला डालीं। वृक्ष काट डाले,सड़कें-पुल-मार्ग सब तोड़ डाले। घाटियों को बंद कर दिया। इस अल्पकाल में जितना संभव था,तैयार होकर उसने अजमेर से बाहर आकर पड़ाव डाला। धर्मगजदेव के आवाहन पर ग्रामीण कृष्णक हल-बैल छोड़ कर, धनुष-बाण और ढाल-तलवार हाथ में ले, इस आततायी से लड़ने को आ जुटे। आसपास के ठिकानेदार,जमींदार और सगेस म्बन्धी राजा लोग भी उसकी सहायता को आ पहुंचे। चारों ओर से चौकी-पहले का प्रबंन्ध धर्मगजदेव ने अपनी सेना का निरीक्षण किया। उसके विभाजन किए और फिर वह अनुभवी दूतों को आमीर की खोज-खबर लेने भेजकर सावधान हो अमीर की अबाबई की प्रतीक्षा करने लगा। महमूद ताबडतोड़ मंजिल-दर-मंजिल कूच करता हुआ,मरुस्थली की थकान उतारने की परवाह न कर अजमेर की सीमा में आ घुसा। उसने पुष्कर के उस पार अपनी छावनी डाली। धर्मगजदेव यह समाचार पाते ही पुष्कर की ओर बढ़ा। उसने पुष्कर का पवित्र जलाशय अपने अधिकार में कर लिया। और सेना को युद्ध के लिए सन्नद्ध कर छावनी डाल, अमीर की गतिविधि का निरीक्षण करने लगा। अमीर महमूद चौहानराज धर्मगजदेव के पराक्रम से बेखबर न था। वह उससे युद्ध का खतरा उठाना न चाता था। अतः उसने मैत्री-सन्देश लेकर दूत, मुलतान के अजयपाल,सेवन्दराय,सालार मसऊद और तिलक हज्जाम को अजमेरपति के पास भेजा। साथ में बहुत सी बहुमूल्य भेंट भी भेजी। सुलतान के दूतों का यथोचित सत्कार करके धर्मगजदेव ने उनके आने का कारण पूछा। इस पर सालार मसऊद सुलतान का खरीता महाराज की सेवा में पेश किया। महाराज की आज्ञा से खरीता भरी सभा में पढ़ा गया। उसमें लिखा था'' अजमेर के महाराज, आपकी वीरता और दरियादिली का हमने बहुत बखान सुना है। हम, गजनी के यशस्वी सुलतान आपकी दोस्ती के लिए हाथ पसारते हैं। हमारी राह रोकने को,अपना लश्कर लेकर आपके आने का क्या मतलब है? हमारा इरादा आपके मुल्क पर हमला करने का नहीं है। खुदा के हुक्म से कुफ्र तोड़ने, थोड़े से जानिसार साथयों के साथ हम गुजरात की ओर जा रहे हैं।आप हमारी राह छोड़कर दोस्ती का सबूत दीजिये। हमारा नाम महमूद है,हमारी तलवार ओर गुस्सा दुश्मनों का काल है। हमारे दुश्मों को मौत और आग तथा गुलामी के आंसू नसीब होते हैं। उम्मीद है आप दुश्मनी का नहीं,दोस्ती का हमें सबूत देंगे। अस्सलाम।''

महाराज ने धैर्य से पत्र सुना और ममभेदी दृष्टि अपने सामन्तों पर डाली। फिर उसने सुलतान के दूतों को देखा। उसकी दृष्टि मुलतान के राजा अजयपाल पर ठहर गई। अजयपाल ने आगे बढ़कर विनम्र वाणी से कहा,'' महाराज,राजनीति कहती है कि अयाचित आपत्ति को निमन्त्रण नहीं देना चाहिए। सो आप आगे- पीछे की सब बातें सोच-विचार कर अमीर से मैत्री-व्यवहार कीजिये। इसी में भलाई है। '' महाराज ने उसे घूर कर देखा। वह जानते थे कि उनका यह सम्बन्धी वीर और बुद्धिमान है। उसकी आंखें चमकरदार,नाक उभरी और दाढ़ी अधकचरी थी। कुछ देर उसे वह घूरते रहे फिर धीरे से गम्भीर स्वर में बोले,'' महाराज अजयपाल, आपने बिना लड़े मुलतान अमीर को सौंप दिया?''

'' महाराज, हमारा बल नगण्य था, हम युद्ध नहीं कर सकते थे, आप ही सोचिए, नष्ट होने के लिए आत्मघाती युद्ध करने से क्या लाभ?''

'' इसी से आपने सुलतान को आत्म समपर्ण कर दिया?''

'' हां महाराज ! और सुलतान ने नागरिकों को थोड़ा सा दंड लेकर उन्हें छोड़ दिया। नगर को कोई हानि नहीं पहुंचाई, न नगर लूटा गया।''

'' दंड किस अपराध का? ''

अजयपाल की वाणी लड़खड़ाई। उसने कहा,'' अपराध का नहीं महाराज, नगर न लूटने का वचन देकर। ''

'' और सुलतान से इस सहयोग करने के सिले में आप ही मुलतान के राजा कायम रहे।''

'' हां महाराज, यशस्वी सुलतान ने मुझे मुलतान का अधीश्वर स्वीकार कर लिया है। ''

'' इसी से कृतकृत्य होकर अब आप सुलतान की मुसाहिबी कर रहे हैं। औरों की ांति सुलतान का कृपापात्र बनना चाहते हैं-विशेषकर अपने सम्बन्धियों को? ''

'' यही बात है महाराज,लाभ-हानि...।''

'' यह मैं समझ गया। हानि का जोखिम आप उठाना नहीं चाहते,केवल लाभ-ही-लाभ। भीमपाल को भी आपने यही लाभ की राह दिखाई है, और अब मुझे भी यही परामर्श देने आए हैं !''

महाराज धर्मगजदेव क्षण-भर मौन रहे, फिर उन्होंने सेवन्द राय की ओर देखकर कहा, '' आप भी शायद राजपूत हैं?''

'' हां महाराज, आपकी इच्छा हो तो अमीर आपको यथेष्ट हरजाना...''

'' बस,बस, इतना ही यथेष्ठ है। तो सज्जनों, मेरा उत्तर है कि यशस्वी गजनी के सुलतान का हमने कुछ बिगाड़ा नहीं है। इस लिए किसी भी हालत में हम सुलतान के शत्रु नहीं हैं। परन्तु सुलतान बुरी नीयत से हिन्दुओं के धर्ममन्दिर सोमनाथ को भंग करने के निमित्त, राह में खून-खराबी और लूटपाट करता और गांवों-नगरों को जलाकर खाक करता आ रहा है, यह जबर्दस्ती दूसरों के धर्म और अधिकारों की अवज्ञा है। दूसरों के घरों पर डाका डालना है। इसे न बहादुरी कहा जा सकता है, न इससे सुलतान की नेकनामी बढ़ती है। इसके विरुद्ध सुलतान ऐसे कामों से लालची,अत्याचारी,लुटेरा, खूनी और आततायी प्रसिद्ध हो रहा है। यशस्वी सुलतान ने कई बार भारत को तलवार और आग की भेंट किया है। हर बार उसने हिन्दू मंदिरों को तोड़ा है, हिन्दू स्त्रियों की लाज लूटी और हिन्दू लोगों को गुलाम बनाया है। इन लोगों ने सुलतान का कभी कुछ नहीं बिगाड़ा था। वे उसके देश से दूर, अपने देश में, अपने धर्म और विश्वास से रहते हैं। उन्होंने सुलतान के देश पर हमले नहीं किये, उसके देश को लूटा नहीं। फिर उनके देश में आकर जबर्दस्ती उनके धर्म, जीवन और घर-बार को इस तरह निर्दयता से नष्ट करना,यशस्वी सुलतान के लिए न्याय की बात नहीं है।'' शोभनीय भी नहीं है। इसलिए सुलतान यदि सचमुच इस सेवक के सम्मुख के मित्रता का हाथ आगे बढ़ात हैं, तो मैं मित्र की हैसियत से कहूंगा कि सुलतान अपने देश को लौट जाएं और दूसरों के धर्म में तलवार के जोर से बाधा न डालें। यदि सुतान इस राजपूत मित्र की यह नेक सलाह नहीं मानेंगे, तो सुलतान को जीते-जी अपने

राज्य में होकर आगे बढ़ने से रोकना मेरा वैसा ही पवित्र धर्म और कर्त्तव्य हो जाता है, जैसा सुलतान का ऐसे खूनी आक्रमण करना...।

'' हम राजपूत,मित्रों का अतिथि सत्कार करने में तुलना नहीं रखते। यदि सुलतान मित्र हैं, तो वे हमारे धर्म और देश के प्रत्येक आदमी के साथ वैसा ही बर्ताव करें, जैसा कि अपने देश के आदमियों के साथ करते हैं। तब सुलतान का अजमेर में स्वागत है। धर्मगजदेव उनका अतिथि-सत्कार करने में सर्वस्व न्योछावर कर देगा। परन्तु यदि सुलतान हमारे धर्म, और हमारे देश के आदमियों को तलवार और मौत के घाट उतारने पर ही तुले हुए हैं, तो यह चौहान धर्मगजदेव रणस्थली में तलवार से उनका सत्कार करने को यहां सन्नध है।''

सपालदक्ष के अधिपति महाराज धर्मगजदेव ने जलद-गंभीर वाणी से ये वचन कहे। फिर मुलतान के महाराज अजयपाल की ओर मुंह करके कहा'' महाराज अजयपाल, आप हमारे सम्बन्धी हैं, चौहान हैं। हमारा आपका खून एक है। परन्तु जो आप संदेश लेकर आए हैं, उसके कारण इस खून की एकता के नाम पर मैं आपकी ओर से लज्जित हूं। महाराज, आप सिन्धनद के दिग्पाल हैं। सो आपने अपना कर्त्तव्य पालन न कर प्राण बचाने का श्रेय-लाभ किया। यह आपने क्षत्रियों की नवीन मर्यादा स्थापित की। आपने इस युक्ति से मुलतान बचा लिया और अब रहा-सहा पुण्य लाभ करने सुलतान की दासता करते उनका दूतत्व करते हुए, उसे देवस्थान नष्ट करने पटटन ले जा रहे हैं। आप ही ने लाहकोट के सुलतान को मार्ग देने को राजी किया था, यह आपकी कीर्ति मैं सुन चुका हूं। महाराज, आपकी इस कीर्ति का स्वर्ग में बखान करने आपके दादा घोघाबापा पहले ही स्वर्ग पहुंच चुके हैं। जिन्होंने आपको बचपन में घुटनों पर खिलाया था। महाराज अजयपाल,आपने चौहानों को अच्छा मार्ग दिखाया, आप जैसे शूरवीर तलवार के धनी तो शत्रु के गोइन्दे बनें और आपके वृद्ध पूज पुरुष रणस्थली में मृत्यु के भोग बनें? आप सपालदक्ष के उपकार के ही विचार से आए थे, अन्ततः यह राज्य भी तो आपका ही है। परन्तु महाराज, मैं दुर्भागी आपकी भल सीख से लाभ न उठा सका। अब आप सुलतान के सेनापति को हमारा वक्तव्य समझा दीजिये। जिससे वह सुलतान को ये ही सब बातें ठीक-ठीक बता सके।'' '' और अब, महाराज अजयपाल आप जा सकते हैं। आपसे, सम्बन्धी की भांति भंज-भर भेंद, करने का यह अवसर नहीं हैं। आपका समय बहुमूल्य है और कुछ कहने-सुनने योग्य बात नहीं है।'' महाराज धर्मगदेव का यह भाषण सुन्दर सुनकर, मुलतान के अधिपति का मुंह ठीकरे के समान निष्प्रभ हो गया। उन्होंने नेत्र नीचे कर लिये। शेष दोनों दूतों के मुंह भी भरे बादलों समान गम्भीर हो गए और वे नीचा सिर किये वहां से चल दिये।

चौहान की रण सज्जा महाराज धर्मगजदेव ने अब बिना एक क्षण विलम्ब किए तुरन्त युद्ध समिति की एक संक्षिप्त बैठक की। समिति में सांभर के ढूंढिराज,आमेर के दुर्लभदेव,बदनेर और देवगढ़ के ठाकुर सरदार ओर सोजत पाली के इलाकेदार मंडलेश्वर सम्मिलित हुए। सपालदक्ष के महाराज की कमान में इस समय सब मिलाकर साठ हजार सेना एकत्रित हो गई थी।इसमें तीस हजार सवार, आठ हजार धनुर्धर भील, एक हजार हाथी और शेष पैदल सेना थी। अजमेर से आगे गुजरात के मार्ग पर अरावली की पर्वत-श्रेणियां प्रारम्भ हो जातीं हैं, और ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जाते हैं, दुर्गम वन-पथ आता-जाता है। नान्दोल में आगे विकट वन है, आरै उसके बाद दूर तक एक तंग घाटी में होकर मार्ग जाता है। उस घाटरी के उस पार फिर खुले चौड़े हरे-भरे मैदान और फिर आबू के मनोरम दृश्य नजर आते हैं। महाराज धर्मगजेव ने आमेर के राजा दुर्लभदेव की बड़ाइ करके कहा,'' हे वीर ! मैं तुम्हें सबसे पहले सबसे कठिन काम सौंपता हूं। गजनी के इस रक्षस को मैं भली-भांति जानता हूं। इसने सोलह बार भारत को आक्रान्त किया है। मुझसे जहां तक बनेगा,इसे रोकूंगा। पर मुझे आगे का भी विचार करना चाहिए। सो तुम अपनी मीना राजपूतों की सम्पूर्ण सेना और आठ हजार भीलों को लेकर सीधे नान्दोल जाओ। वहां मेरा भतीजा अनहिल्लराज हे, वह गुजरात के सोलंकियों का भी सम्बन्धी है, वह तुम्हारी सहायता करेगा। सो तुम सब, यदि यह दैत्य कदाचित यहां से बचकर भी निकल जाए तो व्यर्थ युद्ध करनके अपनी शक्ति नष्ट न करना। प्रत्युत इसे नान्दोल के वन में घेरकर घाटी में ले जाना। वहां तुम्हारे भील,मीना और राजपूत इससे निबट लेंगे। चाहे तिना सैन्यबल होने पर भी वहां से इसका निस्तार नहीं है।'' इतना कहकर,उसने युवक दुर्लभराय की कमर में अपनी जड़ाऊ तलवार बांधी और उसे विदा किया। देवगढ़,सोजत और बदलेन के सरदारों को भी ऊंच-नीच समझाकर उसके साथ ही आदरपूर्वक रवाना कर दिया। यह कर्मठ राजा सारी रात व्यस्त रहा। उसने अपनी कुल सेना के तीन भाग कर डाले। आठ जहार सवार और दस हजार पैदल सेना तथा चार सौ हाथी सांभर के महाराज ढुंढिराज की कमान में सौंप,पुष्कर से पीछे हटाकर अमीर के वाम भाग में छिपा दिया। आठ हजार सवार और पन्द्रह हजार पैदल,मन्त्री पुत्र सोढल की कमान में अजमेर की रक्षा में छोड़े। शेष हाथी-घोड़ और पैदल सेना ले वह स्वयं अमीर का सामना करने को व्यूहबद्ध खड़ा हुआ। व्यूह में सम्मुख पदातिक,पक्षों में अश्वारोही और पृष्ठ भाग में गज-सैन्य स्थित की। सरदार और सेनानायक अपनी-अपनी टोली के सम्मुख सन्नध खड़े हो गए। भाट-चारण विरद बखानने लगे। कूच का नक्कारा बजा, धौंसे पर चोट पड़ी। सेना ने रणांगण की ओर प्रयाण किया। बन्दीजन धर्मगजदेव तथा अन्य मंडलेश्वरों की प्रशस्ति गाते चले। सेना में उत्साह और विजय-नाद की हिलोरें उठनें लगीं। सैनिकों के रक्त में उत्तेजना भरने वाले मारू बाजे बजने लगे। सेना की कूच से पृथ्वी की धूल आकाश में उड़कर छा गई। कब सूर्योदय हुआ,इसका भान न रहा। अमीर ने अपने दूतों के मुंह से जब धर्मगजदेव का सन्देश सुना, तो वह गम्भीर हो गया। उसने तुरन्त युद्ध करने का निश्चय कर,सेनापतियों सहित अथम श्रम कर रातोंरात सेना को ब्यूहबद्ध किया। अमीर यद्यपि मरुस्थली को पार करके अभी आया था। उसकी सेना थकी हुई और कुछ अव्यवस्थित थी। परन्तु तुरन्त युद्ध के सिवा दूसरा चारा न था। रात्रि के पिछले पहर अमीर एक चंचल अश्वर पर सवार अपने सरदारों सहित एक ऊंचे ठीले पर चढ़कर हिन्दुओं की सेना की गतिविधि देखने लगा। उसने देखा मशालों की रोशनी में राजपूत सेना ब्यूहबद्ध रणसज्जा से सज रणांगण में अग्रसर हो रही है। धोंसे की धमक से अमीर का दिल दहल गया। उसने तीर की भांति अश्व फेंका और तत्काल अपनी सेना को व्यवस्थित रूप से युद्धस्थली की ओर कूच करने का आदेश दिया। जिहार के जुनून से उन्मत्त बर्बर पठारों और तुर्कों का दल-बादल '' अल्ला हो अकबर'' का नाद करते आगे बढ़ चले। पुष्कर का युद्ध चौहार और अमीर के लश्मर ज्यों ही एक-दूसरे की दृष्टि मर्यादा में पहुंचे,त्यों ही दोनों ओर से बाणों की वर्षा प्रारम्भ हो गई। अभी ठीक-ठीक

सूर्योदय नहीं हुआ था। बाण-वर्षा प्रारम्भ होते ही दोनों सेनाओं का आगे बढ़ना रुक गया। महाराज धर्मगजदेव ने यत्न और चातुरी से सब सम्भव टीलों और ऊंचे स्थानों पर अपनी सेना को दूर-दूर तक फैला दिया था। अमीर भी योजना से असावधान न था। उसने सैनिकों को वृक्षों,टीलों और आड़ की जगहों में टुकड़ियों को बिखेरकर,आड़ लेकर तीर मारने का आदेश दिया।

देखते ही देखते दोनों ओर के सिपाही घायल हो-होकर चीत्कार करने लगे। राजपूत आगे बढ़कर हाथोहाथ तलवार का युद्ध करने के इच्छुक थे। परन्तु अमीर के कौशल से ऐसा वे न कर सके। वह समूचा दिन इसी प्रकार व्यतीत हुआ।सन्ध्याकाल होने पर अमीर ने युद्ध बन्द करने का संकेत किया। और दोनों ओर से सैन्य अपने-अपने शिविर को फिरी। महाराज धर्मगजदेव ने पीठ नहीं खोली, सेना का निरीक्षण किया। घायल योद्धाओं को अजमेर भिजवा दिया गया तथा सैन्य का फिर से वर्गीकरण कर, दूसरे दिन के युद्ध की योजनाएं बनाईं। दूरस्थ सैन्य को संदेश देकर सांढ़नियां रवाना कीं गईं। दूसरे दिन सूर्योदय के प्रथम ही राजपूतों को सावधान होने का अवसर न दे, अमीर ने अपने दुर्घर्ष घुड़सवारों को ले अकस्मात धावना बोल दिया। इस कार्य से प्रथम तो राजपूत सैन्य में घबराहट अव्यवस्था फैली। पर तुरन्त ही राजपूत तलवारें ले-लेकर टूट पड़े। देखते-ही-देखते वे अपने छोटे-छोटे दल बनाकर अमीर की सेना में धंस पड़े। हाथोहाथ मारकाट होने लगी। रुंड-मुंड कट-कटकर पृथ्वी पर गिरने लगे। मेरों की सेना जो बर्छी के युद्ध में अप्रतिम थी, अपनी नोंकीली बर्छियां ले-लेकर यवनों का संहार करने लगी। उनकी बर्छियां शत्रुओं की अंतड़ियां बाहर खीं जाए बिना शरीर के बाहर निकलती ही न थीं। उनकी खमदार तलवारों के करारे घाव खा-खाकर शत्रु हाहाकार कर उठे। अमीर अपनी सेना की यह दुर्दशा देख क्रोध से उन्मत्त हो गया। उसने मेरों के उस बर्छी-युद्ध की कल्पना भी न की थी। यह मेर,व्यवस्था और युद्धनियम की परवाह न कर काल-दूत की भांति अमीर की सेना का उछल-उछल कर संहार कर रहे थे। घोड़ों को भी वे सैनिकों के समान ही हलका करने लगे। अमीर ने क्रोध से पागल हो इन जंगली मेरों का इसी दिन आमूल नाश करने की ठान ली। उसने बलूजी घुड़सवारों को ललकारा। ये खूंखार बलूची चारों ओर से मेरों की टुकड़ियों को घेरकर बड़े-बड़े भालों से उन्हें छेदने और अपने सधे हुए घोड़ों से उन्हें रुंधने लगे। मेरों की सैन्य में त्रास प्रकट हुआ, उनके पास घोड़े न थे, वे पैदल थे। महाराज धर्मगजदेव ने यह देख प्रबल पराक्रमी चौहान घुड़सवारों को शत्रु पर पेल दिया। अब बराबरी का युद्ध था। चौहान-खून जगतप्रसिद्ध बलूची पठानों से जूझ रहा था। राजपूतों को मनचाहा अवसर मिल रहा था। यह तलवार का हाथोंहाथ युद्ध दोपहर होते-होते ऐसा घातक रूप धारण कर बैठा कि दोनों ओर के सरदारों ने समझा कि कदाचित आज का युद्ध ही निर्णायक युद्ध हो रहा है। मरे हुए सवारों और घोड़ों से योद्धाओं के मार्ग रुक गए। अपरान्ह होते-हाते हमीर की सेना में अव्यवस्था दीखने लगी। बलूची पठान जगह-जगह पीछे हटने लगे। महाराज धर्मगजदेव ने यह देख अपने सुरक्षित अश्वारोहियों को धावा बोलने देने की आज्ञा दी, इस नई सेना के धक्के को पठान सहन कर पीठ दिखाकर भागने लगे। अमीर ने विपत्ति को सम्मुख देख भागते बलूचियों क सम्मुख अपना अश्व दौड़ाया ओर हरा झंडा ऊंचा करके ललकार कर कहा,'' खुदा और इस्लाम के नाम पर मरो या मारो। भागने की गुंजाइश नहीं है। गजनी बहुत दूर है।'' बलूची जैसे-तैसे संगठित हुए। एक बार फिर घमासान युद्ध हुआ।

लाशों पर लाश गिरने लगी। दोनों ओर की सेना में थकान और क्लान्ति दीखने लगी। अमीर ने सूर्यास्त से प्रथम ही युद्ध बन्द करने का संकेत किया। इस दिन भी बिना किसी निर्ण के दोनों सेनाएं पीछे फिरीं। परन्तु राजपूत सना उत्साह में थी और अमीर की सेना घबराहट में। यद्यपि राजपूतों की सेना का आज भारी संहार हुआ था। परन्तु अमीर की सेना की क्षति साधारण न थी। अमीन चिन्तित हुआ। तीसरे दिन अमीर की इच्छा युद्ध बन्द करने की थी। परन्तु महाराज धर्मगजदेव ने नहीं माना। उन्होंने अमीर की सेना पर आक्रमण कर दिया। अमीर को युद्ध करना पड़ा। युद्ध आरम्भ करने से पूर्व महाराज ने अमीर को सन्देश भेजा कि वह चाहे तो उसे सुरक्षित लौटने दिया जा सकता है। अमीर की सारी सेना में निराशा व्याप गई।

उसने उस दिन खेत सारी सेना के बीच प्रातःकीन नमाज पढ़ी। नमाज के बाद उसने उसने संक्षिप्त भाषण दिया। भाषण में उसने कहा,'' बहादुर पठानों, तुमने अब से पहले सोलह बार अपने घोड़ों की टॉपों से काफिरों के मुल्क को रौंदा है। और सदैव तुम अपने सिरों पर फतह का सेहरा बांधकर अपने घोड़ों की जीनों को मुहरों और जवाहरातों से भरकर और गुलामों को घोड़ों की जीन से रस्सियों से बांधकर गजनी लौटे हो। तुम्हारी औरतें इस बार भी तुम्हारे उसी तरह लौटने का इंतजार कर रहीं हैं। तो क्या तुम इस बार लड़ाई में हारकर लौटोंगे? अपनी तलवार और इस्लाम के नाम पर आओ, फतह हासिल करो। भागने की राह बन्द है। खुदा तुम्हारे साथ है। काफिर पामाल है '' सेना में एक बार फिर अल्लाहो-अकबर का जयनाथ हुआ। बर्बर तातार और पठान नए आवेश के जुनून में भरकर घोड़ों पर सवार हुए। देखते-ही-देखते घमासान युद्ध होने लगा। यह चौमुखी युद्ध था। कहीं पर तलवारें झनझना रहीं थी, कहीं बर्छियां कलेजों के आर-पार हो रहीं थी। आकश तीरों से भरा था। दोनें ओर के भट एक-दूसरे के खून के प्यासे होकर मारा-मारी कर रहे थे। अमीर विद्युत वेग से घोड़े पर सवार होकर कभी यहां तो कभी वहां अपनी सेना को उत्साहित करता फिर रहा था। मध्यान्ह में अभी देर थी कि अमीर की सेना में चंचलता प्रकट होने लगी। महाराज धर्मगजदेव का दबाव बढ़ता जा रहा था। अमीर अपने सैनिकों को हाथ उठाकर कुछ कहना चाह रहा था। इतने में एक बाण आकर अमीर की भुजा में घुस गया। उससे बेसुध होकर अमीर घोड़े से नीचे आ पड़ा।

तत्क्षण अफगान सरदारों ने अमीर को चारों ओर से घेर लिया। एक सरदार ने खींचकर तीर निकाल लिया और घाव पर पट्टी बांध दी। कुछ ही देर में अमीर होश में आया और तुरन्त घोड़े पर सवार होगर सैनिकों को उत्तेजित करने लगा। वह अपनी सेना के दक्षिण कक्ष से थोड़ा पीछे हटा। तत्क्षण दक्षिण कक्ष हटने लगा और उसके सैनिक बिखरने लगे। इसी समय उस कक्ष के दो प्रधान सेनानायक मारे गए। महाराज धर्मगजदेव ने यह संयोग पा स्वयं कक्ष को भारी दबाव में डाल दिया।अमीर यह देखकर तीर की भांति उधर दौड़ा। उसने वामकक्ष की दो टुकड़ियों को बुलाकर इस कक्ष को मजबूत किया। परन्तु इसी मसयच दक्षिण कक्ष के एक सरदार ने आकर कहा,'' हुजूर, फौज हिम्त पस्त हो रही है। बहुत नुकसान हो रहा है। किसी तरह लड़ाई रोकिए। '' अमीर ने कहा , '' लड़ाई रोकने का कोई चारा नहीं है। हमें शाम तक जैसे बने लड़ना ही होगा। '' अमीर ने अभी कठिनता से यह वाक्य कहा ही था कि गोफ से छूटा एक पत्थर उसकी छाती में आ लगा।

इसी क्षण उसके घोड़े की आंख में एक तीर घुस गया। घोड़ा चारों पैरों से उछला। अमीर घोड़े से फिर गिर पड़ा और मुंह से रक्त-वमन करने लगा। अफगान सरदार अमीर को घेर कर खड़े हो गए। उनके चारों ओर मार-काट मच रही थी। सरदार घबराए हुए थे। किन्तु अमीर कुछ क्षणों में स्वयं उठ खड़ा हुआ। उसने कहा,'' कुछ फिक्र नहीं, दूसरा घोड़ा लाओ। '' घोड़ा आते ही वह उछलकर घोड़े पर सवार हो गया। तीसरा पहर होते-होते मुसलमानों की सेना पीछे हटने लगी। राजपूतों ने अवसर देखकर शत्रु-सैन्य में घुसकर हाथोहाथ युद्ध करने की ठान ली। अमीर के सरदारों ने तत्क्षण युद्ध बंद करने की अमीर को सलाह दी, परन्तु अमीर ने नहीं माना। उसने कहा,'' जैसे भी हो, हमें सूर्यास्त तक लड़ना होगा। '' हिन्दू-सेना हर-हर महादेव करके यवन-सेना में घुस गई। यवन सेना की टुकड़ियां तितर-बितर होती गईं। उसकी व्यवस्था बिगड़ गई। राजपूत और मेर दोनों ने तीर-कमान छोड़ बर्छी-कटार और तलवारें चमकानीं शुरू कर दीं। अन्ततः अमीर एक भाला हाथ में लेकर शत्रुओं को ललकारता हुआ आगे बढ़ा। उसके साथ जूझ मरने वाले खूंखार बलूची पठारों का जबरदस्त दस्ता था। महाराज धर्मगजदेव ने यह देखा। वे सिंह की भांति घोड़ा उड़ाने हुए अमीर के सम्मुख जा धमके। उनके चारों ओर चौहार सरदारों और मांडलिक राजाओं का दल था। दोनों दलों में मुर्हूत भर के लिए तुमुल संग्राम छिड़ गया। इसी बीच अमीर और दो घाव खा गया। महाराज धर्मगजदेव भी घायल हो गए। संध्याकाल हो गया। पर इस युद्ध का विराम नहीं हुआ। इसी केन्द्र पर दोनों ओर के योद्धा सिमट-सिमट कर एकत्र होने लगे ओर कट-कट कर गिरने लगे। पश्चिम दिशा लाल हुई। फिर अन्धकार व्याप्त हुआ, पर मारा-मारी चलती ही रही। पठानों का दल घिर गया। अमीर को सरदारों ने फिर समझाया कि पीछे हटें, पर अमीर ने नहीं सुना। वह मतमत्त हाथी की भांति लड़ रहा था। महाराज धर्मगजदेव ने देखा कि यही समय है। उन्होंने संकेत किया और सांभर के ढुंढिराज अपनी बीस सहस्त्र नपवीन सैन्य लेकर बाज की भांति अमीर की सेना पर बगल से टूट पड़े। यह देख अमीर हताश हो घोड़े पर ही मूर्छित हो गया। उसके सरदारों ने तत्क्षण उसे हाथोहाथ उठा लिया। भारी मारकाट से निकालकर तलवारों की छाया में उसे पीछे हटा ले गए। अब निरुपाय उन्होंने सुलह का सफेद झंडा खड़ा कर दिया। युद्ध बंद हो गया। चुने हुए सरदार अमीर को पालकी में डालकर शिविर में ले गए। शेष सैनिक और सरदार राजपूतों के बंदी हुए। महाराज धर्मगजदेव विजय-वैजयंती फहराते हुए वापस फिरे।

कपट संधि

महाराज धर्मगजदेव ने उसी समय कुलदेवी शाकम्भरी के मंदिर में बलिपूजा-अर्चना की। नारियल फोड़ा।सभी सामन्त, मांडलिक और सरदारों ने जय-जयकार की। तदनन्तर घायलों की सेवा और मृत सैनिकों एवं बन्दियों की समुचित व्यवस्था करके महाराज ने रात्रि के पिछले पहर शस्त्र खोलकर विश्राम किया। घावों पर उपचार कराया। दूसरे दिन पहर,दिन चढ़े श्वेत पताका उड़ाते हुए अमीर के सन्धि-दूतों ने, महाराज धर्मगजदेव के दरबार में अति विनम्र भाषा में अमीर का सन्धि-प्रस्ताव उपस्थित किया। महाराज ने प्रेम और कृपापूर्वक दूतों का भरी सभा में स्वागत किया एवं सब सरदारों से परामर्श करके कहा,'' यदि अमीर स्वेच्छा से भारत-वर्ष छोड़कर स्वदेश लौट जाए फिर कभी भारत में आने की चेष्टा न करे, तो हम बिना किसी बाधा के उसे चला जाने देंगे। सब बन्दियों को भी मुक्त कर देंगे। हमारी अमीर से कोई शत्रुता नहीं है। अतः हम अकारण उससे युद्ध नहीं करना चाहते। '' सन्धि-दूतों ने अमीर की ओर से अत्यन्त कृतज्ञता और प्रसन्नता से यह प्रस्ताव स्वीकार किया। और वचन दिया कि यद्यपि अमीर बहुत घायल हैं,चलने-फिरने अैर यात्रा करने के योग्य नहीं हैं,परन्तु हम आज ही यहां से कूच कर देंगे।

सन्धि स्थापित हो गई। सन्धि-दूत वापस अमीर की सेवा में लौट गए। दोपहर दिर व्यतीत होते-होते अमीर का लश्कर पीछे हटने लगा। खेमे उखड़ने लगे। ऊंट लदने लगे। सारे लश्कर में लदा-लदी होने लगी। यह देश सन्तुष्ट हो महाराज धर्मगजदेव ने थोड़ी सेना साथ में रख, शेष सब सैन्य अजमेर को वापस भेज दी। विजयिनी सेना ने बाजे-गाजे से अजमेर में प्रवेश किया। यद्यपि राजपूतों के बीस हजार सैनिक खेत रहे थे, फिर भी विजय के मद में राजपूत सेना अत्यन्त उत्साहित थी। नगरवासियों ने सेना का हर्षनाद से स्वागत किया। नगर सजाया गया, रंग-बिरंगी पताकाएं राजमार्ग पर फहराने लगीं। लोग आनन्द-उत्सव मनाने लगे। किले,राजमहलों में गान,वाद्य,रोशनी,दीपावली की व्यवस्था हुई। राजकुल की स्त्रियों ने महारानी को बधइयां दीं। महारानी ने मुक्त-हस्त से स्वर्ण-रत्न दान करके अपनी उदारता का परिचय दिया। नगर के सभी देव-मन्दिरों में जय-घंट बजने लगे। राजपुरोहित कृपाशंकर आर्य ने राजमहल में आकर यज्ञानुष्ठान किया। नगर-सेठ पानाचन्द शाह ने आकर बधाइयां दीं। सम्पूर्ण नगर ने उस दिन दीपावली मनाई।

शाह मदार

एक प्रहर रात्रि बीत चुकी थी। सारा नगर रास-रंग में मस्त था। ऐसे ही समय में दो व्यक्ति छिपी नजरों से यह सब समारोह देखते अत्यन्त सावधानी से नगर के मुख्य बाजारों में होते हुए, बीच-बीच में गली-कूचों को पार करते हुए चुपचाप चले जा रहे थे। उन्होंने साधारण नागरिक का वेश धारण किया था। इस समय अजमेर नगर के पूर्वी कोण में जो शाह मदार की टेकरी है,उसी टेकरी की तलहटी में पुराना शिवालय था। शिवालय के चारों ओर बहुत छोटे-बड़े मन्दिर थे। मन्दिर का प्रवेश द्वार पूर्व दिशा में था और उत्तर में पुजारियों के घर थे। पुजारियों में अनेक वहां पुत्र-परिजन के साथ रहते थे। इन्हीं पुजारियों के मकानों से तनिक हटकर टेकरी के ऊपर एक छोटी-सी खानकाह थी जिसमें प्रसिद्ध सूफी सन्त शाह मदार रहते थे। शाह मदार मस्त और दौला-मौला आदमी थे। वे बेलौस और फक्कड़ प्रसिद्ध थे। खुशमिजाज और मिलनसार थे। अजमेर के आस-पास उनकी बहुत मान्यता थी। वे गंडे-ताबीज, मन्त्र-दुआ देते थे,लोगों की खैर मनाते और टिक्कड़ मांग कर खाते थे। खानकाह के पास एक पुराना मठ था, पर वह सूना ही रहता था। कोई भूला-भटका साधु वहां ठहर जाता था। शाह मदार बहुता किसी वृक्ष के नीचे चुपचाप बैठे रहते थे।

घूमते-फिरते ये दोनों व्यक्ति टेकरी के पास जा पहुंचे। शह साहेब इस समय ध्यान-मुद्रा में वृक्ष के नीचे बैठे थे। दो भक्तगण सम्मुख बैठे उनकी मुख-मुद्रा निहार रहे थे। दोनो व्यक्तियों ने हिन्दू पद्धति से धरती पर माथा टेककर उन्हें प्रणाम किया। परन्तु फकीन ने उनकी तरफ आंख उठाकर भी न देखा। दोनों व्यक्ति चुपचाप दूसरे मनुष्यों के बीच में जा बैठे। बहुत देर तक कोई बातचीत नहीं हुई। बैठे हुए जनों में अनेक उठकर चे गये। एकाएक साधु ने नेत्र उघारकर इन आगन्तुकों को देखा और आप-

ही-आप कुछ गुनगुनाते हुए कहा,'' अय नादान, खुदा की बन्दगी कर, और उसके जलाल का जहूर देख।'' दोनों आगन्तुकों ने पृथ्वी पर फिर माथा टेका। इसी समय एक पुरुष ने उनका कन्धा छूकर अपने पीछे आने का संकेत दिया। दोनों व्यक्ति उठकर उसके पीछे-पीछे चल दिये। वह आदमी मठ के द्वार पर खड़ा हो गया और उन्हें भीतर जाने का संकेत किया। दोनों व्यक्ति मठ में घुस गए और वह व्यक्ति मठ के द्वार पर इस तरह खड़ा हो गया कि एक मक्खी भी द्वार में प्रविष्ट न हो सके।

भीतर एक युवक बेचैनी से टहल रहा था। युवक के वस्त्र बहुमूल्य,तलवार कीमती, और मुखमुद्रा सुन्दर थी। उसकी आयु छब्बीस वर्ष के लगभग थी। रंग उसका गौर था और मस्तक की पगड़ी में एक मूल्यवान हीरा भी चमक रहा था।

दोनों व्यक्तियों ने हाथ जोड़कर युवक को प्रणाम किया और करबद्ध खड़े हो गए।

युवक ने उन्हें घूरकर देखा,फिर कहा,'' संकेत?''

'' सोमनाथ।''

''ठीक है ।कहो,क्या कहना है?''

'' सुल्तान को लाचार सुलह करनी पड़ी। वे जख्मी हुए और फौज बिलकुल बर्बाद हो गई।''

'' फिर?''

''सुलह की शर्त क अनुसार हमें आज ही छावनी उठाकर लौटना आवश्यक हो गया है,अमीर के सारे मनसूबे धूल में मिल गए।''

'' तो मैं क्या करूं?''

'' यदि वादे के अनुसार आपकी मदद मिलती तो ऐसा न होता।''

'' क्या छावनी उठा दी गई?''

'' जी हां। ''

'' अमीर घोड़े पर सवार होने योग्य हैं?''

'' सवार हो सकते हैं,लड़ नहीं सके।''

'' अमीर की सेना में कोई जीवट का सेनापति है?''

'' है।''

'' और अमीर का वादा?''

'' पक्का है।''

'' जामिन ?''

'' शाह मदार।''

'' उनके मुंह से सुनना चाहता हूं।''

'' चलिए।''

'' ठहरो, एक पहर रात रहते महाराज पर हमला कर दो। सिर्फ एक हजार पक्के सवार काफी हैं।''

'' वह हो जाएगा लेकिन....''

'' राजपूतों की सब सेना अजमेर जा चुकी है। मैंने उन्हें तीन दिन मौज-मजा करने की छुट्टी दे दी है। वे सब अपने-अपने गांवों को चले गए हैं। पुष्कर में महाराज के केवल अंगरक्षक ही उनके साथ हैं। ब्राह्म मुहूर्त में महाराज संध्या वंदन करते हैं, वही समय ठीक रहेगा। उन्हें घेर कर कैद कर लो, फिर जैसा जी चाहे,उनके साथ बर्ताव करो।''

'' लेकिन अजमेर से मदद मिलते कितनी देर लगेगी?''

'' अजमेर की सेना मेरे अधीन है। यदि अमीर का पक्का वादा है तो अजमेर से सहायता नहीं मिलेगी।''

'' वादा पक्का है, शाह जामिन हैं, चलिये।''

'' चलो।'' तीनों व्यक्ति शाह के पास आए। आकर चुपचाप बैठ गए। इस समय शह साहेब हकेले चुपचाप बैठे थे। युवक ने कहा, '' शाह जामिन हैं?''

शाह ने धीरे से कहा,'' खुदा भी जामिन है। ''

'' तब ठीक है।''

युवक शाह को प्रणाम कर चल दिया। उसके पीछे दोनों पुरुष भी। बाहर अश्व बंधे थे। अश्व पर सवार हो उन्होंने तेजी से पुष्कर की घाटी में अपने अश्व फेंक दिए। शाह ने आंखे उठाकर आसमान की ओर देखा और अंगड़ाई ली।

विश्वासघात

रात बहुत देर तक सैनिक खान-पान और रास रंग में मस्त रहे थे। इससे इस समय वे सब पड़े सो रहे थे। एक-दो प्रहरी अपने स्थानों पर सजग हो पहरा दे रहे थे। महाराज धर्मगजदेव प्रहर रात रहे पुष्कर-तट पर स्नान कर आह्निक पूजन कर रहे थे। पूजन करते-करते उन्हें कुछ असाधारण आहट सुनाई पड़ी,जैसे चुपचाप बहुत-से आदमी रेंगते हुए आ रहे हों। अभी चारों दिशाओं में अंधकार था। उन्होंने पूजा के आसन से उठे बिना उठे ही आंख उठाकर चारों ओर देखा। ऐसा प्रतीत हुआ कि बहुत सी काली-काली मूर्तियां चारों ओर से उनके निकट चलीं आ रहीं हैं। क्षण-भर बाद ही उन्हें प्रतीत हुआ कि विश्वासघात हुआ है। वे तत्क्षण ही आसन से छोड़कर उठ खड़े हुए। इसी समय प्रहरी ने भयसूचक भेरी-नाद किया। और उसके साथ ही '' अल्ला हो अकबर ''के गगनभेदी नाद क साथ अमीर के बलोची पठानों ने सोते-बैठे-उनींदे सभी राजपूतों को काटना प्रारम्भ कर दिया। साथ ही छावनी में भी आग लगा दी। छावनी धांय-धांय जलने लगी। महाराज उसी असज्जित अवस्था में पुकार-पुकार कर तलवार घुमाते हुए अपनी सेना की व्यवस्था करने लगे। उन्होंने तत्क्षण एक सवार अजमेर को सेना की सहायता के लिए दौड़ा दिया। राजपूत, जो जहां जिस अवस्था में थे, उनके हाथ जो अस्त्र लगा उसी को लेकर मोर्चा लेने लगे। परन्तु एक तो वे बहुत कम थे, दूसरे किसी के पास शस्त्र था ही नहीं,किसी ने कवच पहना था,कोई नंग-धड़ंग था। परन्तु थोड़ी ही देर में कुछ सैनिक सज्जित होकर महाराज के चारों ओर आ जुटे। शत्रुओं ने महाराज को ग्रास लिया था, और उन पर हजारों तलवारें छा रहीं थी। राजपूत प्राणप्रण से महाराज तक पहुंचकर उनकी रक्षा करने का भगीरथ प्रयत्न करने लगे। महाराज धर्मगजदेव नंगे बदन,पीताम्बर धारण किए दोनों हाथों से तलवार चला रहे थे और उनके शरीर से झर-झर रक्त बह रहा था। उनका वीर-दर्प देख शत्रु स्तम्भित रह गए। तलवार से तलवार भिड़ गई। बर्छियां अंतड़ियों को चीरने लगीं। महाराज क्षण-क्षण पर अजमेर की सहायता की प्रतीक्षा कर रहे थे। हर क्षण पर चर सूचना रहा था, सेना नहीं आ रही है। इसी समय जंगल में छिपे हुए एक हजार बलोची घुड़सवार बाज की तरह महाराज पर टूट पड़े। महाराज ने मस्तक ऊंचा करके देखा, मृत्यु उनका अंतिम आलिंगन करने को हाथ पसार रही है। '' जय शाकम्भरी '' कहकर वे अंधाधुंध तलवार चलाने लगे। देखते-ही-देखते मुट्ठी भर राजपूत कटने लगे। महाराज की तलवार भी एक पठार की तलवार से टकराकर दो टूक हो गई। उनके तीन उनके अंगों में अटक रहे थे। उन्होंने निरुपाय इधर-उधर देखा। एक दुर्दान्त पठान ने कमान गले में डालकर उन्हें खींच लिया। साथ ही तलवार का एक भरपूर हाथ उनके मोड़े पर पड़ा। महारा आकाश से टूटे नक्षत्र की भांति पृथ्वी पर गिर पड़े। शत्रुओं ने अल्ला हो अकबर का नारा बुलंद किया,जो राजपूत बचे थे, वहीं आ जूझे, वे सब तिल-तिल कर कटकर खेत रहे।

महाराज धर्मगजदेव के रणस्थली में काम आने का समाचार शीघ्र ही अजमेर पहुंच गया। महाराज के अंगरक्षकों ने महाराज का शव मुर्दों के ढेर से निकाल कर बड़े यत्न से किले में पहुंचा दिया। किले और नगर का उल्लास गहरे शोक की घनघोर घटाओं

में छिप गया। चारों तरफ रोना-पीटना मच गया। मरे हुए पुत्रों की माताएं छाती कूटने लगीं। विधवा युवतियों के करुण क्रन्दन से आकाश भर गया, अनगिनत कोमल कलाइयों की सुहाग-चूडियां चटापट पत्थरों पर टूटने लगीं। पिता अपने पुत्रों के लिए सिर धुनते पागल की भांति रुदन करने लगे। युवत अबलाएं और अबोध बालक अनाथ होकर सिसकने लगे। लोग हजार-हजार मुख से गजनी के दैत्य को गालियां देने और कोसने लगे। लाखों मनुष्यों का धरती-आकाश पर कोई रक्षक न रह गया।

महाराज धर्मगजदेव के शव के किले में पहुंचते ही महारानी तुरन्त सती होने को तैयार हो गईं। उनके साथ महल की अन्य सैकड़ों राज-परिवार की स्त्रियों,दासियों और सखियों ने भी चितारोहण कर भस्म होने का निश्चय कर लिया। रानी ने शोक-संतप्त वाणी से कहा, '' अरी हो सखियों, सुख-दुख का साथी, लाड़-प्यार करने वाला, इस देह का आधार जब नहीं रहा, तो फिर जीकर, जीवन की ख्वारी करने से क्या? जब शरीर से जीव ही चला गया तो निर्जीव शरीर का श्रृंगार ही क्या? क्या हम प्रिय पति का वियोग सहकर, विधवा वेश धारण करके जीवित रहेंगी? क्यों न हम स्वर्ग का अक्षय सुख भोगें, जहां हमारे प्राण-प्यारे वीर पति प्रथम ही पहुंच चुके हैं। चलो सखियों, हम वीर पति का सहगमन करें, जितना विलम्ब होता है उतना ही अन्तर पड़ता है। शोक त्यागो, अग्नि रथ पर बैठकर पतिलोक को चलो।''

रानी ने इतना कह आंसू पोछ डाले। माथे पर ईंगुर का टीका किया, कुंकुम की आड़ लगाई, कंठ में सुगन्धित फूलों के हार पहने। काले चिकने बालों की लटें मुक्त कर दीं, हाथों में मेंहदी रचा दी। पचरंगी चुनरी शरीर पर धारण की। अन्य स्त्रियों ने भी ऐसा श्रृंगार किया। आगे-आगे रानी और पीछे-पीछे अन्य स्त्रियां चलीं। पीछे हजारों दास-परिजन रोते हुए। जय शकम्भरी,जय अम्बे,जय सती माता की पुकार ने आकाश को चल-विचलित कर दिया।

चौक में चबूतरे पर विशाल चिता सजी थी। उसमें महाराज का चन्दन-चर्चित शरीर स्थापित किया गया। चिता के निकट आकर रानी ने सूर्य को अर्घ्य दिया और स्थिर चरणों से चितारोहण कर पति का सिर गोद में लिया तथा ध्यान में स्थिर होकर बैठ गईं। ढोल,शहनाई बजने लगे। उनका ऐसा नाद हुआ कि कानोकान शब्द नहीं सुनाई देता था। सहस्त्रो कंठों से '' जय माता सती,जय अम्बे ''की ध्वनि निकली। रानी दोनों नेत्र बन्द कर पति का सिर गोद में लिए ध्यानस्थ बैठीं थीं। अन्य स्त्रियां भी उनके पीछे चिता पर उसी भांति बैठीं थीं। राज पुरोहित आचार्य कृपाशंकर आर्य ने रुदन करते हुए बालक कुमार बीसलदेव को आगे कर कहा,'' माता सती, अजमेर और अजमेर के भावी अधिपति को आशीर्वाद दीजिये।'' रानी ने स्थिर कंठ से हाथ उठाकर कहा,'' अजमेर के निवासियों और भावी अजमेर के अधिपति की जय हो।'' रानी ने अब चिता में अग्नि देने का संकेत किया। ब्राह्मणों ने चिता में घृत और कपूर रख मन्त्रपाठ करते हुए अग्नि दी। बाजे जोरों से बज उठे। सैकड़ों शंख और घड़ियाल बजने लगे। सूखा चन्दन,काष्ठ घी और ज्वलनशील पदार्थों की सहायता से यह चिता देखते-देखते धधकने लगी। ज्वाला का वेग इतना बढ़ा कि चिता के पास से लोग हटने लगे। परन्तु राज भक्त सेवक और दासियां भी दौड़-दौड़कर चिता में कूद पड़ीं। सहस्त्रों जनों के जय-जयकार,रुदन, क्रन्दन और बाजों के घोर शब्दों के कारण कानों के पर्दे फटे जा रहे थे। बहुत जन मूर्च्छित होकर गिर गए। देखते-ही देखते वे सैकड़ों सत्व जलकर राख का ढेर हो गए। चिता के लाल-लाल दहकते हुए अंगारे मानो क्षात्र तेज के सूर्य के तेज की स्पर्धा- सी करने लगे। जार-जार रोते,दाढ़ी नोचत,सिपर पर धूल-राख बखेरते, गिरते-पड़ते नगर-निवासी पीछे लौटे। नगर के कोटपाल ने शोकसूचक झंडा किले पर चढ़ा दिया। उस दिन सम्पूर्ण नगरी में चूल्हा नहीं जला। रात में किसी ने दियाबत्ती भी नहीं किया। सारा नगर गहरे अंधकार में डूबा रह गया। अजमेर के आबाल-वृद्ध भूखे प्यासे धरती में लोट-लोट कर रुदन करते रहे। राजकुमार वीसलदेव,अवशिष्ट राज परिवार को ले वीटली दुर्ग में चले गए। अजमेर में सती माताओं की ऊर्ध्व दैहिक-क्रिया करने को केवल राज-पुरोहित कृपाशंकर आचार्य और कुछ सेवक रह गए।

अजमेर की तबाही

अमीर की सेना ने चढ़ी रकाब अजमेर पर धसारा किया। बलोची पठान और दुर्दान्त तुर्क सवार धड़धड़ाते हुए नगर में घुस गए। सूर्योदय के साथ ही नगर में कत्लेआम,लूटमार और बलात्कार का नग्न तांडव होने लगा। दुख,शोक और विनाश की चपेट में अजमेर के नागरिक स्त्री-पुरुष,बालक-वृद्ध, रोगी सब जिधर जिसका सींग समाया, गिरते-पड़ते प्राण लेकर भागने लगे। यह देख मसऊद एक सैनिक टुकड़ी लेकर किले और राजमहल पर जा धमका। महल के रक्षकों ने महल में आग लगा दी। आग-आग-आग चारों तरफ आग-ही-आग धांय-धांय जलने लगी। राजमहल के बड़े-बड़े धन कड़ककर टूटने और राजकक्ष जलकर धराशायी होने लगे। करोड़ों रुपयों की मूल्यवान सामग्री जलकर राख हो गई। सब धन-रत्न स्वाहा हो गया। माल और मालिक की राख एक हो गई। खीझकर मसऊद नगर की ओर फिरा। वहां बलोची सवारों ने नरक का दृश्य उपस्थित कर रखा था। मसऊद ने प्रत्येक नागरिक से धन लूटना आरम्भ कर दिया। बलोची दैत्य मार-मारकर धन कहां छिपा रखा है, पूछने लगे। न बताने पर नर-नारियों पर अकथ्य अत्याचार होने लगे। किसी की आबरू सलामत न रही। अन्त में मसऊद ने सम्पूर्ण नगर को आग की भेंट कर दिया। धांय-धांय जलते अजमेर नगर को लूटकर मसऊद ने सेना को नगर खाली करने की आज्ञा दी और स्वयं शाह मदार की खानकाह में जाकर शाह को सिजदा किया। शाह नीरव,स्तब्ध,चुपचाप बैठा था। आज उसके पास एक भी व्यक्ति न था। वह अकेला था। उसने आंख उठाकर मसऊद की ओर नहीं देखा। मसऊद ने उसके सामने दुजान बैठकर कहा,'' हजरत, अमीर गजनी शाह की दुआ चाहते हैं और हुक्म भी।''

'' दुआ देता हूं, लेकिन हुक्म खुदा का,जाओ। ''

मसऊद ने अधिक बात करने का साहस नहीं किया। वह वहां से चल दिया। राह-बाट में एक भी पुरुष जीवित न था। नगर चारों ओर से धांय-धांय जल रहा था। लाशों पर लाशें पटी पड़ीं थीं। घरों से चीत्कार और क्रन्दन-ध्वनि आ रही थी। मसऊद अपने बहुमूल्य अरबी घोड़े पर सवार चुपचाप बढ़ा चला जा रहा था। उसकी जड़ाऊ तलवार के रत्न धूम में चमक रहे थे।

पुरस्कार

अजमेर को लूट और आग की भेंट कर अमीर ने वीटली दुर्ग पर धावा करने का इरादा किया। उसे सूचना मिली थी कि वीटली दुर्ग में राजा का शेष परिवार, राजपुत्र,अटूट राजकोष तथा बहुत सी धन

सामग्री है। परन्तु वीटली दुर्ग साधारण दुर्ग न था। वह एक दुर्गम और ऊंची पहाड़ी पर था। उसकी तीन दिशाओं में सीधी दुरूह पर्वत की चट्टानें और एक दिशा में अगम खंड था। दुर्ग की प्राचीन बाईस हाथ ऊंची और ग्यारह हाथ चौड़ी थी। दुर्ग में रक्षा और खान-पान का प्रभूत साधन एकत्र थे। दुर्ग भंग करना असंभव था और दस वर्ष घेरा डालने पर भी दुर्ग तबाह हो, यह सम्भव न था।

उधर अमीर की सेना को भी इस युद्ध में कम क्षति नहीं हुई थी। गजनी से चलकर उसे पहली ही बड़ी लड़ाई लड़नी पड़ी थी। इसमें वह स्वयं घायल हो गया था। साथ ही उसके बहुत से साहसी सैनिक खेत रहे थे। बहुत से घोड़े मारे गए थे। उसकी सेना ही खंडित हो गई थी। इससे वह खीझ रहा था। उसे विश्राम की अत्यन्त आवश्यकता थी। पर उसे सोमनाथ पहुंचने की जल्दी थी। उसे यह भी भ्य था कि कचाचित ढुंढिराज सांभरपति उस पर पीछे से न टूट पड़े। दूतों के द्वारा उसे मालूम हो गया था कि अजमेरपति की बहुत सेना अभी भी है। वीटली दुर्ग में भी यथेष्ट सेना थी। चारों ओर से सैनिक एकत्र हो चले आ रहे थे। लोगों में क्रोध और जूझ मरने के भाव भरे हुए थे। इससे उसने अपने सरदारों और सेनापतियों का एक छोटा सा दरबार किया। सब विषयों पर विचार-परामर्शन कर तुरन्त गुजरात की ओर कूच करने का विचार स्थिर किया। तुरन्त अभी उसे एक महत्वपूर्ण काम और करना था, वह था विश्वासघाती को पुरस्कृत करना जिसकी सहायता से उसकी विजय पराजय में बदल गई थी। यह अजमेरपति का मन्त्रिपुत्र सोढल था, जिस पर राजा का पुत्रवत प्यार और विश्वास था, और जिसे राजा ने आठ हजार सवार और पन्द्रह हजार पैदल देकर अजमेर की रक्षा सौंपी थी। अमीर ने उसे अपने सम्मुख उपस्थित करने की आज्ञा दी। सामने आकर युवक ने अमीर को कोर्निश की। अमीर ने पूछा,'' तुम्हीं वह आदमी हो,जिसने हमें अजमेर के वीर महाराज के सब भेद दिए?''

'' मैं ही वह आदमी हूं।''

'' तुम अजमेर के महाराज के मन्त्रीपुत्र और उपसेनापति हो?''

'' जी हां।''

'' अजमेर के महाराज ने तुम्हारे साथ कभी कोई बदी की थी?''

'' नहीं।''

'' अजमेर के महाराज से उनकी रिआया क्या खुश नहीं थी?''

'' खुश थी।''

'' तुम्हारे पिता अजमेर के वजीर क्या यह जानत हैं कि तुमने अपने मालिक से दगा की है?''

'' नहीं।''

'' कोई और जानता है?''

'' नहीं।''

'' तुमने यह काम क्या इसलिए किया था कि तुम अजमेर की गददी पाओगे?''

'' इसीलिए।''

'' कोई और कारण नहीं था?''

'' और भी कारण था।''

'' वह कहो।''

'' महाराज की एक पुत्री थी।''

''फिर?''

'' मैं उससे प्यार करता था।''

'' समझा।''

'' उसने मेरा प्रेम अस्वीकार किया था।''

'' क्यों?''

'' उसने कहा था कि कि तुम न कहीं के राजा ओ, न तुम्हारी वीरता ही देखी गई है।''

'' ठीक है, तो तुमने वीरता दिखाकर नहीं, सिफ राजा होकर उसे पाना चाहा।''

'' जी हां।''

'' हम जानते हैं कि तुम्हारी मदद न मिलने पर हम इस लड़ाई को नहीं जीत सकते थे।''

'' अब मुझे वादे के अनुसार अजमेर की गद्दी मिलनी चाहिए।''

'' अजमेर के महाराज का कोई वारिस है?''

'' है।''

'' उसके पास काफी फौज है?''

'' राजा होने पर वह यदि तुमसे लड़े?''

'' तो आप अपनी सेना से मेरी मदद करें, मैं आपको खिराज दूंगा।''

'' यह तो हमने वादा नहीं किया था।''

'' यशस्वी अमीर ने वादा किया था कि यदि मेरी मदद से अमीर जीत जाएंगे, तो मुझे अजमेर की गददी देंगे।''

'' लेकिन यह वादा नहीं किया था कि इसके लिए अजमेर के राजा के उत्तराधिकारी से भी लडेंगे।

'' मैंने अपन वादा पूरा कर दिया।''

'' अब वह लड़की तुम्हारे राजा होने पर तुमसे शादी कर लेगी?''

'' अफसोस! नहीं।''

''क्यों? ''

'' वह रानी मां के साथ जल मरी।''

'' क्या वह जानती थी कि इस प्रकार राजा होने की तैयारी कर रहे हो?''

'' नहीं, पर मैंने कहा कि मैं राजा होकर तुम्हें दिखाऊंगा।''

'' वह क्या तुम्हें प्यार करती थी?''

'' नहीं।''

'' किसी और को प्यार करती थी?''

'' ढुंढिराज सांभरपति के पाटवी कुंवर को।''

'' पाटवी कुंवर कहां है?''

'' लड़ाई में काम आए।''

कुछ देर तक अमीर गम्भीर मुद्रा में सोचता रहा। फिर उसने आस्ति से कहा-'' तो अपने वायदे के मुताबिक हम तुम्हें अजमेर का राजा मंजूर करते हैं। ''

'' खुदाबन्द अमीर की जय हो।''

'' लेकिन तुमने अपने मालिक से दगा की है, इसलिए हम तुम्हें अजमेर के राजा के उत्तराधिकारी के सुपुर्द करते हैं और तुम्हारी कारगुजारी से भी उसे आगाह किए देते हैं।''

'' यह कैसी बात?''

'' यह बादशाहों और राजाओं की बात है। गुलाम,दगाखोर और कमीने लोग उसे नहीं समझ सकते हैं। ''

'' अमीर ने मीर मुंशी को हुक्म दिया,'' इस आदमी की तमाम हकीकत लिखकर, इसे हथकड़ियों और बेड़ियों में जकड़कर राजपूतों के सुपुर्द कर दी।'' मीर मुंशी ने अदब से अमीर का हुक्म स्वीकार किया। सोढल का मुंह काला पड़ गया। एक बार साहस करकेक उसने फिर अमीर को वायदे की याद दिलाई। दया की प्रार्थना की। पर अमीर ने घृणा से मुंह सिकोड़कर कहा,'' अजमेर के नए महाराज, हमने अपना वचन पूरा कर दिया। तुम्हें मंजूर कर लिया। इसी से तुम्हें कत्ल करने का हुक्म न देकर राजपूतों के सुपुर्द करते हैं। हमारी मदद का इनाम तुम्हें मिल गया। अब अपने मालिक से दगा करने की सजा तुम्हें उनसे पानी है।''

इतना कहकर अमीर ने उसे अपने सामने से हटाने का संकेत किया और तत्काल वहां से कूच करने की आज्ञा दी।

हिन्दू संस्कृति विश्व में सर्वश्रेष्ठ व सर्वमान्य

अशोक कौशिक

हिन्दू संस्कृति विश्व में सर्वश्रेष्ठ व सर्वमान्य तो है ही, ये सनातन होने से सर्व ग्राही है। हमारी संस्कृति पूरे संसार को अपना परिवार का हिस्सा मानती है। इसलिये संस्कृत में कहा भी गया है कि 'वासुदेव कुटुम्भकम।' यानि हमारी संस्कृति में सभी को समा लेनी की क्षमता है। हिन्दू संस्कृति का दर्शन बहुत स्पष्ठ और व्यापक है। उदारवादी विचारधारा हमारी संस्कृति को और समृद्ध करती है। हिन्दू संस्कृति का कई सानी नहीं है। सनातन धर्म प्राचीन काल से लेकर अब तक सच्चाई व सत्य के मार्ग पर अडिग होकर धर्म पालन करने की सीख देता रहा है। इसके अनुयायी सत्य मार्ग पर चलकर अपना जीवन तो सफल करते ही है, दूसरों के लिये प्रेरणा स्त्रोत भी बनते हैं।

हमारी संस्कृति को पूरी दुनिया के दार्शनिकों व विद्वानों ने खुले दिल से स्वीकार किया है। हम कुछ विश्व प्रसिद्ध दार्शनिकों के विचारों को उनके ही शब्दों में प्रस्तुत कर रहे हैं।

लियो टॉल्स्टॉय (1828 -1910) ने हिन्दू संस्कृति के बारे में कहा था, 'हिन्दू और हिन्दुत्व ही एक दिन दुनिया पर राज करेगी, क्योंकि इसी में ज्ञान और बुद्धि का संयोजन है'

हर्बर्ट वेल्स (1846 - 1946) का कहना था कि, 'हिन्दुत्व का प्रभावीकरण फिर होने तक अनगिनत कितनी पीढ़ियां अत्याचार सहेंगी और जीवन कट जाएग। तभी एक दिन पूरी दुनिया उसकी ओर आकर्षित हो जाएगी, उसी दिन ही दिलशाद होंगे और उसी दिन दुनिया आबाद होगी। सलाम हो उस दिन को'।

वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन (1879 - 1955) का मनना था, 'मैं समझता हूँ कि हिन्दूओ ने अपनी बुद्धि और जागरूकता के माध्यम से वह किया जो यहूदी न कर सके । हिन्दुत्व में ही वह शक्ति है जिससे शांति स्थापित हो सकती है'।

हस्टन स्मिथ (1919) कहते है, 'जो विश्वास हम पर है और इस हम से बेहतर कुछ भी दुनिया में है तो वो हिन्दुत्व है । अगर हम अपना दिल और दिमाग इसके लिए खोलें तो उसमें हमारी ही भलाई होगी'।

इनके अलावा माइकल नोस्टरैडैमस (1503 - 1566) ने कई सो वर्ष पहले ही हिन्दू संस्कृति से प्रभावित होकर कहा था, 'हिन्दुत्व ही यूरोप में शासक धर्म बन जाएगा बल्कि यूरोप का प्रसिद्ध शहर हिन्दू राजधानी बन जाएगा।

इसी तरह बर्टरेंड रसेल (1872 - 1970) का मत था, 'मैंने हिन्दुत्व को पढ़ा और जान लिया कि यह सारी दुनिया और सारी मानवता का धर्म बनने के लिए है। हिन्दुत्व पूरे यूरोप में फैल जाएगा और यूरोप में हिन्दुत्व के बड़े विचारक सामने आएंगे । एक दिन ऐसा आएगा कि हिन्दू ही दुनिया की वास्तविक उत्तेजना होगा'।

गोस्टा लोबोन (1841 - 1931) मानते थे कि 'हिन्दू ही सुलह और सुधार की बात करता है। सुधार ही के विश्वास की सराहना में ईसाइयों को आमंत्रित करता हूँ'।

सुप्रसिद्ध लेखक बरनार्ड शा (1856-1950) ने कहा था कि 'सारी दुनिया एक दिन हिन्दू धर्म स्वीकार कर लेगी। अगर यह वास्तविक नाम स्वीकार नहीं भी कर सकी तो रूपक नाम से ही स्वीकार कर लेगी। पश्चिम एक दिन हिन्दुत्व स्वीकार कर लेगा और हिन्दू ही दुनिया में पढ़े लिखे लोगों का धर्म होगा'। वही जोहान गीथ (1749 -1832) ने हिन्दू धर्म से प्रभावित होकर कहा था, 'हम सभी को अभी या बाद मे हिन्दू धर्म स्वीकार करना ही होगा। यही असली धर्म है। मुझे कोई हिन्दू कहे तो मुझे बुरा नहीं लगेगा, मैं यह सही बात को स्वीकार करता हूँ।'

इन सभी कथनों से साफ है कि हमारी संस्कृति का कोई तोड़ नहीं है। हम सभी को गर्व है कि हम अपनी संस्कृति का हिस्सा हैं और मुझे भारतीय होने पर गर्व है।

जगदम्बा महाकाली डासना वाली के प्रतिनिधि के रूप में छोटे नरसिंघानंद (अनिल यादव) जी ने श्री मुकेश त्यागी, डॉ जीतेन्द्र तोमर के साथ जाकर माँ की पत्रिका सूर्या बुलेटिन उत्तर प्रदेश सरकार के राज्य मंत्री श्री अतुल गर्ग जी तथा उनके प्रतिनिधि राजेंद्र मेदिवाले जी को भेंट की तथा मंदिर से संचालित होने वाली पत्रिका के उद्देश्य के बारे में बताया।

जगदम्बा महाकाली डासना वाली के प्रतिनिधि के रूप में छोटे नरसिंघानंद (अनिल यादव) जी ने डॉ आर के तोमर, श्री अक्षय त्यागी, श्री मुकेश त्यागी, डॉ जीतेन्द्र तोमर और उमेश फौजी के साथ जाकर माँ की पत्रिका सूर्या बुलेटिन गाजियाबाद के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री वैभव कृष्ण जी तथा अन्य अधिकारियो को भेंट की तथा मंदिर से संचालित होने वाली पत्रिका के उद्देश्य के बारे में बताया।

महिला सशक्तिकरण के नाम पर महिलाओं द्वारा कानून का दुर उपयोग बहुत ही दुखद

संजू चौधरी (रोरी)
राष्ट्रीय प्रचार मंत्री, धर्म रक्षक वीरांगना सेना

महिलाओं को दहेज उत्पीड़न से बचाने के लिए सरकार ने दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961 में बनाया इस कानून से दहेज तो आजतक बंद नहीं हुआ। लेकिन इस कानून से हिन्दूओं के परिवार टूट कर बिखरने लगे हैं। दहेज आजकल किस तरह से चल रहा है इसका पता चलता है जब किसी कअर या कद्दर अधिकारीयो या इस स्तर के बड़े अधिकारियों की शादी समारोह में शामिल होने का अवसर मिलता है। जब सरकारी बड़े अधिकारियों के शादी विवाह समारोह होते हैं तो एक दो करोड़ रूपए में निपटते हैं । इसी तरह जब प्रदेश सरकारों के अधिकारियों की शादी होती है । तो उनमें भी 50 लाख से एक करोड तक का खर्च होता है। आज कल तो सब इंस्पेक्टर व इस स्तर के अधिकारियों की शादी भी 30 से 40 लाख रुपए में होती है । चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के शादी विवाह भी 9 - 10 लाख रुपए में होते हैं।

अब बात करते हैं महानगरों के धंधा सेठों के शादी विवाह के समारोह की इनकी शादी तो पांच सितारा होटलों में या बहुत आलिशान फार्म-हाउस में होती है जिनका खर्च सुनकर आम आदमी के पेरो तले से जमीन निकले लगती है। इन शादी विवाहओ में बड़े स्तर पर दहेज भी चलता है ।

दहेज की सबसे अधिक मांग भी महिलाओं की तरफ से रहतीं हैं । पुरूष घर आयी वधू को कभी भी दहेज के लिए ताने नहीं मारते घर की महिलाएं ही दहेज को लेकर नयी वधू को उल्हाने देती है या कोमेंट करती है । इस दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961से पहले दहेज बहुत ही कम चलन में था । लेकिन आजकल दहेज प्रथा और बढ़ गई है और जो जितना बड़ा धनवान होगा उतना अधिक दहेज का लेन-देन करेंगा। जब शादी विवाह होता है तब कोई शिकायत नहीं करता है कि हमसे दहेज मांगा जा रहा है तब तो सभी कहते हैं हम अपनी बेटी को इतना दहेज दे रहे हैं ये उसका हक है और अपने सभी परिचितों को बुला बुला कर दहेज के सामान को देखते हैं।

लेकिन मेरी पीड़ा ये है जब लड़की की अपनी सुसराल वालों से कुछ थोड़ी सी भी कहा सुनी हो जाती है तो वह पुरे परिवार को दहेज के मुकदमे में फंसाकर जेल भिजवाने की धमकी देने लगती है। इस तरह परिवार के टुटने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। ओर एक दिन किसी छोटी सी बात पर नाराज हो कर वधू पुरे परिवार के खिलाफ दहेज उतपिडन का मुकदमा दर्ज कर देती है। और दुःख की बात तो यह है की इस मुकदमे में लड़के पक्ष के दादा व दादी को भी मुलजिम बना दिया जाता है जो अपनी अंतिम सांस गिन रहे होते हैं। लड़के की बहन का भी नाम लिखवा दिया जाता है जो बहुत दूर अपने घर पर रहती है । जिसका साल दो साल में एक बार ही आना होता है । एक मुकदमे में तो लड़के की उस बहन का भी नाम लिखवा दिया था

जो 10 साल से विदेश में रह रही थी। कभी कभी तो वधू पक्ष लड़के के भाईयों का भी नाम लिखवा देते हैं जो वर्षों से किसी दूसरे शहर में अलग रह रहे होते हैं। थोड़ी बहुत यदि केस में कमी रह जाती है तो उस वकील साहब पूरा कर देते हैं और दहेज के सामान व बारातियों के खाने पीने का खर्च चार गुना लिखवा देते हैं। वकील साहब कहते हैं ज्यादा से ज्यादा रकम लिखवाओ तभी तो लड़के कुछ कम करके देंगे और इस तरह से दोनों अच्छे खासे परिवार बबार्दी के कगार पर पहुंच जाते हैं।

अब जो दहेज प्रतिषेध अधिनियम में संशोधन हुआ है वह इस लिए हुआ है क्योंकि इस में जजों के परिवार वाले बड़े राजनेताओ के परिवार वाले फंसने लगे थे तब उन्होंने एहसास हुआ कि इस कानून का दुर उपयोग हों रहा है।

मै दहेज विरोधी नहीं हूं। और नहीं दहेज के पक्ष में हूं। लेकिन आजकल समाज जो दहेज के नाम पर जो दिखावा हों रहा है मैं इसका विरोध करती हूं। दहेज में दि जाने वाली गाड़ी को सजा-

अब बात करते हैं महानगरों के धंधा सेठों के शादी विवाह के समारोह की इनकी शादी तो पांच सितारा होटलों में या बहुत आलिशान फार्म–हाउस में होती है जिनका खर्च सुनकर आम आदमी के पेरो तले से जमीन निकले लगती है।

धजा के विवाह मंडप के गेट पर खड़ा किया जाता है। और समाज को दिखाया जाता है कि हमने ये गाड़ी दि है और लडके वाले बोलते हैं हम दहेज में इतनी सुन्दर वह बड़ी गाड़ी मिली है। आज कल जो शादी विवाह फार्म हाउस व होटलों में होने लगें हैं। ये भी बहुत गलत है। जितने पैसों में ये फार्म हाउस व केटरिंग होती है इतने पैसों में तो गांव में पुरी शादी हो जाती है। आज से 15 साल पहले गांव में ही शादी विवाह होते थे। कोई जानता ही नहीं था विवाह मंडप व फार्म हाउस को शादी के दिन पुरे गांव में हर्षोल्लास रहता था। घेरों व बागों में बारात रुकती थी। पुरा गांव अपनी बहन बेटी समझकर सहयोग करता था।

शहरों में भी पहले शादी विवाह मंदिरों व धर्मशालाओं में होते थे। जो बहुत कम खर्च में हो जातें थे। लेकिन आजकल के दिखावें के चक्कर में व झूठी शानो-शौकत मे हिन्दूओ ने शादी विवाह के समारोह को इतना खचार्ला बना दिया है कि जवान लड़की के पिता को रात में नींद ही नहीं आती है। यदि किसी को देना है तो चुपचाप अपनी बेटी के खाते में जमा करा दो या अपनी बेटी को सुंदर सा मकान रजिस्ट्री कर दो। पर दिखावें के चक्कर में अपनी मेहनत की कमाई बरबाद मत करो। मेरा सभी महिलाओं से निवेदन है शादी समारोह में दिखावें के खर्च का विरोध करे और दहेज के झूठे मुकदमे लिखवाना बंद करें। झूठे मुकदमे मे महिलाओं को कोर्ट कचहरी के चक्कर लगाने के अलावा कुछ नहीं मिलता है।

देवबन्द जमीयते उलमा-ए-हिन्द की भारत में आई.एस. की आधिकारिक घोषणा

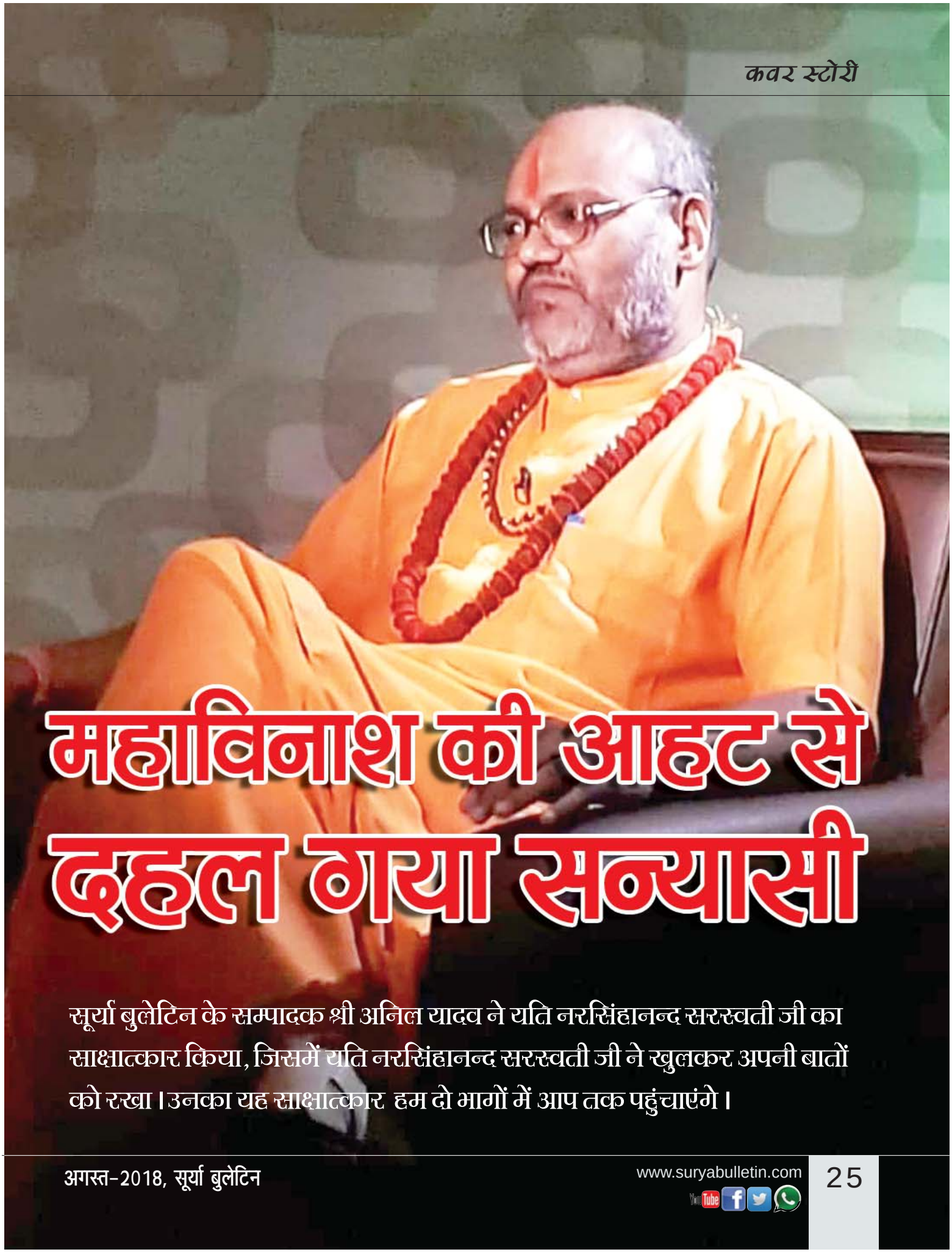

महाविनाश की आहट से दहल गया सन्यासी

सूर्या बुलेटिन के सम्पादक श्री अनिल यादव ने यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी का साक्षात्कार किया, जिसमें यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी ने खुलकर अपनी बातों को रखा। उनका यह साक्षात्कार हम दो भागों में आप तक पहुंचाएंगे।

अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजग यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज सदैव विवादों के केन्द्र में रहते हैं। वो भारतवर्ष के ऐसे एकमात्र संत हैं जो सनातन धर्म के समाप्त होने की भविष्यवाणी करत हैं जबकि भारतवर्ष के सभी सत इस बात पर एकमत हैं कि सनातन धर्म अनादि है और ये कभी समाप्त हो ही नहीं सकता। अभी उन्होंने एक राष्ट्रीय चैनल पर कहा कि देवबंद से 90 करोड़ हिन्दुओं के कत्ल का रोडमैप जारी हो चुका है जिस पर कोई भी ध्यान नहीं दे रहा है। स्वामी जी को लगता है कि उनकी बात को गंभीरता से लिया जाना चाहिये, जबकि हम अच्छी तरह से जानते हैं कि कुछ सिरफिरे नौजवानों को छोड़कर कोई भी स्वामी जी की बातों को इस देश में गंभीरता से नहीं लेता। लेकिन हमने सूर्या बुलेटिन की तरफ से उनके पक्ष को जानने और उसे जनता के सामने रखने का प्रयास किया। सूर्या बुलेटिन के सम्पादक श्री अनिल यादव ने यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी का साक्षात्कार किया, जिसमें यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी ने खुलकर अपनी बातों को रखा। उनका यह साक्षात्कार हम दो भागों में आप तक पहुंचाएंगे।

सूर्या बुलेटिन-स्वामी जी, आपने अभी एक चैनल पर कहा कि इस देश के 90 करोड़ हिन्दुओं की हत्या का रोडमैप तैयार कर लिया गया है। ये आपको क्यों लगता है?

स्वामी जी-देखिये, अभी देवबंद के मौलाना महमूद मदनी ने मुस्लिम युवाओं के एक जत्थे को सबके सामने प्रस्तुत करके ये घोषणा की कि वो दस साल में सवा करोड़ मुस्लिम युवाओं की एक फौज खड़ी करेंगे जो आरएसएस की तर्ज पर कार्य करेगी। यह खबर 26 जुलाई के नवभारत टाइम्स में प्रकाशित भी हुई है और कुछ समाचार चैनलों ने इसे दिखाया भी है। ये सब अचानक नहीं हुआ है। इसे समझने के लिए हमें वैश्विक इस्लामिक जिहाद के परिप्रेक्ष्य में देवबंद की स्थिति को ठीक से समझना पड़ेगा। पूरी दुनिया को विनाश के कगार पर ाकर खड़ा कर देने वाली बहाबी इस्लामिक विचारधारा का सबसे बड़ा विचार औरप्रचार केन्द्र है देवबन्द। एक तरह से वो पुरी दुनिया में इस्लामिक जिहादी आतंकवाद विशेषकर सुननी जिहादी आतंकवाद के गुरु और आका हैं। मुख्य रूप से सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों के धन और सरंक्षण से उन्होंने कई देशों को बर्बाद करके रख दिया है। उनकी विचारधारा का घोषित लक्ष्य विश्व के अन्तिम काफिर अर्थात गैर मुस्लिम के कत्ल तक जिहाद करना है। तालिबान,अलकायदा,आई.एस. जैसे संगठनों को इन्होंने ही खड़ा किया है। आज जो संगठन इन्होंने खड़ा किया हे, उसे भी आप आई.एस ही मानिये।

सूर्या बुलेटिन-स्वामी जी क्या भारत जैसे विशाल और लोकतान्त्रिक देश में आईएस का होना संभव है? जैसा कि आप बता रहे हैं कि 90 करोड़ हिन्दुओं के कत्लेआम का रोडमैप तैयार हुआ है, मेरा प्रश्न है आपसे कि क्या ये संभव है?

स्वामी जी-आप शायद किसी गलतफहमी में जी रहे हैं। आई.एस. के कर्ताधर्ताओं ने कई साल पहले ही ये योजना बना ली थी कि वो 2020 तक भारत पर कब्जा कर लेंगे और यहां कब्जा करके वो यहां के संसाधनों और यहां के जिहादियों के बूते पर अमेरिका और यूरोप से लड़ेंगे और जीतेंगे। उनकी योजनाओं में भारत पर कब्जा करना इसलिए आया क्योंकि वो जानते हैं कि वोट बैंक के लालची भेड़िये यहां के लोकतन्त्र पर कब्जा किये बैठे हैं जो किसी भी तरह से उनका प्रतिरोध करने में सक्षम नहीं हैं। जहां तक बात आई.एस के होने की है तो वो भारत में पहले से ही मौजूद है।

सूर्या बुलेटिन-कैसे? स्वामी जी आप जरा विस्तार से समझाइये कि आई.एस. भारत में कहां-कहां और कैसे मौजूद है?

स्वामी जी- सबसे पहले तो आप यह समझिये कि आई.एस. है क्या? आई.एस. का अर्थ है इस्लामिक स्टेट अर्थात एक खलीफा का शासन जो कुरआन और हदीस के अनुसार राज करे। दुनिया का हर व्यक्ति जो मोहम्मद और इस्लाम में विश्वास करता है, वो इस्लामिक स्टेट अर्थात आई.एस. का एक

सिपाही है। भारत में इनकी तादात बहुत बड़ी है। आप मुझे बताइये कि जो आई.एस. इराक में है, उससे ओर मोहम्मद बिन कासिम में क्या अन्तर है? बगदादी और महमूद गजनवी में क्या अन्तर है? अगर आप इतिहास का तथ्यपूर्वक अध्ययन करेंगे तो पायेंगे कि इराक और सीरिया में आई.एस. जो कार्य कर रहा है वो हमारे देश में पिछले 1300 साल से हो रहा है। आठवीं सदी की शुरुआत में मोहम्मद बिन कासिम ने भारत में आकर हमारे लाखों लोगों का जो कि मेरी नजर में बिलकुल निर्दोष थे परनतु इस्मामिक लुटेरों की नजर में काफिर और मशरिक थे मतलब कत्ल करने योग्य थे,उनको कत्ल कर दिया। हमारी 50 हजार से अधिक बेटियों को अरब में मण्डी लगाकर नीलाम कर दिया। तबसे आज तक इस्लामिक जिहादियों का वो जुनून और जुल्म हम पर जारी है। समय के साथ में कम ज्यादा जरूर हुआ है। पर पिछले तेरह सौ सालों में ऐसा कभी नहीं हुआ जब ये खत्म हुआ हो । ये दुखद है कि जिस देश में इतने अत्याचार हुए हों और अब भी हो रहे हों, उस देश के नागरिक आई.एस. को नहीं समझते।

सूर्या बुलेटिन-स्वामीजी, आप अजीब सी बातें कर रहे हैं। इन बातों का यहां कोई नहीं मानता। आपको अपनी बातें क्यों सही लगतीं हैं?

स्वामी जी- किसी के मानने या न मानने में मेरी बातें गलत नहीं हो जाएंगी। दरअसल भारत के लोग अपने इतिहास से अनजान हैं। उन्हें पता ही नहीं है कि उनके साथ,उनके पूर्वजों के साथ इस देश में क्या-क्या हुआ है? उन्हें अपने दोस्त और दुश्मन का नहीं पता। उन्हें पता ही नहीं है कि जब मोहम्मद बिन कासिम भारत आया तब पूरी दुनिया में केवल पन्द्रह लाख मुसलमान थे और सत्तर करोड़ हिन्दू थे। जब अंग्रेज ने इस देश पर शासन को अपने हाथ में लिया तब तक केवल 20 करोड़ से भी कम हिन्दू दुनिया में बचे थे। सत्तर करोड़ से 20 करोड़ रहने का मतलब ये नहीं है कि 50 करोड़ कम हुए बल्कि इसका मतलब ये है कि 1 हजार साल के कालखण्ड में कम से कम पांच सौ करोड़ हिन्दुओं का कत्ल हुआ है। इसका अर्थ है कि भारत की मिट्टी का शायद ही कोई ऐसा कण हो जिस पर किसी हिन्दू का खून न लगा हो। इन हिन्दुओं का दोष केवल इतना ही था कि इन्होंने इस्लाम और इस्लाम की अवधारणा को नहीं

समझा। मुझे दुख केवल इस बात का है कि हिन्दू आज भी वो ही गलती कर रहा है जो उसने तेरह सौ साल पहले करनी शुरू की थी।

सूर्या बुलेटिन- तो स्वामी जी अब आपको क्या विशेष खतरा लगने लगा है?

स्वामी जी- अब खतरा ये है कि अब हिन्दुओं के पास भागने के लिए कोई जगह नहीं बची है। आज तक होता ये रहा है कि जो भी इस्लाम से पीड़ित रहा वो भाग कर यहां आया। यहां तक पारसी और यहूदी जैसे समुदायों ने यहां आकर शरण ली परन्तु अब जब यह अंन्तिम शरणस्थली भी इस्लामिक जिहादियों के कब्जे में हो जाएगी तो हिन्दुओं के पास हिन्दमहासागर में डूबने के अलावा कोई और रास्ता नहीं बचेगा।

सूर्या बुलेटिन- स्वामीजी क्या आपको नहीं लगता कि आप कुछ अजीब सी बात कर रहे हैं। हमने तो आज तक सभी हिन्दू धर्म के संतों, सन्यासियों और धर्म प्रचारकों से यही सुना है कि हिन्दू धर्म सनातन है और ये कभी खत्म हो ही नहीं सकता।

स्वामी जी- यदि आप मानव रहित प्राकृति संरचना को धर्म मानते हैं तो ये सत्य है कि धर्म कभी नहीं मिटेगा। सूर्य जब भी उदय होगा उसका रंग भगवा होगा। अग्नि जब भी प्रज्वलित होगी, उसका रंग भगवा होगा। आम जैसे फल जब पकेंगे, उनका रंग भगवा होगा। लेकिन यदि आप धर्म में मानव को भी भी समावेशित करते हैं, तो अच्छी तरह से समझ लीजिये कि अब इस धरती से एक-एक सनातनधर्मी को उसी तरह से मिटा दिया जाएगा जैसे ईरान से, इराक से अरब से अफगानिस्तान से, पाकिस्तान से, कश्मीर से मिटा गया गया है। न तो इस धरती पर एक भी सनातन धर्म को मानने वाला बचेगा और न ही एक भी मठ,मंदिर,आश्रम और सनातन धर्म को मानने वाला सम्प्रदाय बचेगा।

सूर्या बुलेटिन-तो आपका कहने का अर्थ है कि केवल आप ही सच बोल रहे हैं। बाकी सब संत,सन्यासी और धर्म प्रचारक झूठ बोल रहे हैं।

स्वामीजी-मैं ये नहीं कह रहा हूं कि सब झूठ बोल रहे हैं परन्तु मैं पूरी दृढ़ता के साथ यह कहना चाहता हूं कि मेरी एक-एक बात सच है। कोई मेरी बात सुने या न सुने, कोई मेरी बात माने या न माने, मैं केवल सच बोलूंगा और वक्त मेरी बात को याद रखेगा।

सूर्या बुलेटिन- आप कोई संदेश सनातन धर्म के मानने वालों को देना चाहेंगे क्या?

स्वामी जी- हां, देना चाहूंगा। मैं सनातन धर्म के मानने वालों से कहना चाहता हूं कि हर सनातन धर्म को मानने वाला व्यक्ति कुरान और श्रीमद्भागवत् गीता जरूर पढ़े। हर सनातनधर्मी ये जरूर जान ले कि इस्लाम के जिहादी उनके बारे में क्या सोचते हैं और हर किसी को यह भी जानना चाहिये कि उसका अपना धर्म क्या कहता है। यदि हमने इस्लाम को नहीं समझा और अपने धर्म को नहीं समझा, तो हमारे विनाश को कोई नहीं रोक सकेगा।

इंसानियत का पुरोधा या इस्लामिक जिहाद का रहनुमा

राजेश यादव
(महंत उत्तराधिकारी, डासना देवी मंदिर)

एक तराना बचपन से सुनते आये हैं
'' सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा
हम बुलबुले हैं इसकी ये गुलिस्तां हमारा
गुरबत में हों अगर हम , रहता है दिल वतन में
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहां हमारा
परबत वो सबसे ऊंचा हमसाया आस्मां का
वो संतरी हमारा, वो पासबां हमारा
गोदी में खेलतीं है इसकी हजारों नदियां
गुलशन है जिनके दम से रश्के –जना हमारा
ऐ आबे–रौदे गंगा! वो दिन हैं याद तुझको
उतरा तेर किनारे जब कारवां हमारा
मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिंदी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा
यूनान–ओ–मिस्र–रोमा सब मिट गए जहां से
अब तक मगर है बाकी नामों निशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा
' इकबाल' ! कोई मरहम अपना नहीं जहां में
मालूम क्या किसी को दर्दे निहां हमारा ''

बहुत ही अच्छा और दिल को छू लेने वाला गीत है और जब भी किसी राजनैतिक कार्यक्रम में भाग लेने का मौका मिला तभी किसी न किसी नेता ने इस गीत और इसके रचनाकार इकबाल के बारे में बताया। मेरे मन पर इकबाल की बहुत जबर्दस्त छवि रही। मैंने हमेशा इकबाल की याद अपने मन में एक ईमानदार मुस्लिम और वतनपरस्त शायर के रूप में रखी। मेरे गुरुजी यति नरसिंहानंद सरस्वती जी महाराज सदैव ही कहते रहत हैं कि हमें इस्लाम के धर्म प्रचारकों की बात जरूर सुननी चाहिए और वो अक्सर खुद भी सुनते भी हैं और पढ़ते भी हैं। उन्होंने मुझे एक दिन जैद हामिद नामक पाकिस्तानी जिहादी की एक वीडियो यूट्यूब पर दिखाई। जैद हामिद आज पूरे विश्व में शीर्ष जिहादियों में बहुत सम्माननीय स्थान रखता है। वो अपनी बातों में बार-बार इकबाल नाम के शायर का जिक्र करता है जिसे वो सारे विश्व के जिहादियों का रहनुमा और आदर्श मानता है। मैंने गुरुजी से कहा कि एक इतना बड़ा जिहादी एक शायर को अपना मार्गदर्शक रहनुमा और आदर्श कैसे मान सकता है। इस पर गुरुजी ने मुझे डॉ. इमरार अहमद, तारिक जमील, तारिक मसूद जैसे इस्लामिक विद्वानों और जिहाद के पैरोकारों के

भाषण सुनवाए तो मुझे समझ में आया कि ये सब एक शायद से बहुत ज्यादा प्रभावित हैं। मैंने गुरुजी से कहा कि एक तरफ तो हमारा इकबाल है जो इतना सुलझा हुआ और अपमनपसंद,तरक्कीयाफ़्ता मुसलमान है, और दूसरी तरफ ये पाकिस्तानियों का इकबाल है जो पूरी दुनिया को कत्लोगाप्त करके इस्लाम की हुकूमत लाना चाहता है। कितना अन्तर है दोनों शायरों में? मेरी बात सुनकर उन्होंने मुझे कुल्लियाते इकबाल तथा कुछ दूसरी किताबें दीं। मैंने उन किताबों को पूरे ध्यान से पढ़ा तब मुझे पता चला कि दोनों एक ही हैं। इन किताबों को पढ़ने के बाद मेरे दिमाग में भूचाल सा आ गया। मेरी समझ में नहीं आया कि हिन्दुओं की मूर्खता पर हंसूं जो इकबाल को समझ ही नहीं पाये या इकबाल की दाद दूं कि किस तरह से उसने अपने मजहब,अपने इस्लाम से वफादारी को निभाया है। मुझे हिन्दू नेताओं और बुद्धिजीवियों की बुद्धि पर तरस आया कि ये कितने मूर्ख हैं कि केवल कुछ पंक्तियों के तराने में बहक कर आज तक उस व्यक्ति के कसीदे पढ़ रहे हैं जो व्यक्ति पूरी दुनिया में इस्लाम को छोड़कर किसी चीज को देखना ही नहीं चाहता था। इस्लामिक जिहाद के इतने बड़े वैचारिक पुरोधा को धर्मनिरपेक्षता और वतनपरस्ती का प्रतीक बनाकर पेश कर देना, ये धर्म,मानवता और इतिहास के प्रति हमारे नेताओं और बुद्धिजीवियां का अतुलनीय विश्वासघात है। इकबाल भी इस्लाम की तरह ही रहस्यमयी था। जब वो हिन्दुओं में बैठता था तो वतनपरस्ती और इंसानियत का बात करता था जब मुसलमानों में बैठता था तो केवल और केवल इस्लाम की बात करताा था। वास्तव में इकबाल की धर्मनिरपेक्षता,वतनपरस्ती और इंसानियत वास्तव में उसके खूनी इरादों और जिहादी मन्सूबों को हिन्दुओं से दिपने का एक आवरण था जिसे बाद में उसने खुद उतार दिया। इकबाल ने तराना-ए-मिल्ली लिखा जो कि ये है

''चीनो अरब हमारा, हिन्दोस्ताँ हमारा।
मुस्लिम हैं हम, वतन हैं सारा जहाँ हमारा
तौहीद की अमानत सीनों में है हमारे
आसां नहीं मिटाना नामों निशँ हमारा
दुनिया के बुतकदों में पहला वो घर खुदा का
हम उसके पास्बाँ हैं, वो पास्बाँ हमारा
तेगों के साए में हम पल कर जवाँ हुए हैं
खंजर हलाल का है कौमी निशाँ हमारा
मग्रिब की वादियों में गूंजीं अजँ हमारी
थमता न था न किसी से सीले रवाँ हमारा
बातिल से दबने वाले ऐ आस्माँ नहीं हम
सौ बार कर चुका है तू इम्तिहाँ हमारा
ऐ गुलिस्ताने अंदलुस! वह दिन है याद तुझको
था तेरी डालियों में जब आशियाँ हमारा।
ऐ मौजे दजला! तू भी पहचानती है हमको
अब तक है तेरा दरिया अफसाना ख्वाँ हमारा
ऐ अज़े पाक! तेरी हुर्मत पे कट मरे हम
है खूँ तिरी रगो में अ तक रवां हमारा
सालारे करवाँ है मीरे हजाज़ अपना
उस नाम से है बाक़ी आरामे जां हमारा
इक़बाल का तराना बाँगे दरा है गोया
होता है जादा पैमा फिर कारवाँ हमारा''

बलात्कारी मुस्लिम को सब मौन क्यों?

देश के विभिन्न हिस्सों में आए दिन मजहबी उन्मादियो द्वारा छोटी बच्चियों से लेकर युवतियों तक के साथ हिंया और यौनाचार की वीभत्स घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है। लेकिन अपराध में '' मजहब '' खोजने वाले सेकुलरों के मुंह पर ताले जड़े हुए हैं। उन्हें बेटियों के साथ हो रहा यह जघन्य अपराध नजर नहीं आ रहा।

असम, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, केरल, दिल्ली और पश्चिम बंगाल में हिन्दू लड़कियों के साथ सामूहिक बलात्कार एवं हत्या की कुछ हाल की घटनाएं हृदय झकझोरतीं हैं। इनकी वीभत्सता देखकर न केवल रूह कांप जाती है बल्कि यह सोचने पर भी मजबूर करती है कि आखिर इस तरह के अपराध में शामिल लोग कौन हैं? इनकी मानसिकता क्या है? इनकी परवरिश और तालीम कहां हो रही है? अगर ये मनोरोगी हैं तो इसका कारण क्या है? या फिर इस घृणित अपराध के पीछे सिर्फ वह हिन्दू विद्वेष और मजहबी तालीम है, जिसके बताए रास्ते पर वे चल रहे हैं। इन सब बातों का विश्लेषण करने से पहले पिछले दिनों देश के अलग-अलग हिस्सों में मासूम बच्चियों के साथ घटीं बलात्कार जैसे वीभत्स अपराध की कुछ घटनाओं पर नजर डालने की जरूरत महसूस होती है।

पहली घटना-मार्च,2018

असम के नौगांव में कक्षा पांच में पढ़ने वाली एक 10 वर्षीया बच्ची स्कूल से घर लौट रही थी। इतने में मौका पाकर पास के जाकिख हुसैन (21) एवं उसके चार साथियों ने उसे अगवा कर लिया। वे उन्मादी बच्ची को एक सुनसान जगह ले गए, जहां सभी ने सामूहिक रूप से दुष्कर्म किया। राज न खुलने पाए, इसलिए उसे मिट्टी तेल डालकर उसे जिंदा आग के हवाले कर दिया। 90 प्रतिशत तक जल चुकी उस मासूम की तमाम चिकित्सकीय प्रयास के बाद भी तड़प-तड़प कर मौत हो गई।

दूसरी घटना-अप्रैल,2018

उत्तर प्रदेश के बिजनौर का धामपुर थाना क्षेत्र। बीती 10 अप्रैल को एक 7 वर्षीया अबोध बच्ची जब अपने घर से थोड़ी दूर स्थित दुकान से कुछ सामान लेने जा रही थी, तभी मौका पाकर गांव के शाहबाज,नसीरुद्दीन और लईक अहमद उसे बदनीयती से अगवा करके ले गए और उससे दुराचार किया और फरार हो गए।

तीसरी घटना-जून 2018

राजस्थान के बाड़मेर जिले के गिराब क्षेत्र में एक सात साल की मासूम को रईस नाम के व्यक्ति ने ननिहाल से अगवा किया और एक सुनसान जगह ले जाकर उसके साथ दुष्कर्म किया। बच्ची चिल्लाई तो उसने उसकी गला घोंट कर हत्या गर दी। इतने से जी नहीं भरा तो दुष्कर्मी ने मरने के बाद भी बच्चे के शव से कई बार बलात्कार किया।

चौथी घटना-मार्च 2018

पश्चिम बंगाल के कोलकाता में शेख मुन्ना नाम के जिहादी ने एक 3 वर्षीया दुधमुंही बच्ची के साथ कुकर्म किया। यह घटना तब की है जब उसका पांच वर्षीय भाई उसे खिलाने के लिए घर के पास स्थित बस प्रतीक्षालय लाया था। जहां पहले से चालक का सहायक मुन्ना मौजूद था। मौका पाकर वह बच्ची को बस में ले गया और दुष्कर्म किया। बाहर बच्ची का भाई बस के दरवाजे को पीट-पीटकर उसे छोडने की मिन्नतें करता रहा। लेकिन

उन्मादी ने एक न सुनी।

पांचवीं घटना-जून 2018

जून, 2018 में मध्य प्रदेश के मंदसौर में एक सात साल की मासूम बच्ची जब स्कूल के दरवाजे पर अकेली खड़ी थी तो इरफान नामक व्यक्ति उसे मिठाई का लालच देकर अपने साथ ले जाने लगा। पहले से घात लगाए बैठबा उसका साथी भी चल दिया। दोनों उसे एक निर्जन स्थान पर ले गए। जहां सामूहिक रूप से दुष्कर्म के बाद दोनों ने मरा समझकर उसे झाड़ी में फेंक दिया। बच्ची की चीख सुनकर स्थानीय लोगों ने उसे देखा और उसकी हालत को देखते हुए उसे तत्काल चिकित्सालय में भरती कराया, जहां डॉक्टरों ने बताया कि दरिंदों ने उसके साथ दुष्कर्म करने के बाद उसके गुप्तांग में कोई कठोर चीज डाली थी, जिससे उसकी आंत और नाजुक अंग छिन्न-भिन्न हो गए हैं।

छठी घटना-अप्रैल 2016

केरल के पेरुमबवूर में कानून की छात्रा 30 वर्षीया जीशा जब घर में अकेली थी, तब अमीरुल नाम के मुस्लिम युवक ने घर में घुसकर बेरहमी से पहले बलात्कार किया, फिर चाकू से शरीर पर 30 से अधिक बार वार करके क्षत-विक्षत कर दिया। जीसा की मौके पर ही मौत हो गई।

उपरोक्त घटनाएं अलग-अलग स्थानों की जरूर हैं लेकिन इन सभी में शामिल अपराधियों का जहां मजहब एक है तो वहीं दुराचार की वीभत्सता भी लगभग एक जैसी ही है। आश्चर्य तो यह कि इस दरिंदगी में सिर्फ मजहबी उन्मादी ही शामिल नहीं हैं बल्कि मुल्ला-मौलवियों तक ने मासूम बेटियों को अपनी हवस का शिकार बनाया है।

अपराधियों का मनोविज्ञान

कुछ वर्ष पहले आतंकी संगठन आईएस के चंगुल से छूटी यजीदी किशोरियों ने इराक में मीडिया के सामने अपनी पीड़ा का बयान करते हुए बताया था, '' जब आतंकी उनके साथ बलात्कार कर रहे थे तो कह रहे थे कि वे अपने हिसाब से कुभी गलत नहीं कर रहे हैं क्योंकि तुम इस्लाम का पालन नहीं करतीं। ऐसी काफिर महिला के साथ बलात्कार करना जायज है।'' ऐसे ही 12 साल की किशोरी ने अपने दर्द को साझा करते हुए कहा,'' जब मैने उससे कहा कि आप मुझे बख्श दो तो आतंकी ने कहा कि वह ऐसा करके खुदा के करीब जा रहा है। यही हमारी बंदगी का तरीका है। ''

आतंकियों की ऐसे बातों से यह सवाल उठता है कि आईएस के आतंकी किस इस्लाम का हवाला देकर दूसरे मत-पंथ की महिलाओं-बेटियों के साथ दुराचार को जायज ठहरा रहे थे।? कहीं भारत में उन्मादी इसी सोच पर तो नहीं चल रहे हैं? क्या ऐसे अपराधी मानसिक रूप से विक्षिप्त होते हैं? इन सवालों पर काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में मनोविज्ञान के प्रो. राकेश पांडेय कहते हैं कि श के अलग-अलग हिस्सों में घटनी यौनाचार की घटनाओं में शामिल अपराधियों के जीवन पर नजर डालें तो कही न कहीं इसके पीछे मजहबी तालीम काफी हद तक जिम्मेदार है। इस सत्य से इनकार नहीं किया जा सकता है। यकीनन आज के हालात को देखने से स्पष्ट है कि इन अपराधों में संलिप्त एक खास वर्ग के लोगों का संभवतः इसके लिए ब्रेनवाश किया जाता है, उन्हें दूसरे मत-पंथ के लोगों के प्रति अपराध को बंदगी कहकर जायज ठहराया जाता है। इससे उनकी मनोवृत्ति बदलती है और जो काम समाज को गलत लगते हैं, वे उन्हें आनंद देने वाले लगते हैं। वे आगे बताते हैं कि हाल ही में कुछ घटनाओं में देखने को मिला कि अपराधी मासूम बच्चियों को निशाना बनाते हैं। ऐसे अपराधी मानसिकरूप से विक्षिप्त और मनोविकास से ग्रसित होते हैं। वे '' पीडोफीलिया '' रोग से ग्रस्त होते हैं। इस रोग के कारण वे बच्चे से ही दुष्कर्म करते हैं। प्रो. पांडेय कहते हैं कि ऐसे अपराधी जो देखते-सुनते हैं,उसी के अनुसार उनकी सोच बनती है। विश्वविद्यालय की ही एक और प्रोफेसर एवं मनोचिकित्सक मोना श्रीवास्तव कहतीं हैं,'' एक किताब है -इन द माइंड आफ ए रेपिस्ट। इसमें शोध के साथ स्पष्ट किया गया है कि ऐसे अपराधों में लिप्त अपराधियों का दिमाग कैसा होता है और वे ऐसा क्यों करते हैं। लेकिन हाल के अपराधों को देखें ता यह बात समझ में आती है कि अपराध में बदले की भावना ज्यादा होती है। ऐसे असामाजिक तत्व नियम के विरुद्ध चलते हैं और गलत काम करके अपने को बड़ा दिखाने की इच्छा रखते हैं।''

जवाहर लाल नेहरू विवि में लॉ एंड गवर्नेस की प्रो. अमिता सिह हाल के अपराधों में मुसलमानों की संलिप्तता पर कहतीं हैं,'' ये अपराध संगठित रूप से अंजाम दिये जा रहे हैं। ऐसा करके वे समाज में दहशत फैलाना चाहते हैं। बात मंदसौर की हो या असम की या उत्तर प्रदेश की हर जगह हिन्दू लड़कियों को निशाना बनाया जाता है।''

बलात्कार पर भारत में क्या है कानून

बलात्कार के संबंध में भारत में '' रेयरेस्ट आफ द रेयर '' मामले में ही फांसी की सजा हो सकती है। बच्चियों के साथ बलात्कार के मामले पोक्सो एक्ट के तहत दर्ज किए जाते हैं। इस कानून में बलात्कार के दोषियों के लिए 10 साल से लेकर आजीवन उम्र कैद तक की सजा का प्रावधान है। हालांकि मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा सरकार ने अपने-अपने राज्यों में 12 साल से कम उम्र की बच्चियों के साथ बलात्कार के मामले में फांसी की सजा देने के लिए कमर कस ली है।

कठुआ पर तल्खी, मंदसौर पर चुप्पी

छोटी से छोटी घटना पर दर्जनों ट्वीट करने वाले कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी मंदसौर की घटना पर खामोश दिखाई दिये। हालांकि दो दिन बाद ट्वीट आया जब सोशल मीडिया पर हजारों लोगों ने उनक इस चुप्पी पर न केवल उन्हें खरी-खोटी सुनाई बल्कि सवालों की झड़ी लगा दी। अपने को घिरता देख उन्होंने एक ट्वीट किया लेकिन उसमें भी राजनीति का छौंक लगाने से नहीं चूके। दिलचस्प बात यह है कि कठुआ घटना पर अलग-अलग क्षेत्रों के जाने-माने लोग बलात्कार को मंदिर,हिंदुत्व से जोड़कर समाज को बांटने का काम कर रहे थे, ये सभी मंदसौर में मासूम बच्ची के बलात्कार पर न टीवी पर गरज रहे थे न ही उनका ट्विटर ही हरकत में रहा था। सोशल मीडिया की मानें तो जिस कठुआ घटना पर राहुल गांधी ने धड़ाधड़ 9 ट्वीट किये थे, मंदसौर पर उनसे सिर्फ

एक ट्वीट ही किया गया। ऐसे ही कठुआ पर पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने 3, वामपंथी नेता सीताराम येचुरी ने 3, जावेद अख्तर ने 37, फरहान अख्तर, नेहा धूपिया, रितेश देशमुख, तमन्ना भाटिया, वरुण धवन, स्वरा भास्कर, ऋचा चड्ढा, सोनम कपूर, सोनाली बेंद्रे सहित कई बॉलीवुड कलाकारों ने 78 से अधिक ट्वीट करके न केवल घटना की निंदा की बल्कि अपराधी को हिन्दू समाज से जोड़कर बदनाम करने वाली बातें कहीं थी। लेकिन मंदसौर की घटना पर इनमें से एक-दो को छोड़कर किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा।

सोशल मीडिया पर दिखा गुस्सा

मंदसौर की घटना पर चुप्पी साधे रहने वालों पर आमजन का गुस्सा फूट पड़ा। अभिषेक सिंह ने ट्वीट में कहा कि लगता है कि राहुल गांधी और उनकी सोशल मीडिया टीम देश में नहीं हैं क्योंक जिस कठुआ घटना पर उन्होंने कई ट्वीट कर अपनी संवेदना जाहिर की, वह मंदसौर में आरोपी का मजहब जानने के बाद खामोश हो गए। रत्नेश ने लिखा कि मंदसौर का दरिंदा मुसलमान है। यह सुनते ही कठुआ पर सातवें स्वर में बोलने वाले सेकुलर बिलों में छिप गए हैं। वहीं रुचि अग्निहोत्री लिखतीं हैं कि कहां हैं सोनम कपूर,स्वरा भास्कर, करीना कपूर? क्या उन्हें मंदसौर में सात साल की मासूम बच्ची नहीं दिखाई दी? कठुआ पर इतना ही खून उबल रहा था तो मंदसौर में ठंडा क्यों पड़ गया? सिर्फ इसलिए कि अपराधी शांतिप्रिय समुदाय से है? शर्म करिये।

क्या कहते हैं कि एनसीआरबी के आंकड़े

आंकड़ों की रोशनी में देखें तो साफ है कि भारत में बलात्कार के मामले तेजी से बढ़े हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरों के मुताबिक वर्ष 2012 के दौरान जहां बलात्कार के 24,923 मामले दर्ज हुए थे, वहीं 2013 के दौरान ये बढ़कर 33,707 तक पहुंच गए। 2014 में 36,735 मामले दर्ज हुए। 2015 के मुकाबले में 2016 में इन मामलों मे 12.4 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई थी।

बहरहाल, यह सही बात है कि अपराध का कोई ''मत'' नहीं होता, लेकिन जब कोई अपराध संगठित रूप से किया जाए और उसमें एक मजहब की संलिप्तता स्पष्ट रूप से दिखाई दे तो उसे क्या कहा जाएगा? आज देश के विभिन्न हिस्सों में मजहबी उन्मादियों द्वारा हिन्दू बेटियों के साथ की जाने वाली हिंसा और यौनाचार की घटनाएं उसी का उदाहरण हैं।

असम, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, केरल, दिल्ली और पश्चिम बंगाल में हिन्दू लड़कियों के साथ सामूहिक बलात्कार एवं हत्या की कुछ हाल की घटनाएं हृदय झकझोरतीं हैं। इनकी वीभत्सता देखकर न केवल रूह कांप जाती है बल्कि यह सोचने पर भी मजबूर करती है कि आखिर इस तरह के अपराध में शामिल लोग कौन हैं?

कट्टरपंथियों के कारनामे

कठुआ घटना को मजहबी रंग देने वाले तब चुप्पी क्यों साध लेते हैं, जब दिल्ली से लेकर असम तक और जम्मू से लेकर कन्या कुमारी तक देश में कट्टरपंथियों द्वारा हिन्दू बेटियों को निशाना बनाया जाता है। क्या इस रहस्यमयी चुप्पी का सिर्फ एक ही कारण होता है अपराधी का खास मजहब का होना?

- अप्रैल,2018- ओडिशा के कटक जिले के सालेपुर इलाके में छह साल की मासूम बच्ची को 28 वर्षीय मोहम्मद मुश्ताक ने चाकलेट का लालच देकर बहलाया। स्थानीय स्कूल के बरामदे में उसके साथ दरिंदगी कर उसका गला घोंटकर हत्या करने की कोशिश की। बच्ची हालत इतनी खराब थी कि डॉक्टरों ने तमाम कोशिशें के बाद उसे बचाया नहीं जा सका।
- अप्रैल,2018- असम के बरपेटा में 12 वर्षीया बच्ची के साथ बांग्लादेशी घुसपैठियों ने सामूहिक बलात्कार किया। राज खुलने न पाए इसलिए गला दबाकर हत्या कर दी और शव को खेत में फेंक कर फरार हो गए।
- मार्च,2018-असम के विश्वनाथ चरियाली के गिरिता गांव में 40 वर्षीय मौलवी शाहिद ने 18 साल की एक लड़की के साथ 6महीने तक डरा-धमकाकर बलात्कार किया।
- नवंबर,2017-मध्य प्रदेश के अनूपगढ़ में शौकत नामके जिहादी ने तनुजा कोतमा के प्रेम प्रस्ताव ठुकराने पर तलवार से वार कर सिर धड़ से अलग कर दिया।
- मार्च,2018-पश्चिम बंगाल के शहापुरा में शेख अमीरुल नाम के जिहादी ने तलाकशुदा महिला को फंसाया। अंतरंग तस्वीरें लेकर उसे डराया-धमकाया और फिर उसकी पूंजी हथियाई। दुष्टता की पराकाष्ठा तब हुई जब इसने महिला की 12 वर्षीया बच्ची के साथ बलात्कार किया।
- फरवरी,2018- झारखंड के चतरा में इसरार,सददाम,शाहिद आलम ने 15 वर्षीया हिन्दू बच्ची के साथ सामूहिक बलात्कार किया और फिर जिंदा जलाकर मार डाला।
- दिसंबर,2017-झारखंड के रामगढ़ मं आदिल अंसारी नाम के जिहादी ने किरन कुमार को लव जिहाद में फंसाया। निकाह के बाद लड़की पर इस्लाम के अनुसार चलने का दबाव बनाया। जब लड़की नहीं मानी तो आदिल, उसके पिता, चाचा एवं अन्य दो कट्टरपंथियों ने लड़की को रात में सुनसान जगह ले जाकर बलात्कार किया। उसके बाद हत्या करके शव को नदी में फेंक दिया।
- जनवरी,2018-असम के ढेकियाजुली में सरस्वती पूजा करने गई 15 वर्ष की हिन्दू बच्ची

के साथ तीन मुस्लिम लड़कों ने सामूहिक बलात्कार किया।

- अप्रैल,2018-मुरादाबाद में मुस्लिम युवक ने खुद को हिन्दू बताकर लड़की को प्रेम जाल में फंसाया, उसके घर से भागकर कन्वर्ट किया। फिर मुस्लिम साथियों के साथ सामूहिक बलात्कार किया।
- फरवरी,2018- इलाहाबाद में दुकानदार अनवर और वाजिद की दुकान से मोबाइल लेने गई 12 वीं की एक हिन्दू छात्रा को 6 मुसलमानों ने बंधक बनाया। जबरन इस्लाम करने को कहा, लड़की नहीं मानी तो उसके संग सभी सामूहिक बलात्कार किया।
- जनवरी,2018-बुलंदशहर में 16 वर्षीय बच्ची जब शाम को कोचिंग से पढ़कर घर आ रही थी, तब जुल्फिकार अब्बासी, इस्माइल और दिलशाद ने उसका अपहरण करके सामूहिक बलात्कार किया। राज दबा रहे इसलिए लड़की की गला घोंट कर हत्या कर दी और बाद में शव को नहर में फेंक दिया।
- अगस्त,2017-इलाहाबाद के अदनान ने एक लड़की को अपने प्रेम जाल में फंसाया। अदनान के घरवालों को लड़की से ऐतराज था तो उन्होंने उसकी दूसरी शादी करवाने की योजना बनाई। एक दिन अदनान न९ उस युवती को अपने पास बुलाया और चार मुस्लिम दोस्तों के साथ बलात्कार किया। फिर उसके माथे से पिस्तौल सटाकर गोली मार दी। गोली के घाव में चाके से चेहरा क्षत-विक्षत कर दिया।
- जनवरी,2018-मेरठ में एक दलित युवती पर मुस्लिम युवक बिट्टू ने कन्वर्जन और निकाह का दबाव बनाया। लड़की नहीं मानी तो बिट्टू ने अपने भाई काले,जीजा महताब,चचेरे भाई शाहबाज के साथ लड़की का अपहरण किया। 7 दिनों तक उसका सामूहिक बलात्कार किया।
- मार्च,2018-असम के हैलाकांडी में 13 वर्षीया बच्ची के साथ जोशिमुददीन नाम के जिहादी ने बलात्कार क बाद निर्मम तरीके से हत्या कर दी।
- नवंबर,2017-बंगाल के बांकुरा में 3 वर्ष की अबोध बच्ची जब निवृत होने के लिए बाहर गई, तो पड़ोसी रहमान ने अगवा कर उसके साथ बलात्कार किया और फिर उसकी हत्या कर दी।
- दिसंबर,2017-शिकोहाबाद में मुस्लिम पड़ोसियों ने एक हिन्दू किशोरी का अपहरण कर लिया। नशे का इंजेक्शन देकर 12 दिन तक सामूहिक बलात्कार किया। वेश्यालय में भी बेचने की कोशिश की।
- जनवरी 2018-दिल्ली में एक 38 वर्षीया हिन्दू महिला के साथ शाहबाज खान नाम के उन्मादी ने बलात्कार किया। फिर गला घोंट कर उसकी हत्या कर दी और उसका नग्न शव उसके घर फेंक आया।
- अप्रैल,2018- शामली में कैराना की एक दंगापीड़ित नाबालिग बेटी संग आरिफ, फिरोज, सददाम और रईस ने सामूहिक बलात्कार किया।

साभार: पांचजन्य

इस्लामिक चक्रव्यूह में भारत...एक और चुनौती

विनोद कुमार सर्वोदय
(राष्ट्रवादी लेखक व चिंतक)

क्या मूस्लिम समाज वास्तव में भयभीत है या फिर सवा करोड़ के मुस्लिम युवाओं के क्लब के गठन द्वारा आक्रांताओं की जड़ों को गहरा करके अपने पूर्वाग्रहों के कारण इस्लामिक चक्रव्यूह में घेरने के लिये भारत को एक और चुनौती दे रहा है ? समाचारों से ज्ञात हुआ है कि इस्लामिक संस्था : दारुल-उलूम, देवबंद में पिछले दिनों 24 जुलाई को जमीयत उलेमा-ए-हिंद के राष्ट्रीय महासचिव मौलाना सैय्यद महमूद मदनी सहित अनेक उलेमाओं और मौलानाओं के समक्ष एक सौ मुस्लिम युवकों द्वारा शारीरिक शक्ति का प्रदर्शन किया गया है। लेकिन उसकी तुलना देश की किसी सैनिक अकादमी में हुई 'पास आउट परेड' के प्रशिक्षित सैन्य अधिकारियों से की जाय तो संभवतः कुछ अतिश्योक्ति हो सकती है ? वैसे पूर्व राज्यसभा सांसद मौलाना मदनी ने 100 मुस्लिम युवाओं का विश्व के एक प्रमुख इस्लामी केंद्र देवबंद (भारत) में तथाकथित कला का प्रदर्शन कराकर अपनी अराष्ट्रीय मानसिकता का परिचय कराया है। देश के पांच राज्यों के 'मेवात' सहित 16 जनपदों से आये हुए इन प्रशिक्षित युवकों के कला प्रदर्शन के माध्यम से 'जमीयत उलेमा-ए-हिन्द' ने 'जमीयत यूथ क्लब' के गठन व उसकी भावी योजनाओं को संभवतः पहली बार उजागर किया है। जमीयत की इस योजनानुसार प्रति वर्ष साढ़े बारह (12.5) लाख मुसलमान नवयुवकों को 'विशेष प्रशिक्षण' देकर तैयार किया जा रहा है।

मौलाना मदनी का मानना है कि ऐसा प्रशिक्षण पाने से कोई भी बाहरी शक्तियां इन मुस्लिम युवकों का कुछ भी नही बिगाड़ पायेगी। इस प्रकार आगामी दस वर्षों में अर्थात सन 2028 तक देश के एक सौ जनपदों के सवा करोड़ (1.25 करोड़) मुस्लिम नवयुवकों को विशेष प्रशिक्षित किया जायेगा।समाचारों के अनुसार जमीयत की इस योजना में मान्यता प्राप्त 'भारत स्काउट व गाइड' का भी सहयोग लिया जा रहा है। इसके पीछे यह तर्क दिया जा रहा है कि जमीयत उलेमा-ए-हिन्द , जमीयत युथ क्लब व भारत स्काउट व गाइड मिलकर देश की सेवा करेंगे।इन योजनाओं पर होने वाला सारा व्यय केवल जमीयत उलेमा-ए-हिन्द ही वहन करेगी।

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में ऐसा प्रतीत होता है कि जमीयत देश की वर्तमान शासकीय व प्रशासकीय व्यवस्थाओं को अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति में बाधक मानकर मुस्लिम समुदाय को भ्रमित करके देश के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप को बिगाड़ना चाहती है। धर्म या सम्प्रदाय विशेष को ऐसा सशक्त बल या समूह या क्लब बनाने को क्या हमारा संविधान अनुमति देगा ? क्या इसप्रकार 'भारत स्काउट व गाइड' के नाम का सहारा लेकर व सुरक्षा के बहाने देश को भ्रमित किया जा सकता है ? जबकि वर्षों से यह स्पष्ट है कि भारतीय मुसलमानों को आम नागरिकों से अधिक अधिकार मिले हुए है। उनको लाभान्वित करने के लिये अल्पसंख्यक आयोग व मंत्रालय सहित अनेक संस्थाएं कार्यरत है , फिर भी उनको अपनी सुरक्षा के प्रति 'भय' क्यों ? क्या यह 'भय' मुस्लिम समाज को भयभीत करके देश में साम्प्रदायिक वातावरण बिगाड़ने के लिये तो नही ? यदि मुस्लिम समाज अपनी इस्लामिक विचारधारा को ही सत्य मानेगा और विश्व के अन्य समाजों की विचारधारों और संस्कृति को अपने अनुरूप बनाने की अंतहीन जिहादी सोच में परिवर्तन नही करेगा तो उनमें अन्यों के साथ जियो और जीने दो की सुखद भावना का विकास कैसे होगा ? मानवीय सिद्धान्तों और नैतिक मूल्यों को इस्लाम जगत को स्वीकार्य होना ही चाहिये।आज सभ्य समाज को यह स्वीकार नही है कि कोई आतंकियों की तरह उन्हें भयभीत करें और उनको क्षति पहुंचाता रहें। यह सर्वथा अनुचित है कि सहिष्णुता के नाम पर विध्वंसात्मक प्रवृत्तियों के प्रति भारतीय समाज सहनशील बना रहें ?

कुछ षड्यंत्रकारी जमीयत यूथ क्लब की तुलना राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से करके इसे उचित ठहराने का प्रयास कर रहें है। जबकि संघ दशकों से भारतीय मूल्यों की रक्षा के साथ साथ सम्पूर्ण भारतीय समाज उसमें हिन्दू-मुस्लिम- सिख-ईसाई आदि सभी की अनेक प्रकल्पों द्वारा सेवा करता आ रहा है। इसके अतिरिक्त 'मॉब लिंचिंग' का भी भय दिखा कर इस प्रकार के संगठन के गठन को उचित बताने वाले भी हिन्दू विरोध की अवधारणाओं से ग्रस्त है। जबकि 'मॉब लिंचिंग' या 'भीड़ हत्या' या 'सामूहिक अत्याचारों' से भरे मुगलकालीन इतिहास व वर्तमान को भुला कर चालबाज बुद्धिजीवियों ने 'लव जिहाद व गौहत्या' आदि के विवादों में हिंदुओं को ही दोषी मानकर भ्रमित प्रचार करने का माध्यम बना दिया है।क्या यह सर्वविदित नही है कि हिन्दू समाज उदार व अहिंसक होने के कारण मुस्लिम कट्टरपंथियों व आतंकवादियों की हिंसात्मक गतिविधियों का वर्षो से शिकार होता आ रहा है ? ऐसे में हैदराबाद के अकबरुद्दीन ओवैसी की विषैली फुफकार को भी भुलाया नही जा सकता जब उसने आदिलाबाद में 24 दिसम्बर 2012 को एक सार्वजनिक सभा में कहा था कि पंद्रह मिनट को पुलिस हटा लो हम मुसलमान करोडों हिंदुओं पर भारी पड़ेंगे।फिर भी मुस्लिम समाज अपनी तथाकथित सुरक्षा के नाम पर सशक्त सेना के समान एक विशाल संगठन खड़ा कर रहा है, क्यों ? क्या यह भारत के इस्लामीकरण करने की जिहादी सोच के मिशन का भाग तो नही ?

आपको स्मरण रखना होगा कि काग्रेसी नेता और भारत सरकार के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद की सोच थी कि 'भारत जैसे देश को जो एक बार मुसलमानों के शासन में रह चुका है, कभी भी त्यागा नही जा सकता और प्रत्येक मुसलमान का कर्तव्य है कि उस खोयी हुई मुस्लिम सत्ता को फिर प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करें'। जमायते इस्लामी के संस्थापक मौलाना मौदूदी ने पाकिस्तान बनने का विरोध तो नही किया परंतु थोड़ा दुख व्यक्त करते हुए कहा था कि 'हम तो पूरे भारत को ही इस्लामी देश बनाना चाहते थे'। विभिन्न मुस्लिम नेताओं के अनेक ऐसे ऐतिहासिक कथन अभी तक मुसलमानों के अन्तःस्थल में छलकते रहते है। क्योंकि इस्लाम का संकल्प है जिहाद और अंतिम लक्ष्य भी परंतु यह अन्तहीन संघर्ष मानवता विरोधी है। अतः जब संसार को दारुल-हरब और दारुल-इस्लाम में विभाजित करके देखने वालों की देशभक्ति स्वाभाविक रूप से संदेहात्मक हो तो उसका दोषी कौन होगा ?

निसंदेह कट्टरपंथी मौलानाओं ने जमीयत यूथ क्लब के नाम से सवा करोड़ की एक प्रशिक्षित इस्लामिक फौज की तैयारी का अपना गुप्त एजेंडा उजागर करने से पहले विचार-विमर्श अवश्य किया होगा। क्या ऐसे में यह सोचना अनुचित होगा कि इस क्लब को देशव्यापी विभिन्न आतंकवादी संगठनों व उनके स्लीपिंग सेलों तथा ओवर ग्राउंड वर्करों का जो पहले से ही प्रशिक्षित है, सहयोग मिलेगा ? इसके अतिरिक्त यह भी संभावना हो सकती है कि पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान व इस्लामिक स्टेट आदि के आतंकी और पाकिस्तानी गुप्तचर संस्था आई.एस.आई. आदि जिहाद के लिये इस यूथ क्लब से जुड़ कर देश के अनेक भागों में आतंकवादी घटनाओं द्वारा राष्ट्रीय वातावरण को दूषित करने में सफल हो सकेंगे ?

यह कितना विचित्र व दुखदायी है कि इस्लाम में धर्मांतरित होने वाले भारतीय नागरिक अपने पूर्वजों व अपनी मूल संस्कृति एवं इतिहास में कोई आस्था नही रखते बल्कि अपने ही गैर मुस्लिम देशवासियों के प्रति घृणा करने के साथ साथ लूटमार व मारकाट आदि अत्याचारों से उनको भयभीत करने से भी नही चूकते। ऐसा कहा जाता है कि इस प्रकार के अत्याचारों के लिये आक्रामक बने रहने वालों को ही सच्चा मुसलमान माना जाता है।अतः कोई इस धोखे में न रहें कि इस्लाम शांति व प्रेम का संदेश देने वाला धर्म/मजहब है। ये तथाकथित शांतिदूत अपनी अपरिवर्तनीय कट्टरपंथी विद्याओं से यही सीखते और सिखाते है कि दुनिया में गैर ईमानवालों और अविश्वासियों को जीने का अधिकार ही नही। देवबंद में स्थित इस्लाम जगत की प्रमुख संस्था दारुल-उलूम व अन्य इस्लामिक संस्थाओं से प्रेरित होकर देश-विदेश के विभिन्न भागों में लाखों मकतब, मदरसे व मस्जिदें स्थापित हो चुकी है जिनका मुख्य उद्देश्य जिहाद के लिये जीना और जिहाद के लिये ही मरना माना जाता है। क्या ऐसे में जमीयत उलेमा-ए-हिन्द द्वारा पोषित यूथ क्लब से सैकड़ों-हजारों मौलानाओं को यह आशा बंधी होगी कि ऐसे प्रशिक्षित युवक इस्लामिक चक्रव्यूह में भारत को घेरने में उनका सहयोग करेंगे और भारत को दारुल-इस्लाम बनाने का उनका सदियों पुराना सपना सच हो सकेगा ? क्या भारत सरकार देश के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप को बिगाड़ने वाले ऐसे षड्यंत्रकारियों के प्रति कोई वैधानिक कार्यवाही कर सकती है ? जब सामान्यतः विवादित मठों और मंदिरों का सरकार अधिकरण कर लेती है तो फिर देश की मुख्य धारा से दूर करके देशवासियों में अलगाववादी भावना भरने वाले मदरसों व मस्जिदों का अधिकरण राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से और भी आवश्यक हो जाता है। आज सम्पूर्ण राष्ट्रवादी समाज देश के इस्लामीकरण या दारुल-इस्लाम बनाये जाने के विरुद्ध है परंतु ऐसे सशक्त इस्लामिक चक्रव्यूह की बढ़ती एक और चुनौती का सामना कैसे किया जायेगा , इसका चिंतन आवश्यक व अनिवार्य है ?

अतः आज यह सोचना अति महत्वपूर्ण है कि क्या भारतीय मुस्लिम समाज अपने बच्चों को भारतीय संस्कृति व नैतिक मानवीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा देकर उनमें गैर मुस्लिमों के प्रति घृणा की भावना को समाप्त करने के आवश्यक उपाय करेगा ? क्या जमीयत उलेमा हिन्द व अन्य मुस्लिम संस्थायें कभी ऐसे प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना करेंगी जिसमें ऐसा मुस्लिम युवा तैयार हो जो 'अरब व पाकिस्तान' के स्थान पर 'भारत' को अपना आदर्श मान कर अपने पूर्वजों की संस्कृति को अपनाये। क्यों नही कोई मुस्लिम सुधारवादी व बुद्धिजीवी नेता मदरसों को केवल राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति के अनुरूप बना कर इस्लामिक आतंकवाद पर अंकुश लगाने का साहस करता ? इस्लामिक चक्रव्यूह में भारत को घेरने की बार बार चुनौती देने वाले कट्टरपंथी मुस्लिम समाज को अपने धर्म ग्रंथ कुरान की उन आपत्तिजनक आयतों में संशोधन करना होगा जो अविश्वासियों के प्रति जिहाद करने को उकसाती है। जमीयत उलेमा-ए-हिन्द को राष्ट्र की मुख्य धारा में जोड़ने के लिये मुस्लिम समाज को ऐसा प्रशिक्षण देना चाहिये जिससे वे देश के संविधान का सम्मान करें और भारत की 'वसुधैव कुटुम्बकम' की संस्कृति को अपनाते हुए 'सर्वजन हिताय व सर्वजन सुखाय' में विश्वास करना सीखे। अतः वर्तमान आधुनिक युग में परिवर्तित परिस्थितियों के अनुकूल स्वयं को ढालना ही जीवन को भयमुक्त करके सुरक्षित रखने व सेवा करने का सर्वोत्तम उपाय है।

जनसंख्या नियंत्रण कानून: सर्वोच्च न्यायालय का रुख तथा बढ़ती चुनौतियां

लेखक पृथ्वी राज चौहान : परिचय

सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता, हिन्दू राइट एक्टिविस्ट, नेशनल फोरम फॉर इक्वल डेमोक्रेटिक राइट्स के अध्यक्ष तथा इस पत्रिका के उप संपादक हैं, लेखक ने देश में बेलगाम जनसंख्या वृद्धि पर चिंता व्यक्त करती हुई जनहित याचिका 'पृथ्वी राज चौहान विरूद्ध भारत सरकार' सुप्रीम कोर्ट में दाखिल की थी।

आज का हिंदुस्तान दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के साथ साथ विश्व का सबसे अपरिपक्व लोकतंत्र भी है। आज के समय में जब सभी देशों के राष्ट्र प्रमुख भविष्य में आने वाली समस्याओं को ध्यान में रखकर नीतियों का निर्धारण कर रहे हैं तब हिंदुस्तान के नेता अपने त्वरित स्वार्थ की पूर्ति के लिए सम्पूर्ण मानव सभ्यता को दाव पर लगाने पर आमद हैं।

आज हिन्दुस्तान के साथ साथ सभी हिन्दुओं के भविष्य पर प्रश्चिन्ह खड़ी करती एकमात्र समस्या इस देश की बेलगाम जनसंख्या है और इस बेलगाम जनसंख्या में भी उन जेहादियों की संख्या सबसे ज्यादा है जो ना सिर्फ हमारे देश, हमारे धर्म अपितु

सम्पूर्ण विश्व के लिए खतरा है, इस तथ्य से एक बात तो स्पस्ट है कि आने वाले समय में भारत किसी वस्तु का निर्यात करे या ना करे, किन्तु कुछ ही वर्षों में हमारा देश इस्लामिक जिहादियों का सबसे बड़ा निर्यातक देश होगा।

ऐसे कठिन समय में जब सरकार आंख मूंद कर बैठी है, विकाश का झुटा ढोंग कर रही है तथा जनसंख्या नियंत्रण कानून बनने की जगह बच्चे के पैदा होने पर छ हजार रुपए देकर पुरस्कृत एवं प्रोत्साहित कर रही है तब सरकार के नाम पर एक व्यक्ति विशष व विकाश का महीमामंडन पूरी सरकार की उदासीनता बयान करता है जबकि इतिहास गवाह है, बिना जनसंख्या को नियंत्रित किए किसी भी देश में विकाश संभव ही नहीं है, चीन जैसे देशों ने इसकी जरूरत को 1979 में समझा, जिसका परिणाम आज पूरी दुनिया के सामने है हालाकि चीन के विकाश के बड़े कारणों में वहां पर मुस्लिम आबादी का ना के बराबर होना भी शामिल है।

जब मुझे लगा कि अब सिर्फ सरकार के भरोसे नहीं रहा जा सकता तो मैंने सुप्रीम कोर्ट में जन हित याचिका दाखिल की, मैंने अपनी इस याचिका में सुप्रीम कोर्ट से प्रार्थना की कि अब इस देश में मानव सभ्यता की रक्षा सिर्फ चीन की तर्ज पर कठोर जनसंख्या नियंत्रण कानून बना कर ही संभव है, आज हमारे देश में 65 प्रतिशत से ज्यादा आबादी 35 वर्ष से कम आयु के युवाओं की है, अगर सरकार इन्हे समय से रोजगार नहीं दे पाई तो आगामी 5-10 वर्षों के अंदर गृहयुद्ध की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता, इसके अलावा अपनी इस याचिका में मैंने जनसंख्या वृद्धि के अनेक भयावह आंकड़ों का जिक्र किया, हमारे देश के पास दुनिया की सिर्फ दो प्रतिसत भूमि है और उस पर दुनिया की 18 प्रतिसत आबादी निवास करती है, 2022 तक हम जनसंख्या के मामले में चीन को पीछे छोड़ देंगे जो हमारे देश से तीन गुना बड़ा भूभाग है, इसके अलावा 2050 तक भारत में दुनिया की सबसे ज्यादा मुस्लिम आबादी होगी जो सबसे ज्यादा चिंता का विषय है, ये आंकड़े यह बताने के लिए काफी हैं कि क्यों आज हमारे देश में 'लड़कर लेंगे आजादी' और 'भारत तेरे टुकड़े होंगे' जैसे नारे आम बात है।

मैंने इस याचिका में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के जावेद विरूद्ध हरियाणा सरकार, 2003, के फैसले का जिक्र भी किया जिसमें सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा सरकार के जनसंख्या नियंत्रण के प्रयास को सराहा था। इसके अलावा अनेक आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक आस्थिरत के आंकड़े देते हुए माननीय सर्वोच्च न्यायालय से आग्रह किया था कि माननीय न्यायालय इस जनसंख्या वृद्धि के सही कारणों की गंभीरता को समझते हुए तुरंत भारत सरकार को कठोर जनसंख्या नियंत्रण कानून बनने के लिए निर्देशित करे।

मैंने इस उम्मीद से सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था कि अनेक छोटी छोटी समस्याओं जैसे राष्ट्रगान में खड़ा होना है कि नहीं, जैसे मुद्दों पर केंद्र सरकार को दिशनिर्देश देने वाला कोर्ट इस महत्वपूर्ण विषय पर अपनी चिंता व्यक्त करेगा परन्तु सुप्रीम कोर्ट ने हिंदुस्तान की सबसे बड़ी समस्या पर अपनी आंखे मूंद ली तथा किन्ही अनभिज्ञ कारणों से सुप्रीम कोर्ट ने इसे नीतिगत मामला बताते हुए, केंद्र सरकार के समक्ष इसे उठाने का सुझाव दिया।

आज जब देश में शरिया आदालतों के खुलने की बातें हो रही हैं और इस देश के मुसलमान इस देश का कानून मानने से इंकार कर रहे हैं तब सुप्रीम कोर्ट का अपने अस्तित्व की रक्षा भी ना करना सबसे आत्मघाती कदम है।

मैं सर्वोच्च न्यायालय की गरिमा का खयाल रखते हुए इस फैसले पर उंगली नहीं उठा रहा हूं परन्तु सुप्रीम कोर्ट को अगर अपनी गरिमा और अस्तित्व को कायम रखना है तो उन्हें भी समझना होगा कि अगर बढ़ती हुई जनसंख्या पर लगाम नहीं लगाई गई तो ना तो देश में संविधान बचेगा और ना ही इस संविधान का रक्षक 'सुप्रीम कोर्ट'।

घटता हिन्दू मिटता देश द्वितीय धर्म संसद

गुरुग्राम। हिन्दू की भयावह स्थिति पर गम्भीर चिंतन करने के लिये जगदम्बा महाकाली डासना वाली के परिवार के आह्वान पर गुरुग्राम के सेक्टर 10 अ स्थित श्रीकृष्ण मंदिर में दो दिवसीय धर्म संसद का शुभारंभ हुआ। धर्म संसद में देश के कोने कोने आये संत महात्मा और हिन्दू कार्यकर्ताओ ने भाग लिया।

हिन्दू धर्मगुरूओ की उदासीनता और नेताओं की कायरता के कारण सनातन भारत नही बल्कि इस्लामिक भारत बनेगा आतंक का विश्वगुरु-यति नरसिंहानन्द सरस्वती

धर्म संसद के उद्देश्य को सबके सामने रखते हुए अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज ने पूरे देश में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों को सबके सामने रखते हुए बताया की हिन्दुओं के कायर नेताओ के कारण हिन्दू अपने आजादी को सौ साल भी सुरक्षित नही रख सके। लगभग हजार साल के संघर्ष और अगणित बलिदानों के बाद हमारे पूर्वजों ने हमे आजादी दिलवाई जो हमारे राजनैतिक सिस्टम की विफलता के कारण अब खोने के कगार पर है। झूठे नेताओ के प्रपंच का शिकार होकर हमारे धर्म गुरुओं और सामाजिक कार्यकताओं ने हमे विश्वगुरु बनाने के झूठे सपने दिखाये जबकि सत्य तो ये है की संपूर्ण हिन्दुओं के विनाश के बाद बनने वाला इस्लामिक भारत ही पूरी दुनिया का गुरु होगा और इसके लक्षण अब पूरी तरह से स्पष्ट दिखाई देने लगे हैं। आज पुरे विश्व में आतंकवाद फैलाने वाले सबसे बड़े इस्लामिक मदरसे भारत में हैं और भारत के राजनैतिक तंत्र में इतनी हिम्मत नही है की उनकी ओर देख भी सके। हिन्दू नेताओ की कायरता से सम्पूर्ण भारतवर्ष अब इस्लामिक गुलामी में जाने के लिये तैयार है। आज यह खतरा केवल भारतवर्ष के लिये नहीं है बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिये है। हिन्दू बाहुल्य भारत तो विश्वगुरु नही बन सका परन्तु मुस्लिम भारत वास्तव में इस्लामिक जिहादी आतंकवाद का विश्वगुरु बनेगा और भारत की उर्वरा भूमि और अतुल्य सम्पदा के बूते पर सम्पूर्ण विश्व और मानवता के लिये सबसे बड़ा खतरा बनेगा।

घटती हुए हिन्दू जनसँख्या अनुपात ने संपूर्ण मानवता को विनाश की ओर धकेला-जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी नरेंद्रानंद सरस्वती जी महाराज

धर्म संसद के मुख्य वक्ता जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी नरेंद्रानंद सरस्वती जी महाराज ने कहा की वास्तव में हिन्दू समाज के भारतवर्ष में घटते हुए जनसँख्या अनुपात ने सम्पूर्ण मानवता के सामने एक बहुत बड़ी चुनौती खड़ी कर दी ।यदि भारतवर्ष में मुस्लिम जनसँख्या का विस्फोट थमा नही तो वो दिन दूर नही जब भारतवर्ष गृहयुद्ध में गर्क होकर अपनी परमाणु शक्ति के बल पर सम्पूर्ण विश्व को विनाश के कगार पर ले जायेगा। भारत सरकार को इसे लेकर अविलम्ब ठोस कदम उठाने चाहिये और चीन जैसा एक कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून बनाना चाहिये।

उन्होंने यह भी कहा की भारतवर्ष के हिन्दुओं ने वर्तमान सरकार को कठोर कानून बनाने के लिये पर्याप्त राजनैतिक शक्ति दे दी है परंतु सरकार की तरफ से कोई सकारात्मक पहल अभी दिखाई नही दे रही है ।यदि 2019 के लोकसभा चुनाव से पहले चीन जैसा कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून नही बना तो फिर ये कभी नही बन पाएगा और बढ़ती हुई इस्लामिक जिहादियो की संख्या हर चीज को लील लेगी।

धर्म संसद को संबोधित करते हुए रुड़की से आये जूना अखाड़े के महामंडलेश्वर स्वामी यतींद्रानंद गिरी जी महाराज ने कहा की सम्पूर्ण हिन्दू समाज की आस्था के प्रतीक भगवान राम का अपनी जन्मस्थली में फटे तिरपाल में रहना हिन्दुओं की दुर्दशा को प्रदर्शित करने में सक्षम है। हिन्दुओं के सभी आस्था के केंद्रों पर विधर्मियो का कब्जा है। हिन्दुओं के पास न तो रामजन्म भूमि है,न ही श्रीकृष्ण जन्मभूमि और न ही काशी विश्वनाथ। आज हिन्दुओं को गम्भीरता से सोचना चाहिये की उन्हें आजादी से आखिर मिला क्या?

धर्म संसद में पहले दिन 21 जुलाई 2018 को पारित हुए पांच प्रस्ताव

1. पांच से कम बच्चे पैदा करने वाले व्यक्ति को सच्चा हिन्दू न माना जाए।
2. पाकिस्तान को शत्रु व आतंकवादी देश घोषित करने के लिये सभी संतो के रक्त से प्रधानमंत्री को पत्र लिखा जाये।
3. जातीय वैमनस्यता को खत्म करने के लिये देश के सभी प्रमुख नगरों में हिन्दुओं की सभी 36 बिरादरियों की पंचायत और सहभोज आयोजित करे संत समाज जिसकी शुरूआत हिन्दुओं की आध्यात्मिक राजधानी हरिद्वार से की जाए।
4. सभी सन्त अपने आश्रमो और मंदिरों में गुरुकुल और अखाड़े शुरू करें जिससे हिन्दू मानसिक और शारीरिक रूप से मजबूत बने और उन्हें सही संस्कार मिले।
5. मुस्लिम जिहादियों द्वारा किये जा रहे लव जिहाद और रेप जिहाद को समाप्त करने के लिये सरकार के भरोसे न रहकर अपनी शक्ति खड़ी करे हिन्दू समाज।

आज धर्म संसद में अखिल भारतीय संत समिति के राष्ट्रिय राजधानी क्षेत्र के अध्यक्ष महामण्डलेश्वर स्वामी अनुभूतानंद गिरी जी

महाराज,महामण्डलेश्वर स्वामी देवेंद्रानंद गिरी जी महाराज,महामण्डलेश्वर स्वामी नवलकिशोरदास जी महाराज,महामण्डलेश्वर स्वामी निलिमानंद जी महाराज,महामण्डलेश्वर स्वामी रामनरेशदास जी महाराज,महामण्डलेश्वर स्वामी बालेश्वर दास जी महाराज,महामण्डलेश्वर स्वामी कंचन गिरी जी महाराज,स्वामी भोला गिरी जी महाराज,स्वामी श्री श्री भगवान जी महाराज,श्री महंत स्वामी रामा पूरी जी महाराज,महंत सतीशदास जी महाराज तथा अन्य वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

22 जुलाई 2018

गुरुग्राम के सेक्टर 10 स्थित श्रीकृष्ण मंदिर में हिन्दू स्वाभिमान (जगदम्बा महाकाली डासना वाली का परिवार) के तत्वाधान में हो रही धर्म संसद के दूसरे दिन भारत के कोने कोने से आये संतो ने वर्तमान में धर्म की स्थिति को लेकर गम्भीर मंथन किया।

धर्म संसद का शुभारंभ जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी नरेंद्रानंद सरस्वती जी महाराज, आनन्दपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी बालकानंद गिरी जी महाराज, नामधारी सिक्ख संप्रदाय के सद्गुरु ठाकुर दिलीप सिंह जी महाराज, जूना अखाड़ा में अंतर्राष्ट्रीय मंत्री दुधेश्वरनाथ पीठाधीश्वर स्वामी नारायण गिरी जी महाराज ने सभी संतो और धर्म संसद के मुख्य संयोजक विक्रम यादव व अखिल भारतीय ब्रह्मऋषि महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुनील त्यागी जी के साथ दीप प्रज्वलित करके की।

उसके बाद सभी संतो ने अपने रक्त से भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर उनसे पाँच सूत्रीय मांग की।

रक्त से यह पत्र अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी ने लिखा।इस पत्र में चीन जैसे कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून की मांग,पाकिस्तान का मोस्ट फेवरेट नेशन का दर्जा समाप्त करके आतंकवादी और शत्रु देश घोषित करने की माँग, रामजन्म भूमि पर अविलम्ब अध्यादेश की माँग,समान नागरिक संहिता लागू करने की माँग और धारा 370 खत्म करने की मांग की गयी।

दूसरे दिन धर्म संसद की अध्यक्षता जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी नरेंद्रानंद सरस्वती जी महाराज और संचालन प्राचीन देवी मंदिर डासना की महंत यति माँ चेतनानंद सरस्वती जी ने किया।

श्रीमदभगवद गीता अब हिन्दू की एकमात्र और अंतिम शरण-यति नरसिंहानन्द सरस्वती

आज धर्म संसद को संबोधित करते हुए अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज ने कहा की आज हिन्दू समाज की अभूतपूर्व दुर्गति का सबसे बड़ा कारण हिन्दू का अपने धर्म के प्रति अज्ञान है। हमारा दुर्भाग्य ये है की लगभग एक हजार साल की गुलामी और बंटवारे के बाद भी हिन्दुओं को जो देश मिला उसका संविधान मूल रूप से हिन्दू विरोधी है।हमारे देश धर्मनिरपेक्षता के नाम पर धर्म और संस्कृति की जो घोर उपेक्षा हुई उसका परिणाम आज हमारे सामने है।आज हम हर तरह से अपने धर्म से दूर होकर केवल पाखण्ड और प्रपंच को ही धर्म मान बैठे हैं।इसी कारण

आज हमारे बच्चे धर्म से बहुत दूर होते जा रहे हैं और धर्म व अध्यात्म से उनकी दुरी उन्हें अकेलेपन,अवसाद और निराशा के गर्त में धकेल रही है।ऐसे बच्चे न तो देश और न ही धर्म के महत्व को समझ पा रहे हैं।

उन्होंने कहा की यदि आज हिन्दू को अपना अस्तित्व बचाना है तो हिन्दू को अपने धर्म के मूल की तरफ आना पड़ेगा और धर्म का मूल श्रीराम,श्रीकृष्ण और परशुराम हैं।अब इनके नाम जप की नहीं बल्कि इनके जैसा बनने की जरूरत है और इसका एकमात्र रास्ता श्रीकृष्ण जी के द्वारा प्रदत्त ग्रन्थ श्रीमद्भगवद गीता के मार्ग से होकर जायेगा। यदि हिन्दू ने मानव जीवन में गीता के तीन मुख्य सूत्र योग,यज्ञ और युद्ध को नही अपनाया तो बहुत जल्दी सम्पूर्ण हिन्दू समाज का विनाश हो जायेगा।

रोज मरते सैनिक राजनैतिक कायरता की पराकाष्ठा का परिणाम झ्र जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी नरेंद्रानंद सरस्वती जी महाराज

आज की धर्म संसद की अध्यक्षता कर रहे जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी नरेंद्रानंद सरस्वती जी महाराज ने धर्म संसद का मार्गदर्शन करते हुए कहा की आज जिस तरह से रोज हमारे सैनिकों की लाशें घर आ रही हैं ये राजनैतिक तंत्र की कायरता और विफलता का परिणाम है।आज सैनिकों का मनोबल गर्त में जा चूका है और सैनिकों से लड़ने वाले आतंकवादियों व उनके बौद्धिक समर्थको का मनोबल आकाश तक जा पहुँचा है। पूरी दुनिया में केवल भारत का फौजी है जिसको पत्थर मारा जा सकता है या थप्पड़ मारा जा सकता है वरना किसी भी स्वाभिमानी देश का फौजी अपने देश के लिये बलिदान तो हो सकता है पर अपमानित नही हो सकता।जो कौम अपने सैनिक के सम्मान की रक्षा नही कर सकती उसकी रक्षा तो स्वयं भगवान भी नही कर सकते। आज के नेताओ को इस विषय पर गम्भीर आत्मचिंतन की जरूरत है जो केवल वोटबैंक की राजनीति के कारण हमारे सैनिकों की दुर्गति करवा रहे हैं। अगर हमारे सैनिकों का मबोबल टूट गया तो क्या ये नेता हथियार उठाकर दुश्मन से लड़ने जाएंगे या अपने परिवार को लेकर भारत को छोड़कर भाग जाएंगे।

धर्म संसद को संबोधित करते हुए महामंडलेश्वर स्वामी सर्वानन्द सरस्वती जी महाराज ने कहा की धर्म की रक्षा के लिये धर्म संसद एक बहुत महत्वपूर्ण आयोजन है जिसके लिए सभी हिन्दुओं को जगदम्बा महाकाली डासना वाली के परिवार को धन्यवाद और साधुवाद देना चाहिये। अब धर्म संसद को और अधिक विस्तार देने की जरूरत है। ये जिम्मेदारी अकेले डासना मंदिर की नहीं है बल्कि इसमें सभी को सहयोग करना चाहिये वरना इतिहास हमे कभी क्षमा नही करेगा।आज भी यदि सन्त समाज धर्म की रक्षा के लिये नही खड़ा हुआ तो इतिहास सदैव संत समाज को धर्म के विनाश का दोषी मानेगा।

धर्म संसद में नामधारी संप्रदाय के सद्गुरु ठाकुर दिलीप सिंह जी महाराज,आनंदपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी बालकानंद गिरी जी महाराज,महामंडलेश्वर स्वामी प्रज्ञानंद गिरी जी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी सर्वानन्द सरस्वती जी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी हरिओम गिरी जी महाराज,महामंडलेश्वर स्वामी नवलकिशोर दास जी महाराज, श्री श्री भगवान जी महाराज, श्रीमहंत स्वामी भोला गिरी जी महाराज,स्वामी रामा पूरी जी महाराज,स्वामी अगस्त गिरी जी महाराज,यति कृष्णानंद सरस्वती जी महाराज,स्वामी अधेश्वरानंद जी महाराज तथा अन्य वरिष्ठ संतो ने अपना मार्गदर्शन दिया।

धर्म संसद के आयोजन में राष्ट्र के लिये लड़ने वाली संस्था साइबर सिपाही और सूर्या बुलेटिन की विशेष भूमिका रही।

हिन्दू हाथ में इस्लाम की तलवार

बादशाह अकबर के समय मुहावरा शुरू हुआः ह्यहिन्दू हाथों में इस्लाम की तलवारह्न। तब जब अकबर ने राजपूतों से समझौता कर अपने साम्राज्य के बड़े पदों पर रखना शुरू किया। जिन राजपूतों ने चाहे-अनचाहे पद लिए, उन्हें अकबर की ओर से हिन्दू राजाओं के विरुद्ध भी लड़ने जाना ही होता था। सो, जिस इस्लामी साम्राज्यवाद के विरुद्ध हिन्दू पिछली आठ सदियों से लड़ते रहे थे, उस में पहली बार विडंबना तब जुड़ी जब इस्लाम की ओर से लड़ने का काम कुछ हिन्दुओं ने भी उठा लिया।

वह परंपरा अभी तक चल रही है, बल्कि मजबूत भी हुई है। आम गाँधी-नेहरूवादी, सेक्यूलर, वामपंथी हिन्दू वही करते हैं। इतनी सफलता से कि आज इस मुहावरे का प्रयोग भी वर्जित-सा है! मीडिया व बौद्धिक जगत तीन चौथाई हिन्दुओं से भरा होकर भी हिन्दू धर्म-समाज को मनमाने लांछित, अपमानित करता है। किन्तु इस्लामी मतवाद या समाज के विरुद्ध एक शब्द बोलने की अनुमति नहीं देता। इस रूप में, हिन्दू धर्म के प्रति जो बौद्धिक-राजनीतिक रुख पाकिस्तान, बंगलादेश में है, वही भारत में!

ऐसे ही योद्धा विद्वान लेखक तथा कांग्रेस नेता शशि थरूर हैं। भाजपा के 2019 चुनाव जीतने की

शंकर शरण

स्थिति में उन्होंने यहाँ ह्यहिन्दू पाकिस्तानह्न बनने का डर जताया। फिर कहा कि भारत में चार सालों में सांप्रदायिक हिंसा बढ़ी, कि यहाँ आज ह्यह्यएक मुसलमान की अपेक्षा एक गाय अधिक सुरक्षित है।ह्नह्न

थरूर ने वर्ष 2016 में 869 सांप्रदायिक दंगे होने का उल्लेख किया। पर मृतकों में मात्र तीन नाम लिएः जुनैद, अब्बास, अखलाक। जो कुछ पत्रकारों, बुद्धिजीवियों की चुनी हुई कृपा से देश-विदेश में सैकड़ों बार दुहराए जा चुके हैं। यानी दंगों में हिन्दू नहीं मरे। न इसी दौरान यहाँ किसी मुस्लिम ने किसी हिन्दू की हत्या की!

सांप्रदायिक दंगों पर ऐसा कथन ह्यसच छिपाने, झूठ फैलानेह्न का ही उदाहरण है। भारत में दंगों का सौ साल से अनवरत इतिहास है। इस पर कौन सा शोध हुआ? न्यायिक आयोगों की रिपोर्टें, आँकड़े क्या कहते हैं? गंभीरता से इन प्रश्नों का उत्तर ढूँढने पर उलटा नजारा दिखेगा।

दंगे किस ने शुरू किए, तथा कितने हिन्दू व कितने मुस्लिम मरे - इन दो बातों को छोड़ कर सारा प्रचार होता है। एक बार कांग्रेस शासन में ही, संसद में गृह मंत्रालय की रिपोर्ट में कहा गया था कि वर्ष 1968 से 1970 के बीच हुए 24 दंगों में 23 दंगे मुस्लिमों द्वारा शुरू किए गए। वह कोई अपवाद काल नहीं था। आज भारत में कोई जिला भी नहीं जहाँ से मुसलमानों को मार भगाया गया। जबकि पूरे कश्मीर प्रदेश के अलावा, असम और केरल में भी कई जिले हिन्दुओं से लगभग खाली हो चुके। अब जम्मू, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और बिहार में भी कैराना जैसे क्षेत्र बन और बढ़ रहे हैं।

इसलिए, दंगे इस्लामी राजनीति की प्रमुख तकनीक हैं। स्वयं जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि मुस्लिम लीग का मुख्य काम सड़कों पर हिन्दू-विरोधी दंगे करना है। स्वतंत्र भारत में भी यह नहीं बदला। हाल का सब से बड़ा कांड भी इस का प्रमाण है। पहले मुस्लिमों ने गोधरा में 59 हिन्दू तीर्थयात्रियों को जिन्दा जला दिया! तब गुजरात दंगा हुआ। ऐसे तथ्य छिपाकर थरूर इस्लामी आक्रामकता को ही बढ़ाते हैं।

कई दलों ने यहाँ राजनीतिक उद्देश्यों से हिन्दू-विरोधी प्रचार किया है। मुस्लिम ह्यसुरक्षाह्न के नाम पर उन्हें विशेषाधिकार, विशेष आयोग, संस्थान, अनुदान, आदि दे-देकर उन के वोट लिए हैं। सात वर्ष पहले कांग्रेस सरकार द्वारा ह्यसांप्रदायिक और लक्षित हिंसा निरोध विधेयकह्न (2011) उसी की भयंकर परिणति थी। उस में मान लिया गया था कि हर सांप्रदायिक हिंसा के दोषी सदैव हिन्दू और पीड़ित मुस्लिम होंगे! उसी आधार पर ऐसी निरोधक

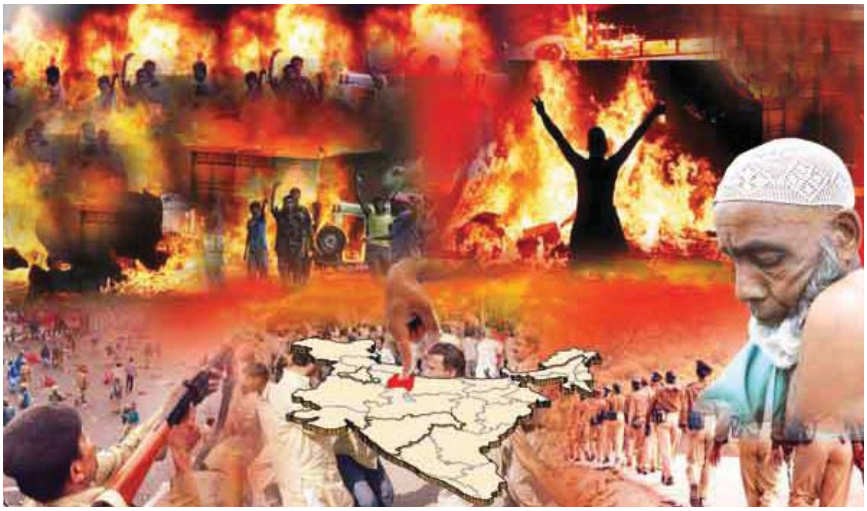

और दंड-व्यवस्था प्रस्तावित हुई थी कि व्यवहारतः यहाँ तानाशाही मुगल-शासन बन जाता।

यहाँ हिन्दू-मुसलमानों के संबंध में उत्पीड़ित-उत्पीड़क का पूरा मामला ऐसा ऑर्वेलियन है कि इस के पाखंड और अन्याय को सामान्य भाषा में रखना कठिन है! जबकि यह कोई दूर देश या सदियों पुरानी बातें नहीं। सामने होने वाली दैनं-दिन घटनाएं झुठलायी, विकृत की जाती हैं।

जैसे, चार साल पहले सहारनपुर में कांग्रेस के लोक सभा प्रत्याशी इमरान मसूद ने खुली सभा में कहा कि वह नरेंद्र मोदी को टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा। उपस्थित भीड़ ने ताली बजाई। उस से पहले अकबरुद्दीन ओवैसी ने कहीं और बड़ी सभा में घंटे भर उस से भी अधिक हिंसक भाषण अनवरत तालियों के बीच दिया था। यह सब पीड़ित का नहीं, बल्कि हमलावर का अंदाज है। जिस में हिन्दुओं को भेड़-बकरी मानकर चला जाता है।

इसीलिए, किसी घटना को अलग, अधूरा परोस कर थरूर जैसे लेखक और पार्टियाँ भारत और हिन्दुओं की भारी हानि करते रहे हैं। यहाँ हिन्दू मरते, अपमानित, विस्थापित होते, इंच-इंच अपनी भूमि मुस्लिमों के हाथों खोते हुए भी उलटे आक्रामक शैतान जैसे चित्रित किए जाते हैं।

यह संयोग नहीं, कि सांप्रदायिक दंगे गंभीरतम विषय होते हुए भी यहाँ इस पर शोध, तथ्यवार विवरण, आदि नहीं मिलते! इस के पीछे सचाई छिपाने की सुविचारित मंशा है। खोजने पर एक विदेशी विद्वान डॉ. कोएनराड एल्स्ट की पुस्तक ह्यकम्युनल वायोलेंस एंड प्रोपेगंडाह्न (वॉयस ऑफ इंडिया, 2014) मिलती है, जिस में यहाँ सांप्रदायिक दंगों का एक सरसरी हिसाब है। यह पुस्तक भारत में गत छः-सात दशक के दंगों की समीक्षा है। कायदे से ऐसी पुस्तक सेक्यूलर-वामपंथी प्रोफेसरों, पत्रकारों को लिखनी चाहिए थी जो सांप्रदायिकता का रोना रोते रहे हैं! पर उन्होंने जान-बूझ कर नहीं लिखा।

यदि कोएनराड की पुस्तक को डॉ. अंबेदकर की ह्यपाकिस्तान ऑर पार्टीशन ऑफ इंडियाह्न (1940) के साथ मिला कर पढ़ें, तो दंगों की असलियत दिखेगी। दंगों के हिसाब में पाकिस्तान और बंगलादेश वाली भारत-भूमि के आँकड़े भी जोड़ने जरूरी हैं। उन दोनों देशों में इधर सैकड़ों मंदिरों के विध्वंस का ह्यमूल कारणह्न यहाँ बाबरी-मस्जिद गिराने को बताया गया था। अर्थात, तीन देश हो जाने के बाद भी हिन्दू-मुस्लिम खून में आपसी संबंध है। अतः तमाम हिन्दू हानियाँ जोड़नी होगी। बाबरी-मस्जिद गिरने से पहले, केवल 1989 ई. में, बंगला देश में बेहिसाब मंदिर तोड़े गए थे। उस से भी पहले वहाँ लाखों हिन्दू निरीह कत्ल हुए थे।

सच यह है कि, 1947 से 1989 ई. तक भारत में जितने मुसलमान मरे, उतने हिन्दू पूर्वी पाकिस्तान (बंगलादेश) में केवल 1950 ई. के कुछ महीनों में ही मारे जा चुके थे। आगे भी सिर्फ 1970-71 ई. के दो वर्ष में वहाँ कम से कम दस लाख हिन्दुओं का संहार हुआ। विश्व-प्रसिद्ध पत्रकार ओरियाना फलासी ने अपनी पुस्तकों ह्यरेज एंड प्राइडह्न (पृ. 101-02) तथा ह्यफोर्स ऑफ रीजनह्न (पृ. 129-30) में ढाका में हिन्दुओं के सामूहिक संहार का एक लोमहर्षक प्रत्यक्षदर्शी विवरण दिया है। पूर्वी पाकिस्तान में हुआ नरसंहार गत आधी सदी में दुनिया का सब से बड़ा था! उस के मुख्य शिकार हिन्दू थे, यह पश्चिमी प्रेस में तो आया, पर भारत में छिपाया गया।

पूरा हिसाब करें, तो केवल 1947 ई. के बाद हुई सांप्रदायिक हिंसा में अब तक मुसलमानों की तुलना में नौ गुना हिन्दू मारे गए हैं! पर यहाँ इस्लाम की तलवार थामे बौद्धिक ही प्रभावशाली हैं। हिन्दुओं का पक्ष रखने वाले दर-दर भटकते, खाली हाथ लड़ने को मजबूर है। पार्टियों की सत्ता उठा-पटक से इस दुर्दशा में कोई अंतर न आया। यह भी थरूर जैसों के घमंड और आत्मविश्वास का एक कारण है। वे एक वैश्विक साम्राज्यवादी मतवाद के साथ हैं, इसलिए भी बलवान महसूस करते हैं।

ऐसे अनुचित हमलों से हिन्दू धर्म-समाज पर गहरी चोट पहुँचती है। पीड़ित को ही उत्पीड़क बताया जाता है। जो भारतवर्ष और हिन्दू समाज हजार साल से इस्लामी साम्राज्यवाद की मार झेल रहा है, उसे कोई सहयोग, सहानुभूति मिलना तो दूर, उस के अपने बच्चे उसे ही दुष्ट, हत्यारा बताएं, तो उस की दुर्दशा का अनुमान करना चाहिए।

वास्तविक खतरे से अनजान थरूर ने 'हिंदू पाकिस्तान' और 'हिंदू तालिबान' से हलचल पैदा कर दी

शंकर शरण

हाल में कांग्रेस नेता और लेखक शशि थरूर ने अपने ह्लहिंदू पाकिस्तानह्ल और ह्लहिंदू तालिबानह्ल आदि विचारों से हलचल पैदा कर दी। जब आलोचना हुई तो उन्होंने दो लेख लिखकर अपने विचार फिर दोहराए और नए बिंदु भी जोड़े। उन बातों को अन्य कांग्रेसी निजी विचार कह रहे हैं, किंतु इसमें संदेह नहीं कि वैसी बातें अनेक प्रोफेसर, पत्रकार और बुद्धिजीवी अपनी-अपनी तरह से कहते रहे हैं। इसलिए उन विचारों को गंभीरता से लेना चाहिए। उनका राजनीतिक महत्व है। ऐसे विचार हमारे शैक्षिक जगत को प्रभावित करते हैं। वस्तुतः ऐसी बातें कहना स्वयं हमारी प्रचलित शिक्षा और राजनीतिक विमर्श से प्रभावित है। यह विमर्श देश से निकल कर विदेशों तक जाता है और भारत की छवि और वैदेशिक संबंधों को प्रभावित करता है।

यद्यपि थरूर में भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति आदर है, किंतु हिंदू इतिहास से संबंधित उनके मंतव्य तथ्यपूर्ण नहीं हैं। उन्होंने कहा कि यदि 2019 में भाजपा ने लोकसभा चुनाव पुनः जीता तो भारत हिंदू पाकिस्तानह्ल बन जाएगा जहां ह्यएक ही रिलीजन का दबदबाह्ल होगा। ऐसा कहते हुए थरूर इस्लाम और हिंदू धर्म दोनों को ह्यरिलीजनह्ल कहते हैं। धर्म और रिलीजन नितांत भिन्न धारणाएं हैं। चूंकि इसे गंभीर विदेशी विद्वान भी जानते हैं अतः यह कल्पना अनर्गल है कि ह्यएक रिलीजन के वर्चस्वह्ल से पाकिस्तान में जो दुर्गति हुई वही भारत में हिंदू धर्म के वर्चस्व से होगी। सचाई ठीक उलटी है।

जिस हद तक आज भी भारत में हिंदू वर्चस्व है उसी कारण यहां सेक्युलरिज्म और अन्य धर्मावलंबियों का सम्मानजनक स्थान है। यह तथ्य मौलाना बुखारी, प्रो. मुशीर-उल-हक, एमआरए बेग जैसे अनेक विद्वान भी मानते रहे हैं। उन्होंने पाकिस्तान में इस्लामी वर्चस्व की तुलना में ही यह नोट किया था। दूसरी ओर यह जगजाहिर तथ्य है कि जब भारत में केवल हिंदू थे तभी यह देश धन-वैभव, ज्ञान-विज्ञान-कला, हर क्षेत्र में विश्व में अग्रणी था। भारत का सांस्कृतिक प्रभाव संपूर्ण एशिया, रूस के पूर्वी हिस्से और अरब देशों तक फैला हुआ था। यही नहीं दुनिया में कहीं भी उत्पीड़ित लोगों, समुदायों के लिए यह सदैव उदार शरणस्थली रहा।

यहूदी और पारसी समुदाय इसके उदाहरण हैं जिन्हें हिंदू भारत ने ही शरण और सहायता दी। इसलिए शत-प्रतिशत हिंदू देश उस धारणा के ठीक विपरीत होगा जिसका भय थरूर को सता रहा है। सो ह्यभाजपा-आरएसएस के हिंदू राष्ट्रह्ल को ह्यपाकिस्तान की दर्पण-छविह्ल कहना निराधार कल्पना है। भाजपा के किसी दस्तावेज में हिंदू राष्ट्र का उल्लेख तक नहीं। जनसंघ वाले समय से ही वे सदैव ह्यबेहतर सेक्युलरह्ल साबित होने में लगे रहे हैं। वह नीति यथावत है। भाजपा कांग्रेसी नीतियों को ही ह्यअधिक ईमानदारीह्ल से लागू करती रही है। इसलिए भाजपाई एकाएक बंटाधार कर देंगे, यह सोचना व्यर्थ है। थरूर को संविधान संशोधन का डर भी है, लेकिन यह तो मामूली बात है। संविधान-परिवर्तन कोई भयावह नहीं होता। यह तो समय और जरूरत से करना होता है। संविधान को स्वयं कांग्रेस ने 1976 में बड़े पैमाने पर विरुपित किया था।

स्वतंत्रता आंदोलन पर भी थरूर का कथन दोषपूर्ण है। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को ह्यदोह्ल विचारों से संचालित बताया। एक गांधीवादी कांग्रेस और दूसरा मुस्लिम लीग। किंतु एक और अधिक प्रभावशाली विचार भी श्री अरविंद के नेतृत्व में ह्यस्वदेशीह्ल का हिंदू विचार भी था। उसी की देन ह्यवंदे मातरमह्ल की प्रतिज्ञा और ह्यवंदे मातरमह्ल गीत था जो स्वतंत्रता-प्राप्ति तक सर्वमान्य राष्ट्रगीत बना रहा।

श्री अरविंद ही ह्यभारतीय राष्ट्रवाद के पैगंबरह्ल माने गए। इस नाम से कांग्रेस के अन्य विद्वान नेता डॉ. कर्ण सिंह की एक पुस्तक भी है। इसी स्वदेशी हिंदू

विचार ने भारतीय राष्ट्रवादी को ह्यसिंह गर्जनाह्ल में बदला था। वही विचार संपूर्ण भारत को अनुप्राणित करता रहा। अतः, नेहरूवाद और इस्लामवाद के अलावा तीसरा स्वदेशी हिंदू विचार भी था। गांधी-नेहरू को भी उसी का सहारा मिलता रहा। यह और बात है कि उन्होंने अंत में इसके साथ धोखा किया।

थरूर यह भूलते हैं कि भारतीय नेताओं ने ह्यएक रिलीजन का वर्चस्वह्ल सिद्धांत स्वीकार नहीं किया। तब 1947 में देश-विभाजन किस सिद्धांत पर हुआ था? वस्तुतः उसे मानकर भी शेष भारत पर लागू न करने से ही फिर वही समस्याएं पनपीं जिनके समाधान के लिए विभाजन हुआ था। जिन्ना और आंबेडकर, दोनों ने चाहा था कि विभाजन के बाद मुसलमान भारत में न रहें। इसे ठुकराना दूसरी भयंकर भूल हुई।

यह पुराने कांग्रेसी भी मानते हैं। थरूर हिंदू फेथह्ल के ह्यसमाहितकारीह्ल स्वभाव की भी सही व्याख्या नहीं करते। चूंकि हिंदू राज्य और मजहबी शासन यानी थियोक्रेसी दो विपरीत ध्रुव जैसे हैं इसलिए उनका भय निर्मूल है। विवेकानंद की शिक्षा का भी थरूर काट-छांटकर, गलत अर्थ निकाल रहे हैं। मत-वैभिन्य की स्वीकृति हिंदू धर्म की विशेषता है, किंतु यह अधर्म की भी स्वीकृति नहीं है। विवेकानंद ने ही कहा था कि ह्यएक हिंदू का मुसलमान या ईसाई बनना केवल एक हिंदू कम होना नहीं, एक शत्रु बढ़ना भी है।ह्ल यदि थरूर को अपने हिंदुत्व पर विश्वास है तो उन्हें विवेकानंद जैसे हिंदू मनीषियों के विचारों से उसकी पुनः परख करनी चाहिए।

कोई व्यक्ति नेहरूवादी और सचेत हिंदू नहीं हो सकता। वह दो में एक ही हो सकता है, क्योंकि नेहरूवाद तीन हिंदू-विरोधी मतवादों मसलन पश्चिमी श्रेष्ठता, कम्युनिज्म और इस्लाम-परस्ती का सहमेल है। जबकि भारतवर्ष और हिंदू धर्म अभिन्न हैं। इन दो को अलग करना, अथवा देश को हिंदू धर्म से ऊपर दिखाना अज्ञान या सियासी चाल है। सीधी सचाई यह है कि भारत हिंदू-भूमि है। यहां के मुसलमानों की पुरानी पीढ़ियां हिंदू ही थीं जिन्हें उत्पीड़न और भयवश मुसलमान बनना पड़ा था। वे आज भी मानसिक कैद में परेशान, प्रताड़ित हैं। इसके उदाहरण आते रहते हैं। इसी रूप में उनसे सहानुभूति होनी चाहिए।

यदि भारत हिंदू भूमि न रहा तो सबकी स्थिति बदतर होगी। इतिहास-वर्तमान की सारी तुलनाएं यही दशार्ती हैं। ऐसे में भारत की हिंदू पहचान की रक्षा करना प्रथम प्रतिज्ञा होनी चाहिए। यदि उपमा ही देनी हो तो भारत ह्लहिंदू इजरायलह्ल जैसा अकेला, नियमित लांछित, और विविध प्रकार के शत्रुओं की चोट सहता हुआ देश है। विश्व की तीन सशक्त, संगठित राजनीतिक-वैचारिक ताकतें लंबे समय से हिंदू भारत को हड़पने या तोड़ने में लगी रही है। इस्लामी साम्राज्यवाद, चर्च-मिशनरी और कम्युनिस्ट-वामपंथी। उनकी घोषित मंशा सर्वविदित है। उनके सामने हमारा दुनिया में कोई भी समर्थक सहयोगी नहीं रहा है। भारत को भी इजरायल जैसा ही नितांत आत्मनिर्भर, कटिबद्ध, निर्मम नीति और मनोबल वाला बनाना होगा। वरना यहां तो खुलेआम प्रेस कांफ्रेंस करके तीसरा-चौथा पाकिस्तान बनाने के दावे होते रहते हैं। क्या शशि थरूर नहीं देखते कि वास्तविक खतरा किधर से है?

A Home for Every one
Golden Wave Infratech Pvt. Ltd.
Visavi CO. PVT. LTD.
103, PANCSHEEL ENCLAVE, LAL KUAN, G.T. ROAD, GHAZIABAD Phone Office : +91-9871303060
E-mail : info@visavi.in | Web : www.visavi.in
Sanjay Yadav Director

हिन्दुओं के अस्तित्व और आस्था की रक्षा के लिए छत्तीस बिरादरियों की महा पंचायत

हरिद्वार। हिन्दुओं के अस्तित्व की रक्षा के प्रश्न को लेकर सनातन धर्म की आध्यत्मिक राजधानी में हिन्दुओं की सभी छत्तीस बिरादरियों की महापंचायत बुलाने वाले अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी महाराज ने श्रीब्रह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अधीर कौशिक जी तथा उनके साथियों के साथ बिल्केश्वर महादेव मंदिर में एक प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा की देवबन्द से जमीयते उलमा हिन्द ने आई एस की तर्ज पर जो फौज खड़ी की है, वह सम्पूर्ण विश्व के लिये बहुत गम्भीर चिंता का विषय है ।इतने गम्भीर मामले पर भारत में नेताओं, धर्मगुरूओ, बुद्धिजीवियों और मीडिया का मौन बहुत ही निंदनीय है ।यह फौज बहुत जल्दी भारत को गृहयुद्ध की आग में धकेल कर इस देश को भी अफगानिस्तान, सीरिया, इराक और मिश्र बना देगी।

उन्होंने इस गम्भीर विषय पर हरिद्वार के संतों की चुप्पी पर सवाल उठाते हुए कहा कि अब जिस तरह से हिन्दू हितों के हनन पर संत समाज का मौन दिखाई दे रहा है, वह हिन्दू समाज के लिये बहुत ही अशुभ संकेत है। ईसाइयत की सारी लड़ाई चर्चो से चलती है, इस्लाम की सारी लड़ाई मस्जिदों से चलती है, सिक्खों की सारी योजनाएं उनके गुरुद्वारों में बनती है परंतु सनातन धर्म के मानने वालों का कोई ऐसा धार्मिक स्थान नही है जो उनके अस्तित्व की जरा सी भी चिंता करता हो। आज हिन्दुओं के अस्तित्व की चिंता न तो किसी एक भी हिन्दू धर्मगुरु को है और न ही किसी नेता को है। ऐसे में असंगठित और अपरिपक्व हिन्दू समाज और यह देश बचेगा कैसे, ये एक विचारणीय प्रश्न सबके सामने हैं।

जनसँख्या नियंत्रण कानून और रामजन्मभूमि पर मंदिर अब कभी नही बनेगा -यति नरसिंहानन्द सरस्वती

उन्होंने कहा की केवल संत समाज की दिशाहीनता के कारण हिन्दुओं की वोट पर प्रधानमंत्री बने नरेंद्र मोदी ने अपने अब तक के कार्यकाल में एक भी हिन्दू हित का कार्य करने का प्रयास नही किया ।चीन के जैसा कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून और रामजन्मभूमि पर भव्य राममंदिर, ये हिन्दू समाज के दो सबसे प्रमुख मुद्दे हैं जिसमे चीन जैसा कठोर जनसँख्या नियंत्रण कानून हिन्दू के अस्तित्व का और राममंदिर धार्मिक आस्था का प्रश्न है।

परन्तु अब ये दोनों की कार्य कभी नही होंगे बस इनके नाम पर 2024 तक हिन्दू को मुर्ख बनाकर राजनीति चलेगी।2029 के चुनाव में अपनी जनसँख्या के बूते पर मुस्लिम सत्ता पर कब्जा कर लेंगे और उसके बाद संविधान, लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता जैसे भारी भरकम शब्द हमेशा के लिये इस देश से समाप्त हो जायेगा और ये देश हमेशा के लिये इस्लामिक गुलामी में गर्क हो जायेगा। इस सबके दोषी नेताओ से अधिक हिन्दू धर्मगुरु होंगे जिन्होंने धर्म के विनाश को देखकर भी अनदेखा कर दिया।

प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए श्रीब्रह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पण्डित अधीर कौशिक जी ने कहा की यति नरसिंहानन्द सरस्वती की पीड़ा एकदम सत्य है और हम सब उनके साथ हैं ।उनके आह्वान पर 19 अगस्त 2018 को कनखल स्थित गौतम फार्म में हिन्दुओं की सभी छत्तीस बिरादरियों की पंचायत बुलाई गई है जिसमे देश के कोने कोने से हिन्दू आयेंगे और परिस्थिति का आकलन करके आगे के लिये ठोस निर्णय लेंगे। यह पंचायत पूरी तरह से अराजनैतिक है और नेताओं से ज्यादा हिन्दू धर्मगुरूओ तक अपनी बात पहुँचाने के लिये है। पंचायत के माध्यम से हिन्दू जनता अपने धर्मगुरूओ के समक्ष ये प्रश्न रखेगी की क्या हिन्दू को सम्मान से जीने का अधिकार नहीं है? यदि अभी भी धर्मगुरु अपनी जनता की आवाज को अनसुना करते रहेंगे तो यह धर्म के प्रति विश्वासघात होगा और इसके लिये धर्म और इतिहास कभी क्षमा नही करेगा।

प्रेस वार्ता में यति कृष्णानंद सरस्वती जी महाराज, जे पी बडौनी, जगदीश लाल पाहवा, सोमपाल कश्यप, उमेश कश्यप, प्रमोद गिरी, बृजमोहन सिंह, अनुराग राय, बॉबी त्यागी, आकाश यादव सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

श्राद्ध पक्ष 2018 सम्वत...

तर्पण

एक विशेषांक : विदेशी आक्रमणकारियों से लड़ने और बलिदान देने वाले अमर सनातनियों को समर्पित

एक भावांजलि: उन करोड़ो दिलेर सनातन धर्मियो को जिन्होंने गहन अंधकार के तेरह सौ वर्षों में धर्म की रक्षा के लिये अपने प्राण दिए।

एक श्रद्धांजलि : उन पाँच सौ करोड़ से ज्यादा हमारे पूर्वजों को जिनका केवल इसलिये कत्ल हुआ की वो सनातन धर्म को मानते थे।

लाख लाख पीढियां लगी, तब ये धर्म ये संस्कृति उपजाई
कोटि कोटि सर चढ़े, तब इसकी रक्षा सम्भव हो पाई।

पारद शिवलिंग का महत्व

देवों के देव महादेव श्री शिव कल्याणकारी हैं। उनकी पूजा-अभिषेक अनेक मनोरथों को पूर्ण करने वाली है। तरह-तरह के सभी शिवलिंगों की पूजा सिद्धिदायक होती है, पर हमारे प्राचीन पुराणों में पारद शिवलिंग की पूजा को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। इस समूचे ब्रह्मांड में सर्वोत्तम दिव्य वस्तु के रूप में पूजित रससिद्धि पारद शिवलिंग समस्त दैहिक, दैविक एवं भौतिक महादुखों से मुक्ति और शांति दिलाने वाला है।

साक्षात शिव का रूप है यह

पारद की उत्पत्ति महादेव के शुक्र से मानी जाती है इसलिए शास्त्रों में पारद को साक्षात शिव का रूप माना गया है और पारद लिंग का सबसे ज्यादा महत्त्व बताकर उसे दिव्य भी बताया है। ऐसी मान्यता है कि पारद शिवलिंग में ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों ही देव विद्धमान रहते हैं। पारद शब्द में प-विष्णु, अ-अकार, र-शिव और द-ब्रह्मा का प्रतीक है। पारद एक विशिष्ठ तरल अवस्था में धातु और स्वयं सिद्ध पदार्थ है। विशिष्ठ शास्त्रोक्त व तंत्रोक्त गोपनीय विधियों से व अनेक जड़ी-बूटियों की सहायता से दिव्य पारद शिवलिंग का निर्माण किया जाता है। शास्त्रों के अनुसार रावण रससिद्धि योगी था। पारद शिवलिंग की पूजा से शिव को प्रसन्न कर अनेक दिव्य शक्तियों को प्राप्त किया। वाणासुर ने भी पारद शिवलिंग की पूजा कर शिव से मनोवांछित वर प्राप्त किया।

आचार्य दीपक तेजस्वी

अद्भुत है पारद शिवलिंग

शिवमहापुराण में शिवजी का कथन है कि करोड़ शिवलिंगों के पूजन से जो फल प्राप्त होता है उससे भी करोड़ गुना अधिक फल पारद शिवलिंग की पूजा और उसके दर्शन मात्र से ही प्राप्त हो जाता है। यहां तक कि कुछ अनजाने में हुई गलतियों का पाप भी इसके स्पर्श मात्र से नष्ट हो जाते हैं। व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य पारद शिवलिंग की भक्ति पूर्वक पूजा-अभिषेक तथा दर्शन करता है, उसे तीनों लोकों में स्थित समस्त शिवलिंगों के पूजन का फल मिलता है। कहते हैं सौ अश्वमेघ यज्ञ करने के बराबर का फल प्राप्त होता है। यह सभी तरह के लौकिक तथा परलौकिक सुख देने वाला है। इस शिवलिंग का जहां पूजन होता है वहां साक्षात शंकर का वास होता है।

पारद (पारा) को रसराज कहा जाता है। पारद से बने शिवलिंग की पूजा करने से बिगड़े काम भी बन जाते हैं। धर्मशास्त्रों के अनुसार पारद शिवलिंग साक्षात भगवान शिव का ही रूप है इसलिए इसकी पूजा विधि-विधान से करने से कई गुना फल प्राप्त होता है तथा हर मनोकामना पूरी होती है। घर में पारद शिवलिंग सौभाग्य, शान्ति, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के लिए अत्यधिक सौभाग्यशाली है। दुकान, ऑफिस व फैक्टरी में व्यापारी को बढ़ाने के लिए पारद शिवलिंग का पूजन एक अचूक उपाय है। शिवलिंग के मात्र दर्शन ही सौभाग्यशाली होता है। इसके लिए किसी प्राणप्रतिष्ठा की आवश्कता नहीं हैं। पर इसके ज्यादा लाभ उठाने के लिए पूजन विधिवत की जानी चाहिए।

पारद शिवलिंग की उपासना के लाभ

- पारद शिवलिंग सभी प्रकार के तन्त्र प्रयोगों को काट देता है।
- पारद शिवलिंग जहां स्थापित होता है उसके 100 फीट के दायरे में उसका प्रभाव होता है। इस प्रभाव से परिवार में शांति और स्वास्थ्य प्राप्ति होती है।
- यदि बहुत प्रचण्ड तान्त्रिक प्रयोग या अकाल मृत्यु या वाहन दुर्घटना योग हो तो ऐसा शुद्ध पारद शिवलिंग उसे अपने ऊपर ले लेता है। और साधक की रक्षा करता है।
- पारद शिवलिंग साक्षात भगवान शिव का स्वरूप माना गया है। इसलिए इसे घर में स्थापित कर प्रतिदिन पूजन करने से किसी भी प्रकार के तंत्र का असर घर में नहीं होता और न ही साधक पर किसी तंत्र क्रिया का प्रभाव पड़ता है।
- यदि किसी को पितृ दोष हो तो उसे प्रतिदिन पारद शिवलिंग की पूजा करनी चाहिए। इससे पितृ दोष समाप्त हो जाता है।
- अगर घर का कोई सदस्य बीमार हो जाए तो उसे पारद शिवलिंग पर अभिषेक किया हुआ पानी पिलाने से वह ठीक होने लगता है।
- पारद शिवलिंग की साधना से विवाह बाधा भी दूर होती है
- पारद शिवलिंग की उपासना करने वाले व्यक्ति की अकाल मृत्यु नहीं होती है।

माँ जगदम्बा महाकाली डासना वाली का परिवार
हिन्दू स्वाभिमान
INDIA AGAINST JIHAD
के तत्वाधान में
सर्वधर्म संसद
अग्रसेन भवन, लोहियानगर गाजियाबाद में 30 सितम्बर 2018, प्रातः 10 बजे से
विषय : भारत के इस्लामिक राष्ट्र बनने की स्थिति में हम सबका भविष्य
यति नरसिंहानंद सरस्वती
यति माँ चेतनानंद सरस्वती
श्रीकृष्णानंद सरस्वती जी
बाबा परविन्द्र आर्य
राजेश पहलवान
यति रविन्द्रानंद सरस्वती
मुख्य संयोजक :
कर्नल टी.पी.एस. त्यागी
आयोजक : जगदम्बा महाकाली डासना वाली का परिवार

एक बूढ़े और बीमार सन्यासी के आहवान पर

सनातन धर्म की आध्यात्मिक राजधानी हरिद्वार में

स्थान : गौतम फार्म, कनखल, हरिद्वार

19 अगस्त 2018, दिन रविवार प्रातः 10 बजे से

हिन्दुओं की सभी 36 बिरादरीयों की महापंचायत

हिन्दू जागो घर, बेटी, अस्तित्व बचाओ

यति नरसिंहानंद सरस्वती

यति माँ चेतनानंद सरस्वती

ठा. विक्रम सिंह
कार्यक्रम अध्यक्ष

विक्रम यादव
मुख्य संयोजक

अधीर कौशिक
अध्यक्ष आयोजन समिति

विजय यादव
मुख्य समन्वयक

अनिल यादव
राष्ट्रीय महामंत्री हिन्दू स्वाभिमान

तरूण त्यागी
संयोजक

श्रीकृष्णानंद सरस्वती जी

बाबा परविन्द्र आर्य

राजेश पहलवान

यति रविन्द्रानंद सरस्वती